अथ जन्मपत्रिका

२०० प्रति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लक्ष्मी साधना

तन्त्र-मन्त्र सहित

(लक्ष्मी प्राप्ति के साधन)

लेखक
मोहित शर्मा

प्रकाशक

आनन्द प्रकाशन (रजि०)

1932, कूंचा चेलान, खारी बावली,

दिल्ली-110006

☎ : 3923021

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुस्तक : लक्ष्मी साधना

लेखक : मोहित शर्मा

मूल्य : 50/-

प्रकाशक : आनन्द प्रकाशन (रजि०)
1932; कूंचा चेलान, खारी बावली,
दिल्ली-110006
फोन नं०-3923021

एकमात्र वितरक : कविता पेपर्स
कूंचा चेलान, खारी बावली,
दिल्ली-110006

मुद्रक :

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुक्रमणिका

1. महालक्ष्मी अवतार खण्ड

आदिशक्ति महालक्ष्मी परिचय 7
आदिशक्ति श्री महालक्ष्मी का प्रार्दुभाव 8
श्री महालक्ष्मी जी के अन्य अवतार 8
सागर मंथन द्वारा श्री लक्ष्मी अवतार कथा 10
"दक्षिणा" नाम की लक्ष्मी अवतार 12
भारत भूमि पर लक्ष्मी आगमन 13
श्री महालक्ष्मी का स्वरूप 15
लक्ष्मी शक्ति 15
श्री लक्ष्मी निवास स्थान 16
मूर्ति रूप लक्ष्मी आसन कमल और 'ऐरावत की उत्पत्ति' 17
लक्ष्मी का वाहन उलूक और उनकी विशेषता 19
प्रकृति और सृष्टि की देवी महालक्ष्मी 20
चर्तुभुजी लक्ष्मी के विविध नाम 21
प्राचीन ग्रन्थों में लक्ष्मी जी का वर्णन 22
श्री विष्णु की एकरूपता 24

2. श्री लक्ष्मी उपासना आरम्भ करने से पूर्व अत्यंत महत्वपूर्ण ज्ञान खण्ड

उपासना शब्द का अर्थ 25
लक्ष्मी उपासना क्यों करें? 26
उपासना में भावना का महत्व 27

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपसना में भावना का प्रभाव और कामना 27
उपासना में दृढ़ निश्चय और श्रद्धा का महत्व 29
उपासना में सहायक 30
"उपासना" जीवात्मा तथा परमात्मा के मध्य
की कड़ी तथा उपासना से लाभ 30
एकाग्र मन का उपासना पर प्रभाव 31
उपासना का प्रदर्शन सफलता में बाधक 32
उपासना की योग्यता 33
नित्य–नियम उपासना का फल 33

3. श्री लक्ष्मी उपासना हेतु आसन एवं मालाओं का प्रयोग खण्ड

उपासना हेतु विभिन्न आसन 35
उपासना हेतु आसन का उपयोग क्यों? 35
जप–तप,पूजा–पाठ के लिए उपयोगी आसन 36
कुशासन पर उपासना के लाभ 36
मृग चर्म पर उपासना के लाभ 36
व्याघ्र चर्म के आसन पर उपासना के लाभ 36
ऊनी वस्त्र कम्बल के आसन पर उपासना के लाभ 37
उपासना हेतु निषिद्ध आसन 37
माला की उपयोगिता और फेरने का नियम 38
उपासना आरम्भ से पूर्व उपासकों के लिए अति आवश्यक निर्देश 39
उपासना में निषेध 40
पूजन हेतु फूल तोड़ने की विधि और मंत्र 41
बिल्वपत्र तोड़ने का मंत्र, विधि तथा बिल्वपत्र तोड़ने का निषिद्ध काल 41
बासी जल फूल का निषेध 42
मानस फूल चढ़ाने की विधि 42
पुष्पादि चढ़ाने की विधि 43
भगवान पर चढ़ाया हुआ फूल उतारने की विधि 44
कुमारी कन्याओं की वैदिक महत्ता और निरूपन 44
कुमारी पूजन का फल 44

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

4. श्री लक्ष्मी पूजन खण्ड

भगवती लक्ष्मी नित्य पूजन विधि	47
नित्य लक्ष्मी पूजन सामग्री	47
नित्य श्री लक्ष्मी पूजन आरम्भ	48
श्री लक्ष्मी चालीसा	51
दिवाली की रात्रि में माता लक्ष्मी का बृहद वैदिक षड़ाशोपचार पूजन	51
श्री लक्ष्मी पूजन सामग्री	51
पूजन आरम्भ	51
"स्वस्ति वाचनम" के पांच मंत्र	57
भगवान विष्णु एवं पंचदेवता का पूजन	58
माता लक्ष्मी कलश स्थापना विधि और कलश पूजन	59

5. श्री लक्ष्मी स्तोत्र एवं कवच खण्ड

श्री लक्ष्मी सहस्त्रनाम स्तोत्र	71
मातेश्वरी धनदा लक्ष्मी कवच	83
श्री महालक्ष्मी कवचम्	85
श्री सिद्धिलक्ष्मी स्तोत्रम्	86
श्री धनेश्वरी स्तोत्र	88
श्री सिद्धिलक्ष्मीस्तुतिः	89
श्री स्तवः स्तोत्र	90
श्री स्तुतिः स्तोत्र	91

6. श्री महालक्ष्मी यंत्र–मंत्र सिद्धि खण्ड

यंत्र–मंत्र का परिचय शक्ति और महत्व	49
यंत्र के सूक्ष्म शब्द, अंक, त्रिकोण एवं भुपूर का महत्व	96
यंत्र लिखने का विधान	96
यंत्र विद्या वेद और ईश्वरीय शक्ति का संमिश्रण	97
चमत्कारिक रूप से अपार धन प्राप्ती हेतु "श्री यंत्र साधना"	97
सिद्ध श्री यंत्र घर की पूजा स्थल पर स्थापित करने का लाभ	102
श्री सूक्त स्तोत्र पाठ	104
समस्त ऐश्वर्य प्राप्ति हेतु महालक्ष्मी यंत्र साधना	106

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महालक्ष्मी स्तोत्र पाठ 110
सिद्ध "वास्तु यंत्र" द्वारा लक्ष्मी प्रवेश विधि 111
सिद्ध वास्तु लक्ष्मी यंत्र साधना विधि 112
श्री वास्तु लक्ष्मी यंत्र 112
शाबर मंत्र द्वारा लक्ष्मी की प्राप्ति 113
ऋद्धि–सिद्धि प्राप्ति हेतु शाबर मंत्र 114
व्यवसाय वृद्धि हेतु शाबर मंत्र 114
अपार धन प्राप्त करने हेतु शाबर मंत्र 114
लक्ष्मी आगमन के सरल सूत्र 115
बाराहों राशियों के अनुसार लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र 116
रूठी लक्ष्मी को मनाकर घर कैसे लाएं? 117
श्री लक्ष्मी प्रदायक अनुभूत चमत्कारी टोटके 121
शुभ प्रतीकों का प्रयोग 124
ॐ स्वस्ति, स्वस्तिक या सतिया की महानता 125
श्री लक्ष्मी जी की आरती 128

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महालक्ष्मी अवतार खण्ड

आदिशक्ति-महालक्ष्मी परिचय

शास्त्रों और पुराणों में महालक्ष्मी की उपमा आदिशक्ति भगवती के रूप में की गई है। अम्बे महालक्ष्मी की असीम कृपा से ही मानव को धन–दौलत, खुशी, हंसी और श्रेय की प्राप्ती होती है। ये दया की सागर और उदारता की महारानी है। महालक्ष्मी अपने भक्तों पर सदैव दया ही करना चाहती है–

इनके पास तो कभी कठोरता आती ही नहीं, इसलिए तो संसार में पापियों और अत्याचारियों के पास भी धन की कमी नहीं होती। जो भी जातक इनकी उपासना करता है वह जातक भाग्य में मिलने वाली निर्धनता को भी "धनता" में बदल कर रख देता है। इस प्रकार "हरि" की उपासना से उतना शीघ्र लाभ नहीं हो पाता, जितना "हरिप्रिया" (महालक्ष्मी) की उपासना से।

शास्त्रों और पुराणों में जितनी देवियों की कथा और उपमा है, ये सभी रूप महालक्ष्मी के ही हैं। इसका प्रमाण "दुर्गा सप्तसती" में मिलता है। जिसके अन्तगर्त स्वयं अम्बिके "दुर्गा" जी ने कही है कि मैं ही काली हूँ और संसार के समस्त "नारी" जीव मेरे ही रूप हैं। मैं पुण्ययात्माओं के घरों में स्वयं लक्ष्मी रूप में पापियों के घरों में अलक्ष्मी (दरिद्री) के रूप में, सच्चे मानव के हृदय में श्रद्धा रूप में और कुलिनों के घर में लज्जा रूप में निवास करती हूँ। ये अमृत वाणी सृष्टिं में समस्त जीवों को प्रदान करने वाली देवी स्वयं महालक्ष्मी थी जो कि सभी देवतओं की प्रार्थना पर महिषासुर आदि दानवों के देवतओं को मुक्त कराने के लिए प्रकट हुई थी। अतः महालक्ष्मी जी संसार के समस्त उपासकों के घरों को धन–जन से परिपूर्ण रखती हैं जो भी उपासक महारानी महालक्ष्मी की उपासना करते हैं उन्हें जीवन में कभी भी धन–जन का अभाव नहीं होता और इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोक में सुख भोगकर अन्त में लक्ष्मी लोक प्राप्त करते हैं।

आदिशक्ति श्री महालक्ष्मी का प्रार्दुभाव

आदिशक्ति महालक्ष्मी प्रादुर्भाव के सम्बन्ध में जो अन्य आधुनिक लक्ष्मी उपासना में वर्णन वणित है वो "सागर मन्थन" के समय से उठाया गया है और सागर से निकली हुई श्री लक्ष्मी को ही महालक्ष्मी की संज्ञा दी गई है–

किन्तु "ब्रह्मवैवर्तपुराण" के अनुसार महालक्ष्मी का आगमन सृष्टि के आदिकाल में ही हुआ है। इनके अनुसार पारब्रह्मा के साथ विराजने वाली प्रथम "नारी शक्ति" को महालक्ष्मी की उपमा दी गई है और भगवान विष्णु को ही निराकार पारब्रह्म कहा गया है। पुराण के अनुसार पारब्रह्म ने वाराह कल्प में जब पृथ्वी जलमग्न हो गई थी तब भगवान विष्णु से वाराह का रूप धारण करवाकर इसका उद्धार किया और फिर से सृष्टि की रचना की।

पादम् कल्प में भगवान विष्णु की नाभी कमल पर ब्रह्मा का निमार्ण हुआ और फिर सृष्टि की रचना हुई। इसके पश्चात् विष्णु के बांये भाग से एक सुन्दर कन्या प्रकट हुई और उनके साथ शेषसेय्या पर विराजमान हो गयीं और यही महाशक्ति महालक्ष्मी कहलायीं।

इन्होंने पार्वती जी के पूछने पर स्वयं ही बखान किये हैं कि हे महेश्वरी श्री विष्णु भगवान ही अद्वितीय सच्चिदानंद पारब्रह्म हैं। वे सभी उपाधियों से मुक्त हैं व मन वाणि से अविषय हैं, निष्फल, निरंजन, निर्विकार, निर्मल और शांत हैं। मैं उनकी पराशक्ति हूं। मेरे बिना वे किसी कार्य को भी सम्पन्न नहीं कर सकते और वेदवेत्ता मुझे "मूल प्रकृति" कहते हैं। श्री महाविष्णु के सान्धियमात्र से मैं ही इस जगत की उत्पत्ती, पालन और संघार करती हूँ। अनेक अवतार भी मैं ही धारण करती हूँ।

पुराण में वर्णित आदिशक्ति की ये अमृतमय वाणी से स्पष्ट हो जाता है कि "आदिशक्ति" स्वयं ही महालक्ष्मी है।

श्री महालक्ष्मी जी के अन्य अवतार

ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार महालक्ष्मी जी के अवतार और उनके प्रकट होने के स्थान का विवरण इस प्रकार है–

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

1. महालक्ष्मी–बैकुण्ठ में।
2. राधा नाम की लक्ष्मी–गोलोक में।
3. स्वर्ग लक्ष्मी–स्वर्ग लोक में।
4. राज लक्ष्मी–भूलोक में।
5. दक्षिणा नाम की लक्ष्मी– यज्ञ में।
6. सुरभि–गोलोक में।
7. शोभा नाम की लक्ष्मी–चन्द्रलोक में.

ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार बैकुण्ठ में लोक गोलोक से पचास करोड़ योजन नीचे स्थित है। स्वयं ब्रह्मा भी यहां के परम लुभावने दृश्य देखकर हर्ष चकित हो गये थे। इस लोक में महालक्ष्मी पारब्रह्म परमेश्वर रूपी विष्णु भगवान के साथ विराजी हैं।

गोलोक बैकुण्ठ लोक से पचास करोड़ योजन दूर उत्तरी भाग में अवस्थित है और यहीं पर स्वयं को कुरूक्षेत्र के मैदान में पारबह्म कहने वाले भगवान कृष्ण का (जो कि विष्णु के ही रूप हैं) राधा नाम की लक्ष्मी के साथ निवास हैं। यहां का वर्णन करते हुए स्वयं ब्रह्मा जी ने नारद जी से कहा कि हे महाऋषि! यहां पर परात्मा पारब्रह्म श्री कृष्ण का निवास है वह गोलोक स्भी लोकों में अति सुन्दर है। कहीं बहुमूल्य रत्नों की खान शोभायमान है तो कहीं स्फटिक की भांति उज्जवल नदी की तह है। कहीं मर्कत और स्वयंमंजक मणियों के भण्डार हैं तो कहीं पारिजात वृक्षों की वन श्रेणियां हैं। कल्प वृक्ष और कामधेनुओं से भरा हुआ प्रदेश बड़ा मनोरम है। वहां पर भी राधा जी के प्रिय घृन्दावन नामक वन हैं। उसमें कस्तूरी भरे कमल, पत्तों के फूलों से सुगंधित नई पल्लवों पर बैठी कोयल कूक सुना रही है। मल्लिका, मालती, केतकी और माधवी लताओं से वह वन युक्त है। महारानी लक्ष्मी राधा जी का वह अति मनोहर निवास स्थल बड़ा मनोहारी है और उसकी लम्बाई –चौड़ाई तीन करोड़ योजन है। जहां पर महालक्ष्मी जी सुन्दर रूप धारण कर अपनी विविध विभुतियों द्वारा भगवान के चरण कमलों की सेवा करती हैं।

अतः श्री महालक्ष्मी अनेकों रूप धारण कर देवताओं और भक्तों के कष्ट को दूर कर धन–जन से परिपूर्ण करती है और इनका निवास स्वर्ग लोक में है। भगवान विष्णु के सभी कार्यों को सम्पन्न कराने वाली महालक्ष्मी ही हैं जो सदैव उनके सभी अवतार में शक्ति के रूप मे साथ निभाती हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सागर मंथन द्वारा श्री लक्ष्मी अवतार कथा

शास्त्रों एवं पुराणों के वर्णन के अनुसार कहा जाता है कि एक बार भूल से देवराज इन्द्र ने महामुनि "दुर्वासा" द्वारा दी गई पुष्पमाला का अपमान कर दिया–इस पर मुनि के श्राप से इन्द्र को भी "श्री" हीन होना पड़ा। जिसके कारण सभी देवगण और मृत्युलोक भी "श्री" हीन हो गये। रुष्ट होने के कारण लक्ष्मी दुखी मन से स्वर्ग को त्याग कर बैकुण्ठ आ गईं और महालक्ष्मी में लीन हो गईं।

देवता दुखी मन से ब्रह्मा के पास आये, और उन्हें साथ लेकर बैकुण्ठ गये। वहाँ उन्होंने श्री नारायण से व्यथा गाथा कही। तब उन्होंने उन्हें बताया कि वे असुरों की सहायता से सागर का मन्थन करें तब उन्हें सिन्धु कन्या के रूप में लक्ष्मी पुनः प्राप्त हो सकेगी।

इधर देवासुर संग्राम में देवताओं की पराजय हो गई थी। दैत्यगण देवताओं को ढूंढ–ढूंढ कर मारने तथा उन पर अनेक प्रकार के अत्याचार कर रहे थे। इससे भयभीत होकर देवगण इधर–उधर भागकर छिपे फिरते थे। यज्ञादि सत्कर्मों का लोप हो जाने से सर्वत्र अधर्म का साम्राज्य छा गया था।

विष्णु भगवान की सलाह पर देवताओं ने असुर को यह लालच दिया कि सागर में अमृत का घड़ा और कई रत्न मौजुद हैं। यह अमृत प्राप्त करने के लिए हम सभी को मिलकर सागर मंथन करना चाहिए ताकि उसे पान कर अमर हो सकें।

असुरों के सभी महानायक देवताओं के झांसे में आ गये और सागर मंथन की तैयारियाँ शुरू हो गईं।

सम्मिलित प्रयास से मंदराचल पर्वत को उठाकर जैसे ही समुद्र में डाला वैसे ही यह पर्वत सागर के नीचे की ओर धंसता चला गया, तभी भगवान विष्णु ने कच्छप अवतार लेकर उस पर्वत को अपनी पीठ पर रोक लिया।

इस पर मंदराचल हैरान हो गया कि ऐसी कौन सी शक्ति है जो हमें आगे जाने से रोक रही है। तभी उन्हें भगवान विष्णु के सामीप्य का बोध हुआ और स्थिर हो गये। बासुकी नाग के मुख को स्वयं विष्णु भगवान ने पकड़ा और देवगण भी उसी ओर लगे। यह देखकर दैत्यगण यह कहकर नाराज हो गये कि हम दैत्य गण इस सर्प के अमंगलकारी पूंछ की तरफ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं रहेंगे अर्थात् पूंछ की तरफ से मंथन में भाग नहीं लेगे।

भगवान स्वयं भी यही चाहते थे। उन्होनें खुश होकर देवताओं के साथ मुख की ओर से हटकर पूंछ पकड़ ली और सावधानी के साथ दोनों पक्ष मिलकर सागर मंथन करने लगे।

सागर मंथन से सर्वप्रथम हलाहल नामक विष निकला। उस विष के तेज से तीनों लोकों में हाहाकर मच गई। देवगण घबराकर भगवान शंकर के पास पहुंचे और उनसे विषपान की प्रार्थना की। दया के सागर भोलेनाथ ने देवताओं की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए उस हलाहल विष का पान कर कंठ में रोक लिया। उस विष के प्रभाव से शिवजी का कंठ नीला हो गया और तभी से वे "नीलकंठ" कहलाये।

हलाहल विष के पश्चात् सागर में से अनेकों प्रकार के रत्न प्रकट हुए। एक–एक रत्न सागर से बाहर आकर प्रकट होता रहा। सारा संसार इस महाशक्ति के अविष्कार को देखकर हैरान हो रहा था।

शनैः शनैः सब कुछ होता रहा।

विष के बाद कामधेनु उत्पन्न हुई तत्यपश्चात् उच्चश्रुवा अश्व, ऐरावत हाथी, कौस्तुभ मणि, कल्पवृक्ष, शंख केतु, धनु, धनवंतरि, शशि और फूल मिलाकर चौदह रत्न सागर के अन्दर से निकले थे।

तदनन्तर दशों दिशाओं को अपनी कान्ति से दैदीप्यमान करने वाली "श्री लक्ष्मी जी" उत्पन्न हुई। उनको देखकर कुछ समय के लिए मंथन कार्य रुक गया।

क्योंकि महालक्ष्मी की अद्भुत छटा को देखकर देवता और असुर दोनों ही होश खो बैठे। सभी देवता और दैत्य उन पर मोहित होकर उनकी प्राप्ति की इच्छा करने लगे। तभी देवराज इन्द्र ने उनके लिए सुन्दर आसन उपस्थित किया। जिस पर भगवती विराजमान हो गयीं।

लक्ष्मी पुजन की सभी सामग्री एकत्रित कर ऋषियों ने विधिपूर्वक भगवती का अभिषेक कराया। उस अवसर पर देवताओं में अपार हर्ष फैला हुआ था। अप्सरायें नाच रही थीं, गन्धर्व गायन कर रहे थे, देवगण मिलकर मृदंग, नगाड़े शंख, भेरि और वीणा बजा रहे थे। चारों ओर खुशियों का समागम छाया हुआ था। विधिपूर्वक पूजन होने पर सागर ने भगवती को पीले वस्त्र और विश्वकर्मा ने दिव्य कमल समर्पित किया।

इसके पश्चात् मांगलिक वस्त्र और आभूषणों से सुसज्जित होकर देवताओं और असुरों पर एक दिव्य दृष्टि डाली, परन्तु उनमें से उन्हें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन साथी के रूप में कोई योग्य वर दिखाई न पड़ा क्योंकि उन्हें तो श्री भगवान विष्णु की खोज थीं। ज्योंही हरि दिखाई पड़े, त्योंहीं उन्होंने अपने हाथों में पकड़ी हुई कमलों की माला भगवान के गले में अर्पण कर दी।

तत्पश्चात् फिर सागर मंथन का कार्य शुरू हो गया। अनेक रत्नों की प्राप्ति के बाद अमृत कलश लिये भगवान धन्वन्तरी प्रकट हुए। देखते ही अमृत कलश को दानवों ने अपने कब्जे में कर लिया। देवता निराश होकर फिर विष्णु भगवान के पास गये। भगवान हरि विश्व मोहिनी का रूप धारण कर वहाँ प्रकट हो गये। उनके रूप को देखकर गण अति मोहित हो गये और अपनी सुध–बुध खो बैठे। तभी मोहिनी रूप धारी भगवान हरि ने दैत्यों को हाव– भाव एवं नेत्र कटाक्ष आदि संकेतों से संतुष्ट करते हुए समस्त अमृत देवताओं में बाँट दिया और भगवती लक्ष्मी भगवान विष्णु के पास विराजित हो गई।

"दक्षिणा" नाम की लक्ष्मी अवतार

दक्षिणा नाम की लक्ष्मी अवतार के बारे में ब्रह्मवैवर्त पुराण में आख्यान सुनाते हुए स्वयं "हरि" ने बताया है कि पूर्व काल में सुशीला नाम की गोपी, भगवान कृष्ण की प्रेयसी, अत्यन्त मनोहारी रूप वाली सुत्तनवी और कामशास्त्र में दक्ष, कृष्णकामिनी और कृष्ण में अनुरक्त थी। वह राधा के सामने ही कृष्ण की दायीं गोद में बैठ गई। राधा के सामने कृष्ण को संकोच हुआ, और ऐसे दृश्य को देखकर कुपित राधा के भय से कृष्ण अर्न्तध्यान हो गये। कंपायमान वो गोपिका भी अर्न्तहित हो गई।

श्री कृष्ण को अर्न्तहित देखकर राधा ने सुशीला को श्राप दिया कि यदि ये गोपी फिर कभी "गोलोक" में आयेगी तो भस्म हो जायेगी और राधा जी श्राप देकर पुनः कृष्ण की आराधना करने लगीं।

जिससे कृष्ण शीघ्र आ गए और उनके साथ विहार करने लगे। वह सुशीला नाम की गोपिका ने (जो बाद में दक्षिणा कहलायी थी) गोलोक से निकलकर चिरकाल तक तप किया और "कमला" की देह में प्रविष्ट हो गयीं।

अनेक कठिन यज्ञ करने पर भी यज्ञ फल प्राप्त न होने पर खिन्न मन देवताओं ने ब्रह्मा से गुहार की। तब ब्रह्मा ने श्री नारायण और महालक्ष्मी का ध्यान किया। उससे प्रसन्न होकर महालक्ष्मी ने अपनी देह से मनुष्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लक्ष्मी दक्षिणा को ब्रह्मा को सौंप दिया और ब्रह्मा ने उन्हें यज्ञ को सौंप दिया।

यज्ञ ने उसकी विधिवत् पूजा की और ब्रह्मा ने उन्हें कामपीड़ित दक्षिणा के समक्ष मूर्छित होते देखकर पत्नी के रूप में वरण करने का आदेश दिया। यज्ञ ने दक्षिणा के साथ सौ दिव्य वर्षों तक हर्षित होकर रमण किया।

जो व्यक्ति यज्ञ के बाद "दक्षिणा" देता है। उसे उसका सुफल प्राप्त होता है और जो ऐसा नहीं करता वह ब्रह्म हत्या का दोषी होता है और सभी यज्ञों को आरम्भ के समय जो भक्त दक्षिणा स्तोत्र का पाठ करता है उसे समस्त यज्ञों का फल प्राप्त होता है।

भारत भूमि पर लक्ष्मी का आगमन

"ब्रह्मवैवर्त पुराण" के अनुसार महर्षियों का कथन है कि गंगा, लक्ष्मी और सरस्वती ये तीनों भगवान विष्णु की पत्नियां थीं। एक बार कामवश गंका ने मुस्कुराते हुए जब भगवान विष्णु के मुख की ओर निहारा और सरस्वती उनकी यह भंगिमा सहन न कर सकी और तभी विष्णु से बोल उठीं कि धार्मिक और श्रेष्ठ पति अपनी सभी स्त्रियों के प्रति समान भाव रखता है किन्तु आप यह न करके गंगा और लक्ष्मी से विशेष स्नेह करते हैं और हमें तुच्छ दृष्टि से देखतें हैं।

हे नाथ! मैं आपके प्रेम के अभाव में जीकर क्या करूँगी। आपके बारे में जो प्रचार हो, वास्तविकता इससे परे है। विष्णु तो यह सुनकर चुपचाप चले गये किन्तु सरस्वती का क्रोध शान्त नहीं हुआ। सरस्वती ने गंगा से बहुत कर्णकटु शब्द कहे– और उनके साथ केश पकड़कर लड़ने को आतुर हो गयीं। लक्ष्मी ने दोनों में सम्भाव लाने का बहुत प्रयत्न किया तो सरस्वती ने लक्ष्मी को ही श्राप दे दिया।

लक्ष्मी इस पर भी शान्त रही, तो गंगा ने क्रोधित होकर अपनी शक्ति का परिचय देते हुए शाप दिया कि सरस्वती नदी रूप में पापियों के समूह में मृत्युलोक में बहेंगी और कलियुग में उनके पाप अंशों को प्राप्त करेगी। यह सुनकर सरस्वती ने भी गंगा को नदी हो जाने का शाप दिया।

इतने ही काल में अपने सहयोगियों के साथ विष्णु स्वयं पधारे और सरस्वती को हृदय से लगाते हुए उनका क्रोध शान्त किया। लेकिन जब उन्हें कलह का ज्ञान हुआ तो उन्होंने बताया कि लक्ष्मी धर्मध्वज के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यहाँ–अयोनिजा कन्या के रूप में प्रकट होकर शंखचूड़ की पत्नी बनकर दैव–वृक्ष रूप में जन्मेगी, तत्यपश्चात् मेरी पत्नी बनेगी। सरस्वती के शाप के कारण नदी रूप में तुम्हारा नाम पद्मावती होगा। गंगा के लिए उन्होंने बताया कि भागीरथ की तपस्या से उन्हें शापमोचन के लिए पृथ्वी पर जाना होगा, साथ ही राजा शान्तुन की भी पत्नी बनना होगा तथा सरस्वती को भी कलह की यही सजा सुनाये कि आपको भी भारत भूमि पर जाकर नदी के रूप में परिणत होना होगा।

इसके पश्चात् ब्रह्मा की पत्नी बने और गंगा शिव के यहां चली जाये, यहाँ केवल लक्ष्मी ही रहेंगी, क्योंकि एक से अधिक स्त्री का घर में निवास हानिप्रद है। एक ही स्त्री का पति बनने से सुख प्राप्त होता है अनेक से नहीं।

सरस्वती ने अपना अपराध स्वीकार करते हुए उनसे प्रायश्चित का विधाप पूछा जबकि गंगा और लक्ष्मी को अपने प्रति इस प्रकार पृथ्वी में जाने के प्रश्न पर कष्ट हुआ।

गंगा ने अपना शरीर छोड़ देने का व्रत लिया जबकि लक्ष्मी को अपने उद्धार की अवधि का ध्यान था।

लक्ष्मी ने विष्णु के चरण पकड़कर उन्हें प्रमाण करते हुए रोना शुरू कर दिया और पूछा कि गंगा और सरस्वती को भी आप शाप मुंक्त करके कब क्षमा करेंगे। इस पर उन्हें नारायण ने बताया कि हे देवी! मै अपने वचन की रक्षा के साथ तुम्हारी बातें भी स्वीकार करता हूँ। तुममें परस्पर सद्भाव रहे इसलिए यह व्यवस्था की है कि सरस्वती आधे अंश से ब्रह्मा के घर जाये और पूर्ण अंश से मेरे पास रहे। ऐसे ही गंगा भागीरथ के प्रयत्न से अपने कलांश से तीनों लोकों को पवित्र करती हुई भारत में रहें और पूर्ण अंश से मेरे पस रहे। ऐसे ही गंगा भागीरथ के प्रयत्न से अपने कलांश से तीनों लोकों को पवित्र करती हुई भारत में रहे और पूर्ण अंश से मेरे साथ रहें। कुछ ही दिनों के पश्चात् आपको शिव मस्तक भी प्राप्त हो जायेगा।

तत्पश्चात् बोले कि हे लक्ष्मी! तुम भी अपने अंश मात्र से भारत में पद्मावती नाम की नदी और तुलसी नामक वृक्ष बनकर रहोगी। कलियुग के पांच हजार वर्ष बीतने पर नदी भाव से मुक्त होकर तुम पुनः मेरे पास लौट आओगी।

इस प्रकार हरिप्रिया महालक्ष्मी "तुलसी पत्र" और पद्मावती नदी के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूप में अब भी भारत की पवित्र भूमि पर दीन दुखियों के पाप को हरण कर सभी को सफल मनोरथ प्रदान कर रही है। जो भी भक्त पद्मावती नदी में स्नान करेगा या तुलसी वृक्ष की भक्ति करेगा उसे धन–धान्य और सुख–सौभाग्य की कमी भी कमी नहीं होगी।

श्री महालक्ष्मी का स्वरूप

ब्रह्मवैवर्त पुराण्ण के अनुसार "महालक्ष्मी का स्वरूप" आदि शक्ति प्रकृति" को मानी गई है और सिंहवाहिनी दुर्गा, महाकाली, सरस्वती, सीता, राधा आदि समस्त देवियां उन्हीं के अंश हैं।

किन्तु संसार में राज्य लक्ष्मी, धन लक्ष्मी, गृहलक्ष्मी या सागर से निकली हुई हरिप्रिया कमला जिन स्वरूप में पूजी जाती है वो इस प्रकार है--

गौर वर्ण, स्वर्ण सा दमकता चेहरा, चर्तुभुजी, शांत स्वभाव, समस्त संसार को सुख देने वाली मनोरम चेहरा, हाथ में कमल पुष्प और धन कलश लिये कमल पुष्प पर विराजित हैं। पीले वस्त्रों में, गले में वैजयन्ती पुष्प और मणियों की माला से सुशोभित हैं और इनका वालन परम ज्ञानी पक्षी राज उल्लू है। भगवती लक्ष्मी ही समस्त दृष्टि जगत को धन–दौलत, सुख–वैभव, ऋद्धि–सिद्धि और सभी ऐश्वर्यों को प्रदान करती हैं।

इनकी कृपा के बिना सृष्टि जगत को कोई भी जीवों का पालन नहीं हो सकता।

अतः जिन महानुभावों को समस्त ऐश्वर्यों की प्राप्ति करनी हो वो चर्तुभुजी महालक्ष्मी का पूजन नित्य नियम के साथ करें और उन्हें प्रसन्न कर समस्त धन–दौलत और सुख प्राप्त करें।

लक्ष्मी–शक्ति

सृष्टि की नारियों में रत्न महारानी लक्ष्मी समस्त जगत की मां है। जिन्होंने यह सृष्टि तो क्या ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर को भी जन्म दिये हैं जिनके द्वारा, जन्म–पालन और संहार का कार्य सम्पादित होता है। इन माँ की महिमा को कौन बखान कर सकता है। इनकी शक्ति को कौन जान सकता है।

महर्षि अत्रि जी इन महाशक्ति का वर्णन करते हैं शिष्यों को बताते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं कि भगवती लक्ष्मी विराट रूप के साथ संसार के समस्त गुण लिये दिखाई दिया करती हैं। इनकी कृपा से ही सारे दुःखों का अन्त किया जाता है। यही भगवती सारे श्रेयों का मूल है, जगत का जीवन है और यही माँ समस्त जगत की क्रिया भी है। तथा लक्ष्मी ही तीनों लोकों का पालन–पोषण करती है और अन्त में इस सृष्टि का संहार करती है। अतः लक्ष्मी के बिना संसार के किसी भी जीव का पालन नहीं हो सकता। इस प्रकार से जीवन भी लक्ष्मी जी को और मृत्यु के द्वार भी यही खोलती है। वही ज्ञान है वही प्रकाश है वहि विद्या और बुद्धि भी है।

भगवती ने स्वयं ही बताया है कि मैं ही भगवान नारायण शक्ति का दूसरा रूप हूँ। ब्रह्मा जी और मेरा दोनों का परम रूप ज्ञान स्वरूप ही होता है। यह पूरा विश्व मेरा ही रूप है, मेरा ही अंश है और हर जीव के अन्दर मैं ही विराज़मान हूँ। मैं स्वयं ही कर्त्तव्य का पालन किया करती हूँ।

नित्य कल्याण, गुण की शोभा से सम्बन्धित मैं नारायण नाम वाली हूँ यह वैष्णवी सत्ता है। जिसके पास सम्पत्ति है उसी के पास मेरा बसेरा है और जिसके घर मे मेरा निवास नहीं होता वहाँ सम्पत्ति नहीं होती।

जिन्हें हमें प्राप्त करना हो उनके लिए आवश्यक है कि वो अधर्म की कमाई नहीं बल्कि परिश्रम और सत्य कर्मों द्वारा धन का उपार्जन करें तभी मैं उनके यहां विराजित हो सकती हूँ। मैं हर उस मानव पर दया करती हूँ जो दूसरों पर दया दर्शाते हैं।

मैं स्वयं दया हूँ। जो भी मुझ पर विश्वास करता है, मेरा पाठ करता है मैं उसे सदा सुखी रखती हूँ।

श्री लक्ष्मी का निवास स्थान

भगवती लक्ष्मी ने अपने विश्वास के बारे में द्वापरयुग में रुकमणि के पूछे गये प्रश्नों पर जो उत्तर दिये थे वो इस प्रकार हैं–

उन्होंने साक्षात होकर कहा था कि हे रुकमणि, मैं हमेशा ऐसे मानव में निवास करती हूँ जो सत्यनिष्ठ हो। जो व्यक्ति कर्मपरायण, क्रोधरहित, देवोपासनों में लिप्त, निर्भीक, कार्यकुशल और दूसरों की सेवा करता हो उनके हृदय में तथा उनके गृह में मेरा निवास है।

किन्तु जो मानव दुराचारी, पापी, अत्याचारी, क्रूर और गुरूजनों का निरादर करने वाला हो उसके अंन्दर मैं निवास नहीं करती।

जो अपने लिए कुछ नहीं चाहते, जो थोड़े में ही संतोष कर लेते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहाँ मैं पूर्ण रूप से निवास नहीं करती।

जो व्यक्ति धर्मपराण, बुजुर्गों का सेवक, जितेन्द्रिय, क्षमाशील, ब्रह्मचर्य, वैष्णव, गौ, ब्राह्मणों का सेवक और तप–बल ज्ञान में लीन रहता है उसके यहाँ मेरा पवित्र रूप में निवास है।

जो व्यक्ति आलसी, कलहप्रिय, धैर्यहीन और अधिक नींद में सदा सोये रहने वाला होता है उसकी छाया से मैं सदैव दूर रहा करती हूँ।

मैं सुन्दर सवारियों, कुमारी कन्याओं, रत्नों, भरे खजानों में, आभूषणों में, यज्ञों में, मेघों में, कमल और शरद ऋतु की नक्षत्र मालाओं में, हाथियों पर, तथा गौशालाओं में, सुन्दर आसनों पर और जल युक्त सरोवरों में सदैव समाई रहती हूँ।

जहाँ हंसों की मधुर ध्वनि हो, जहाँ कौंच पक्षी का कलरव हो, जहाँ पर मोर पंख को झमकाकर नृत्य करता हो–जिन नदी तटों पर वृक्षों की श्रेणियाँ शोभायमान हों, जहाँ पर सिद्ध तपस्वी और ब्राह्मण का निवास हो, जिस सरोवर में सिंह और हाथी सदैव स्नान करता हो या वहाँ पधार कर जल पीता हो, जिस सरोवर में कमल खिले हों, जहाँ पर फूलों से देवताओं को उपहार समर्पित किये जाते हों वहाँ पर मैं सृष्टिकाल से ही निवास करती हूँ।

भगवती लक्ष्मी बोली कि हे रुक्मणि जहाँ पर मेरा निवास होता है वहाँ अकेली सिर्फ मैं ही नहीं बल्कि मेरे अंश से ही निकली– आशा, श्रद्धा, धृति, शांती, स्वधा, स्वाहा, समृद्धि और कांथि भी निवास करती हैं। इस प्रकार स्वयं भगवती के मुखारविन्द से सुनी हुई अमृतवाणी से रुक्मणि संतुष्ट हो गई।

मूर्ति–रूप लक्ष्मी आसन कमल और 'ऐरावत उत्पत्ति'

जब भी भगवती लक्ष्मी स्मरण की जाती है तभी नैनों के सामने कमल पर विराजमान माता के दोनों ओर दो सफेद और सुन्दर हाथी अपनी सूंड़ों में स्वर्ण का कलश दबाये हुए अनुपम रूप उभर आते हैं।

ये दोनों हाथी भगवती को नित्य ही सूंड में दबाये स्वर्ण कलश से स्नान कराते हैं और अपने भाग्य को संवारते हैं। ये कमल और हाथीं माँ लक्ष्मी के अभिन्न अंग होने से महालक्ष्मी के समस्त गुणों से परिपूर्ण हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और ये पूर्णता भी जो उनमें विराजमान है वो भी लक्ष्मी जी की लीला ही है।

महालक्ष्मी भगवती को अनेकों नामों से सृष्टि काल से सम्बोधित किया गया है क्योंकि महालक्ष्मी ही तो "आदिशक्ति" है जो समस्त शक्तियों को शक्ति प्रदान करती है।

आदिकाल में धरती–माता को लक्ष्मी कहा गया है। पुराणों में वर्णित इन शब्दों को देखें:–

समुद्र मेखले देवि पर्वतस्य मंडले।
विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यं. पादस्पर्श क्षमत्वने।।

अर्थात्–हे समुद्र की करधनी धारण करने वाली देवी (भूमि) हे पहाड़ों के रूप से सोने वाली विष्णु जी की पत्नी, मैं आपको सौ बार प्रणाम करता हूँ। पांव द्वारा स्पर्श के लिए हमें क्षमा करना।

इन शब्दों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि विष्णु जी की पत्नी लक्ष्मी जी और भूमि एक ही है अतः भगवती लक्ष्मी की पूजा एक प्रकार की भूमि पूजा ही है। अगर भूमि लक्ष्मी ना होती है इतने रत्नों के खजाने, इतने खनिजों के भंडार अपने गर्भ में कैसे छिपाये रखती है। आज भी ये संसार धरती के गर्भ से आपार मात्रा में खनिज, द्रव्य, रत्न आदि निकाल कर अपने कार्य सम्पादित कर रहे हैं अतः भूमि को महालक्ष्मी की उपाधि देने का इससे बड़ा और क्था उदाहरण हो सकता है।

अब हमें इस विषय में खोज करनी है कि लक्ष्मी जी के वर्तमान रूप में आने के लिए किस प्रकार के परिवर्तन हुए हैं।

आदिकाल में सभी रत्नों की दात्री धरती की ही पूजा होती थी। तत्पश्चात् उसकी उपज कमल की पूजा होने लगी। उधर अदृश्य (प्राकृतिक) शक्तियों से मानव प्रतीक गढ़ने का युग आया तो लक्ष्मी का रूप मूर्ती रूप में परिवर्तन होने के बावजूद भी मूर्ती रूप महालक्ष्मी ने अपने मूल गुणों को नहीं छोड़ा। वे अपने वनस्पती प्रतीक कमल से जुड़ी ही रहीं और कमला कहलाती रहीं।

दूसरे रूप में कमल की उत्पत्ति के बारे में वर्णन है कि सागर मंथन के समय लक्ष्मी जी के साथ ही कमल की उत्पत्ति हुई और रत्नों के रूप में ऐरावत हाथी भी निकला जो लक्ष्मी के साथ विराजमान है।

किन्तु ऐरावत हाथी के सम्बन्ध में एक और पुराण में वर्णित है जो इस प्रकार हैं–कि ऐरावत का जन्म सूर्य के साथ ही हुआ था। सूर्यदेव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जैसे ही ब्रह्माण्ड से निकले वैसे ही ब्रह्म के अन्डे के दोनों अर्धभागों को अपने हाथों में ले लिया।

जैसे ही ब्रह्मा जी ने ऐसा किया तो उनके दाहिनें हाथ से ऐरावत हाथी का जन्म हुआ तथा उसके पश्चात् सात और हाथी पैदा हुए।

फिर बायीं हथेली से एक साथ ही आठ हथिनियां पैदा हुईं। इस प्रकार से आठ हाथी के जोड़े ब्रह्मा जी के हाथों पैदा होकर आठ दिग्गज कहलाये। यह दिग्गज आठ दिशाओं में प्रहरी के रूप में ब्रह्मा जी के द्वारा नियुक्त किये गये।

लक्ष्मी का वाहन, उलूक और उनकी विशेषता

रौद्र रूप में भगवती महालक्ष्मी का वाहन सिंह है जिन्होंने देवासुर संग्राम में दानवों की सेना को रौंद डाला था चबा डाला था और शांत रूप में इनका वाहन उलूक महापक्षी है। इसकी विशेषता ये है कि इसके शरीर का तापमान वातावरण के साथ घटता–बढ़ता नहीं है। अतः शान्त स्वभाव वाली महारानी लक्ष्मी जी ने इस समतापी पक्षी का वाहन कबूल किया।

इस पक्षी की तंत्र शास्त्र में भी बहुत ही महानता है। इनके द्वारा ही मारण, वशीकरण और उच्चाटन जैसी सिद्धियां प्राप्त की जाती हैं। अतः इन्हें एक विशिष्ट पक्षी माना गया है।

तंत्रशास्त्र के अनुसार "उलूक"की विशेषताः–

1. यदि प्रातः काल पूर्व दिशा की ओर हरे–भरे वृक्ष पर बैठकर उलूक बोलता है तो सुनने वाले को धन लक्ष्मी प्राप्त होती है यदि उसी क्षण पश्चिम दिशा की ओर सूखे वृक्ष पर आवाज दे रहा है तो सुनने वाले को धन की हानि होती है।

2. यदि किसी के निवास स्थान के पास लगातार कई दिन बैठ–बैठ कर बोलता हो तो चोरी की सम्भावना और धन हानि होती है।

3. यदि रात के समय उल्लू की आवाज आती हो तो धन–जन की वृद्धि होती है।

4. वक्त रात्रि का हो और बिना कुछ आवाज लगाये उल्लू आपके बिस्तर पे आकर बैठ जाये तो समझें कि आपका भाग्य उदय हो चुका है।

5. प्रभात के समय यदि उल्लू के अंग से अंग स्पर्श हो जाये तो मन का मनोरथ पूरा हो जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

6. यदि बीमारी के बिस्तर पे उल्लू उसके साथ ही बिना बोलते ही बैठा हुआ हो तो रोगी निरोग हो जाता है।

इन विविध विशेषताओं के कारण ही शायद भगवती महालक्ष्मी ने इनका वाहन चुना होगा।

प्रकृति और सृष्टि की देवी महालक्ष्मी

ब्रह्मवैवर्त पुराण के प्रकृति खंड में नारायण मुनी से नारद जी से पूछा है कि हे महामुनी। ये महालक्ष्मी किसके द्वारा उत्पन्न होती है, इसका रूप और लक्षण क्या है और ये कब किस रूप में कहाँ अवतरित होती है, इनका क्या वृतांत है?

तब नारायण मुनि ने नारद की शंका का निवारण करते हुए कहा कि हे मुनि श्रेष्ठ यद्यपि महालक्ष्मी प्रकृतियों का लक्ष्ण समझाने में मैं भी पूरी तरह से असमर्थ हूँ किन्तु फिर भी जो कुछ मैंने धर्म मुख से सूना है मैं तुम्हें बताता हूँ। वस्तुतः "प्र" का अर्थ श्रेष्ठ और "कृति" का अर्थ है सृष्टि अर्थात् यह देवी जो प्रकट गुण वाली है और सृष्टि करने में समर्थ है वह "प्रकृति" कहलाती है और उन्हीं का नाम "महालक्ष्मी" है।

वेदों में "प्र" शब्द का अर्थ सत्व गुण बताया है, "कृते" का रजोगुण और "ति" का तमोगुण इस प्रकार यह प्रकृति रूपी महालक्ष्मी सतरंजतम गुण है। अतः सृष्टि की देवी को ही "प्रकृति" महालक्ष्मी कहा जाता है।

प्रारम्भ काल में ब्रह्मा ने अपने दो रूपों को प्रकट किया। दाहिने अंग से पुरूष और बायें अंग से प्रकृति। इसलिए योगी पुरुष स्त्री और पुरुष में भेद नहीं मानते हैं। ये स्वेच्छा से ही एक रूप में गणेश की माँ पार्वती और विष्णु की प्रिया बनी हैं।

यह ब्रह्म स्वरूप वाली नारायण महालक्ष्मी सभी देवताओं मुनियों द्वारा पूजी जाती हैं। यश, मंगल, वैभव, पुण्य मोक्ष आदि देने वाली और दुख का नाश करने वाली है। शक्ति रूपा तेज की देवी यह महालक्ष्मी सिद्धियों की अधिश्वरी है। परम तेज स्वरूपा यह महालक्ष्मी अपने शरणागतों का उद्धार करती है। बुद्धि, निद्रा, भूख, प्यास, छाया, दया, स्मृति, कांती भांती, चेतना, लक्ष्मी, बुद्धि और माता से प्रसिद्ध सभी देवियाँ महालक्ष्मी शक्ति स्वरूपा "प्रकृति" हैं।

लक्ष्मी परमात्मा विष्णु की शक्ति सम्पत्ति की अधिष्ठेत्री देवी है। भगवान की प्रिया और प्राणतुल्य हैं। यह अन्मयी क्षोभ, मोह, काम आदि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुराइयों से दूर है। जीवन से रक्षा करने वाली पति सेवा में लीन स्वर्ग लक्ष्मी कहलाती है, राजाओं के यहाँ लक्ष्मी और घरों में गृह लक्ष्मी कहलाती है। मनोहर आभा वाली ये भगवती विद्युत के समान चंचल, भक्तों की रक्षा करने वाली, सब ही देवों द्वारा पूज्य हैं।

चर्तुभुजी लक्ष्मी के विविध नाम

"श्री सूक्त" में लक्ष्मी जी को विभिन्न नामों से सम्बोधित किया गया है। जिनका अर्थ सहित विवरण इस प्रकार है–

1. आयुत वल्लभा – विष्णु की प्यारी
2. अनपागामिणी – विष्णु के अंग से कभी न अलग होने वाली।
3. आर्द्रा – गजेन्द्र द्वारा लाई हुई।
4. करीषिणी – ऐरावत पर सवारी करने वाली।
5. तर्पन्ती – तृप्ति प्रदान करने वाली।
6. त्रिभुवनभुतिकारी – तीनों लोकों को वैभव सम्पन्न कराने वाली।
7. क्षमाः – सबको माफ करने वाली।
8. गोदाः – गौ धन की दाती।
9. आदित्य वर्णा – जो सूर्य के समान प्रतिमा वाली हो।
10. ज्वलन्ती – दीप्तिमय।
11. पद्म प्रिया – कमल को पसंद करने वाली।
12. धनदा – धन–धान्य देने वाली।
13. देवजुष्टा – सभी देवों द्वारा पूजित।
14. पद्माक्षीः – कमल पक्ष के समान नेत्रों वाली।
15. पद्मिनी – जो सौन्दर्य की देवी हो।
16. पिंगला – दीप शिखा के मान प्रज्जवलित दिखने वाली।
17. पुष्टि – सबका पोषण करने वाली।
18. मनोज्ञा – अभिलाषा जानने वाली।
19. माता – जगत को सृष्टि करने वाली।
20. माधवप्रिया – विष्णु को प्राणों से भी प्रिय।
21. पुष्करणी – हाथ में कमल धारण करने वाली।
22. प्रभाषा – उत्तम कांती से सम्पन्न।
23. महाधना – पर्याप्त धन वाली।
24. भूमि – परम सत्ता प्राप्त करने वाली।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

25. यशसा ज्वलन्ती – यशों से विश्वविख्यात।
26. यष्टिः – पूजने योग्य अम्बिका।
27. उदारा – भक्तों का उद्धार करने वाली।
28. विश्वप्रिया – विष्णु की प्रिय पत्नी।
29. श्री – भगवान का आसरा लेकर विराजित।
30. सरोजहस्ता – दोनों हाथों में कमल प्रिय।
31. हेम मालिनी – स्वर्ण मालाओं को धारण करने वाली।
32. विष्णु सखि – भगवान विष्णु की सखि के समान।
33. हरिवल्लभा – नारायण की प्रिय पत्नी।
34. हिरण्य वर्णा – पिछले स्वर्ण के समान।
35. लक्ष्मी – सभी का उद्धार करने वाली।
36. भक्तभिलाषी – भक्तों की अभिलाषा पूरी करने वाली।
37. विष्णु मनोनुकूला – विष्णु के मन के अनुकूल रहने वाली।
38. पद्योरू – आसन रूप में कमल रखने वाली।
39. सोहिवस्मता – मन्द मन्द मुस्काने वाली।
40. सर्वमातेश्वरी – संसार की माता।
41. सर्वभैर्तश्वरी – संसार का शोषण करने वाली।

प्राचीन ग्रन्थों में लक्ष्मी जी का वर्णन

प्राचिन ग्रन्थों में श्री लक्ष्मी जी का वर्णन इस प्रकार है–

1. यः सुबाहु स्वुरि, सुषमा, बहुसुंदरी,
तस्यै विश्वपत्न्ये द्वीव सिनी वालैय जुहीतान।

(अर्थववेद)

अर्थात्– हे ऋत्विा! यजमान्! यह देव सुन्दर अंगुलियों से युक्त हाथों से सुशोभित हैं। तुम इन प्रजाओं का पालन करने वाली देवी को दुनिया प्रदान करो। जब लक्ष्मी जी खुश होती हैं। तब वे भगवान को भी प्रेरित करती हैं कि आप इन भक्तों को धन प्रदान करो।

2. एवादिवो दुहिता प्रश्यदर्शि, त्रयुछन्ती युवती शुक्रवास,
विश्व स्येशानां, पार्विवस्य अद्यह सुभगे त्रच्युछ

(ऋक)

अर्थात्–यह सुन्दर वस्त्र धारण करने वाली युवती समस्त पार्थिव धनों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की स्वामिनी है। यह सम्पूर्ण सौभाग्यों से सम्पन्न देवी आज हमारे यहाँ विस्तार करती हुई निवास करें।

3. महालक्ष्मीश्च विद्यहे सर्वसिद्धिश्च धीमहितन्नो देवी प्रचोदयात्

(देव्युपनिषद)

अर्थात्–हम उस महालक्ष्मी जी को जानते हैं जो सारी सिद्धियों की उपलब्धि करती हैं, वे देवी हमें अच्छी प्रेरणा दें।

4. खामनेः वृक्षे पुरुषों निमग्ना, व्रतोदया शेचति मुद्यमान।
जष्ट यदा पश्चत्यन्नीस महामानमिर्ति वीत शोक।।

(श्वेताश्तरोपनिषद् श्रुति)

अर्थात्–मानव आत्मा आशक्ति में खोई हुई सामर्थ्य से रहित होने के कारण मोह के वश में आकर शोक करता है। किन्तु वह उपासना की शक्ति से ईश्वर को खुश कर लेता है और ईश्वर की महिमा से लक्ष्मी जी का दर्शन कर लेते है।, तब वह चिन्ता मुक्त हो जाता है।

5. निर्भियमानादुद धेस्तदासीत।
सादिव्यलक्ष्मीभ, वनैकनाथ।।
आनिन्दीक्षिकी ब्रह्मविदो वदन्ति।
तथा चान्यो मूले विद्या गुण्न्ति।।
ब्रह्म विद्या के विवाह सर्मथा।
के चित्सिद्ध माज्ञामदायाशाम।।
मा वैष्णवी योगिनी के चिदाहु।
तथा च माया मायनी नित्ययुक्ता।।

(संकन्द पुराण)

अर्थात्–सागर के मन्थन से जिन लक्ष्मी जी का जन्म हूआ। वह एक ही संसार की स्वामिनी हैं। इस महाशक्ति देवी को आन्वीक्षिकी कहते हैं। कुछ लोग इसे मूल विद्या कहते हैं। कुछ लोग इन्हें ब्रह्म विद्या और ऋद्धि–सिद्धि विद्या भी कहते हैं। कोई इसे आशा कहता है तो कोई वैष्णवी, कुछ माया के पुजारी इसे "माया" नाम से पुकारते हैं।

6. यस्मिन कः स्मश्च यस्मिचिदुत्कृष्ट परिवृश्यते।

(ब्रह्म पुराण)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्थात्–अधिक कहने से क्या लाभ। यह सारा संसार ही लक्ष्मी से भरा पड़ा हुआ है। यहाँ जो कुछ भी दिखाई देता है, वह सब लक्ष्मी जी की ही देन है।

7. कमला कुशपाशा ब्जैरलकृत चतुभुर्जा।
इन्दिरा, कमला, लक्ष्मीसा श्री रम्भाम्बुजासना।।

(मूर्ती रहस्य)

अर्थात्– वे अपना चार भुजओं, कमल, अंकुश, पाश और शंख धारण किये हुए हैं। वे ही इन्दिरा, कमला, लक्ष्मी तथा रूकमम्बुजासन (सोने के कमल पर बैठनें वाली) तथा "श्री" कहलाती है।

श्री लक्ष्मी विष्णु की एकरूपता

विष्णु पुराण में "हरिप्रिया" लक्ष्मी के बारे में "महर्षि पारशर" जी ने कहा है कि भगवान का कभी न साथ छोड़ने वाली जगत–जननी लक्ष्मी जी नित्य है। इस प्रकार श्री विष्णु भगवान सर्वव्यापक हैं, वैसे ही लक्ष्मी जी भी हैं।

विष्णु अर्थ है तो लक्ष्मी वाणी हैं। हरि न्याय हैं तो लक्ष्मी नीति हैं। विष्णु बोध हैं तो लक्ष्मी बुद्धि हैं। विष्णु धर्म हैं तो लक्ष्मी सतक्रिया हैं। भगवान संतोष हैं तो लक्ष्मी जी नित्य तुष्टी हैं। भगवान काम है तो लक्ष्मी जी इच्छा हैं। विष्णु यज्ञ हैं तो लक्ष्मी जी यज्ञशाला हैं। भगवान कुशा हैं तो लक्ष्मी जी समिधा। विष्णु शंकर हैं तो लक्ष्मी जी गौरी। इस प्रकार यदि केशव सूर्य हैं तो लक्ष्मी जी प्रभा। विष्णु दीपक हैं तो लक्ष्मी ज्योति हैं।

अ।: संक्षिप्त में यही कहना पर्याप्त होगा कि पुरुषवाची समस्त तत्व भगवान विष्णु हैं और स्त्री वाची समस्त तत्व श्री लक्ष्मी हैं। इनमें परे और कोई नहीं हैं। भगवान विष्णु ने जब भी अवतार लिये लक्ष्मी जी किसी न किसी रूप में उनके साथ अवश्य रहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री लक्ष्मी उपासना आरम्भ करने से पूर्व अत्यन्त महत्वपूर्ण खण्ड

उपासना शब्द का अर्थ

धन,सुख व समस्त ऐश्वर्य प्राप्ति की चाहत रखने वाले पाठकों! यदि आप लक्ष्मी उपासना प्रारंभ करना चाहते हैं तो उपासना आरम्भ से पूर्व निम्नलिखित विषयों का अध्ययन और मनन अवश्य करें, तभी "उपासना" में सफलता की प्राप्ति होगी।

सर्वप्रथम आप यह जानें कि "उपासना शब्द" का अर्थ क्या होता है–

उपासकों! उपासना का शाब्दिक अर्थ है "समीप" बैठने का प्रयास"। सन्धि विच्छेद के अनुसार– उप+आसना = उपासना। उप = समीपे, आसना = स्थिति = इति "उपासना"।

अर्थात्–"भगवती महालक्ष्मी से तल्लीनता का प्रयास।"

"फुलणिव तंत्र" में उपासना की परिभाषा इस प्रकार दी गई है–

"कर्मणा मनसा वाचा सर्वा वस्थासु।
समीप सेवा विधिना उपस्तिरिति कथ्यते।।

अर्थात्–सब प्रकार से समीप रहकर सेवा करना ही "उपासना" है।

"श्रीमद् भागवद" के अनुसार–

"उपसितो यत्पुरुषः पुराणः"

अर्थात्–पूर्ण भक्ति से प्रसन्न कर लेना ही–"उपासना" है।

इसी प्रकार भागवत में अन्य स्थानों पर–

"त्वतापावार विग्ंव भर्वासन्धु षोत्तम।
उपासते कामलवाय तेषा"।।

अर्थात्–"उपासना" शब्द को "पूजा भक्ति में लीन रहना" कहा गया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है।

इसी प्रकार एक और उदाहरण देखें–

"उपासते योग रथेन धीराः"

इसमें भी उपासना का अर्थ "ध्यान" ही है।

अर्थात् इष्ट देव का ध्यान, प्रणाम, नमस्कार, पूजा, जप, होम, भक्ति, दास्य सुख, सामीप्य, सेवा, परिचर्या, अराधना, चिन्तन, मनन आदि सभी क्रियाओं को हम "उपासना" कहते हैं।

इसे इस प्रकार भी समझ सकते हैं–

"जिस अनुपम पवित्र पुस्तक में धन की देवी महालक्ष्मी को प्रसन्न करने हेतु पूजन, स्तुति, वन्दना, जप, यंत्र, मंत्र, वैदिक व लौकिक विधि वर्णित की गई है, उसे हम "लक्ष्मी उपासना" ग्रन्थ कहते हैं।

पूजा "परमात्मा" व "परमेश्वरी" की होती है। चूंकि परमात्मा सर्व व्यापक, अखण्ड एवं निराकार हैं, तब उनके समीप कैसे बैठा जाए?

इस शंका का समाधान शास्त्रों ने यह कहकर किया है कि परमात्मा के प्रतीक प्रतिनिधि, मुर्ति अथवा उनके स्वरूप को हृदय में बसाकर–"उपासना" की जा सकती है।

लक्ष्मी उपासना क्यों करें ?

उपासकों! "भगवती लक्ष्मी" सृष्टि जगत के समस्त धन और ऐश्वर्यों की "देवी" है। वे विष्णु माया जिनके ऊपर खुश होती है, उनके पास किसी भी पदार्थों की कमी नहीं होती। इनकी उपसना से मानव धन, जन समस्त सुख ऐश्वर्यों से सम्पन्न हो जाता है और दुःख दरिद्रता आदि दोषों का अन्त हो जाता है।

"धन" संसार में सदैव सर्वोपरि रहा है। धन के अभाव में कोई भी कार्य में सफलता नहीं मिलती। अतः पूरा संसार धन के पीछे भाग रहा है, परन्तु धन उसी को प्राप्त होता है जिन पर धन की देवी "लक्ष्मी"हर्षित होती है, तभी हम धन प्राप्त कर सकते हैं। यही "उपासना रहस्य," उपासना की अनुपम वैदिक विधि, इस छोटी से अनुपम पुस्तक में छुपी हुई है। इसे जानकर, कार्य रूप देकर हृदय से नमन, मनन कर आप संसार के उच्चतम शिखर पर पहुँच सकते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपासना में भावना का महत्व

उपासको! माता लक्ष्मी की प्रतिमा अथवा तस्वीर के समक्ष विधिवत् पूजन सामग्री स्थूल रूप से अर्पित करते हुए आराधना की जाये अथवा केवल मन्त्रोच्चार करते हुए "मानसिक उपासना", महत्व उपादानों (पूजन–सामग्री) का नहीं– आपको "भावना" की होती है।

माता लक्ष्मी को किसी वस्तु की कमी नहीं है, जो हम उन्हें दे सकते हैं। पूजा–अर्चना और आराधना में जो वस्तुएँ देवताओं को अर्पित की जाती हैं वे भी हमारी भावनाओं का ही दिग्दर्शक होती हैं, जबकि उपासना में हम केवल "भावों का ही पुष्प" चढ़ाते हैं।

धन की महारानी महालक्ष्मी की उपासना की जाये अथवा प्रभु की आराधना, जप किया जाये या मूर्ति पूजन, अपने अराध्य की सेवा, पूजा और अर्चना आराधना का यह क्षेत्र है, जहां हमें अपनी भावना के अनुरूप ही फलों की प्राप्ति होती है। भक्तवत्सला विष्णु भार्या देवी लक्ष्मी अत्यंत दयालु हैं, परन्तु हम उन्हें विद्या के द्वारा प्राप्त की गयी तर्क शक्ति, बुद्धि, धन और बल से प्राप्त नहीं कर सकते। इसके लिए तो हमें अपने हृदय की सम्पूर्ण गहराई के साथ समर्पित भाव से पुकारना, याद करना और नमन करना ही होगा।

उपासना में भावना का प्रभाव और कामना

उपासकों! जो व्यक्ति निष्कपट भाव से भगवती लक्ष्मी का स्मरण करते हुए उनके श्री चरणों में मन लगाकर संसार के प्रति अनासक्त रहते हुए कर्म करते हैं, उनके तो सभी कार्य परमेश्वरि के प्रति समर्पित होने के कारण स्वयं ही उपासना बन जाती है। परन्तु "उपासना" के प्रथम चरण में ऐसा सम्भव नहीं।

माता महालक्ष्मी की उपासना तो धन और समस्त ऐश्वर्यों की प्राप्ति हेतु की जाती है। अतः हम ये तो नहीं कह सकते कि आप उनसे कुछ मांगे ही नहीं, परन्तु मातेश्वरी की उपासना करते समय उनसे यही मांगिए कि आपमें सद्गुणों का विकाश हो। किसी की बुराई, हानि अथवा स्वयं के लिए लौकिक वस्तुओं की मांग करके अपनी उपासना को नष्ट न कीजिए।

उपासना का क्षेत्र तो पूरी तरह से "भावना" पर ही आधारित है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जबकि संसार में भी व्यक्ति को उसके कर्मों का फल उसकी भावनाओं के अनुरूप ही मिलता है। एक सीधे–सादे उदाहरण द्वारा यह समझने में हमें आसानी रहेगी–

"आप्रेशन करने वाला एक शल्य–चिकित्सक (डॉक्टर) भी शरीर पर छुरी चलाता है और एक क्रूर हत्यारा भी। परन्तु डॉक्टर को धन, यश, मान–सम्मान और पुण्य मिलता है तो हत्यारों को "प्राण दण्ड"। कार्य तो दोनों ने ही किया, दोनों के कार्य का माध्यम भी छुरा था और समान रूप से ही व्यक्ति रक्त रंजित भी हुआ"।

फिर यह अन्तर क्यों ? एक को पुरस्कार दूसरे को दण्ड, एक को मान–सम्मान दूसरे को अपमान, एक का गुणगान दूसरे से घृणा क्यों? क्योंकि दोनों की भावना में अन्तर था। शल्य चिकित्सक की भावना रोगी को रोग मुक्त कर सुखी और संतुष्ट करना था, तो हत्यारें की भावना व्यक्ति को रोग मुक्त कर सुखी और संतुष्ट करना था, तो हत्यारे की भावना व्यक्ति को असमय काल के गाल में पहुँचाना। यही "भावना" का फर्क था उन्हें मिलने वाले प्रतिफलों का अन्तर।

ठीक यह अवस्था मातेश्वरी लक्ष्मी की उपासना में है। यदि हमारे भाव दूषित होंगें तो भक्त वत्सला भगवती हम पर अनुकम्पा क्या करेगी, अधिक सम्भावना यही है कि हमारी उपासना का हमें कोई फल ही न मिले। यही कारण है कि हृदय की निर्मलता उपासना की प्रथम शर्त है और उसका सबसे आसान उपाय है लोभ और मोह जैसी बुराइयों को छोड़ते हुए अधिक से अधिक धार्मिक साहित्य का सतत् अध्यन मनन।

हम सांसारिक जीव हैं जो अनेक वस्तुओं के आकांक्षी हैं और प्रायः किसी कामना के वशीभूत होकर ही हम करते हैं–प्रभु की या भगवती की आराधना अथवा उपासना। जो व्यक्ति लोभ, मोह और सांसारिक वस्तुओं की कामनाओं पर विजय प्राप्त कर चुके हैं, उसका तो प्रत्येक कर्म ही उपासना है। परन्तु हम तो उस मंजिल के राही हैं, जहां से उपासना–आराधना आरम्भ होती है, अतः हम कामना रहित हो गये हों, ऐसा हो हीं नहीं सकता, परन्तु इतना तो कर ही सकते हैं कि दयानिधि मातेश्वरी लक्ष्मी से कोई सांसारिक वस्तु न मांगकर उनके चरणों में भक्ति की भावना की वृद्धि का ही वरदान बार–बार मांगते रहें।

कोई भी सांसारिक कामना चाहे वह साहित्य, संगीत अथवा कला में विशेष योग्यता की प्राप्ति की हो अथवा मान–सम्मान और पुरस्कारों की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राप्ति की, धन दौलत की आकांक्षा हो या पदोन्नति की कामना, मन में रखकर भजन, जप, पूजा–पाठ या आराधना–उपासना करना वास्तव में भक्ति नहीं, भगवान की जाने वाली सौदेबाजी है।

मातेश्वरी भगवती लक्ष्मी से मांगिए, अवश्य मांगिए, उनसे निरन्तर सद्भावओं, ज्ञान और भक्ति भावना का वरदान। उनसे कहिए–"हे माँ! मैं कभी आपको भूलूं नहीं, आपकी भक्ति मिले और आपको प्रेम। यह मांगना आपका अधिकार ही कर्त्तव्य भी है। यही मांगते रहने से ही सांसारिक समस्त सुखों की प्राप्ति स्वतः हो जांती है, क्योंकि परमेश्वरी स्वयं जानती है कि आपको कौन–कौन सी वस्तुओं की आवश्यकता है, जो वे स्वतः पूर्ण कर देती है।"

उपासना में दृढ़ निश्चय और श्रद्धा का महत्व

उपासकों! उपासना की शक्ति ही मानव को सर्वस्व विजय प्रदान कराती है, किन्तु बहुत कम लोग यह मानते हैं कि उपासना की नींव केवल "श्रद्धा" है और जहां पर श्रद्धा है वहीं पर "सिद्धि" है।

हर प्राणी के लिए आवश्यक है कि जिस साधन से उपासना या साधना आरम्भ करने जा रहा है, उस पर पूर्ण विश्वास रखे, उस पर पूरी आस्था होनी चाहिए जो उपासना का "मेरू दण्ड" है।

जिस उपासना में विश्वास नहीं, श्रद्धा नहीं, उसे मात्र परिक्षार्थ करना अपना समय नष्ट करना है। इसका कारण मात्र यही है कि ऐसे कार्यों से लाभ की आशा करना ही मात्र मूर्खता है। साधना मार्ग में प्रथम सोपान प्रथम पग की साधना में सम्मिलित नहीं तो फिर कैसी सफलता, कैसी सिद्धि, कैसी विजय? पराजय असफलता व असिद्ध मात्र ही अवश्यम्भावी है।

वास्तव में ही आप यदि लक्ष्मी उपासना में सफल होना चाहते हैं तो उसके लिए बहुत बड़ी लगन से काम होगा। लगन, तपस्या, साधना और उपासना का दूसरा नाम ही "सफलता" है।

यदि आप उपासना में सफल होना चाहते हैं, यदि आप मातेश्वरी लक्ष्मी के कृपापात्र बनना चाहते हैं तो उपासना करनी होगी, तप करना होगा, दृढ़ निश्चय करना होगा। इस कार्य के लिए आपको बार–बार दृढ़ निश्चय को दुहराना होगा, उनको श्रद्धा भाव से ह्रदय में बिठाना होगा, तभी आप भक्त वत्सला माता लक्ष्मी की कृपा प्राप्त कर सकेंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपासना में सहायक

उपासना के प्रारम्भिक चरण–ज्ञान और इसमें सहायक गुरू स्वध्याय के अतिरिक्त कुछ यम नियम आदि भी इस मार्ग में सहायक होते हैं।

संक्षिप्त में शरीर की भीतरी बाहरी स्वच्छता और सात्विक भोजन, वाणी द्वारा मधुर हितकारी और सत्य वचन बोलना, मन और इन्द्रियों द्वारा सांसारिक सुख, भोग में संयम उपासक को आत्मिक आनन्द की प्राप्ति में सर्वदा सहायक होते हैं।

इसके अतिरिक्त आत्मिक स्तर पर सहयोगी तत्व है–विश्वास, संकल्प, लगन और अभ्यास। अर्थात् सर्वप्रथमसृष्टि की संचालक शक्ति और उसके स्वरूप (अपने ईष्ट देव या इष्ट देवी) पर विश्वास फिर उपासना मार्ग पर चलने हेतु दृढ़ निश्चय जरूरी है।

दृढ़ निश्चय या संकल्प से प्रेरित होती है लगन, अर्थात् "अथक प्रयास" और सतत् अभ्यास से प्राप्त होती है सिद्धि, जो मनुष्य और समाज के चरम आनन्द से ओत–प्रोत हो जाने की अवस्था है।

वैदिक साहित्य और इस्लामी, यहूदी, पारसी, ईसाई आदि सम्प्रदायों में उपलब्ध स्वर्ग की परिकल्पना अथवा उपनिषदों और उनके प्रेरित जैन–बौद्ध आदि सम्प्रदायों में प्रतिपादित मोक्ष, कैवल्य, निर्वाण आदि सभी का लक्ष्य एक है। वही चरम शास्वत, निर्विकल्प आत्मिक आनन्द जो सृष्टि के आरम्भ से मनुष्य की आदम खोज है, और जिसका सहज मार्ग है–"उपसना"।

"उपासना" जीवात्मा तथा परमात्मा के मध्य की कड़ी तथा उपासना से लाभ

उपासकों! आनन्द की लालसा और सम्पत्ति अर्जन की अन्धी दौड़ ने आज मानव को पशुवत बनाकर रख दिया है। मानसिक शान्ति, परस्पर मधुर सम्बन्ध और भाईचारा आज बीते युग की बात बनकर रह गयी है और इसका एकमात्र कारण है– भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति की अन्धी असीम आकांक्षा।

तन–मन में सभी कलेशों और संतापों, समाज में हिंसा एवं अनाचार तथा व्यक्तिगत विदेश एवं असंतोष का मूल कारण–"धन के प्रति यह अन्धी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दौड़ ही है। मानव जितना भी दौड़ लगा रहा हो– विनाश की ओर जा रहा है, बुद्धिहीन हो गया है।"

अतः इससे बचने के लिए इन सभी समस्याओं का समाधान है पर ब्रह्म एवं परमेश्वरी के किसी भी रूप–स्वरूप, अवतार अथवा देवी देवता की– "उपासना"।

उपासना से ज्ञान का विकास होता है।

उपासना से जीवात्मा तथा परमात्मा के मध्य में स्थित जगत की माया तिरोहित हो जाती है तथा ज्ञान शक्ति एवं क्रिया शक्ति विकसित होती है।

उपासना से– भगवत् सान्धिय की प्राप्ति होती है और इस कलिकाल में उपासना को ही सर्व दुख भंजक एवं आराधना का सर्वश्रेष्ठ और आसान माध्यम कहा गया है।

उपासना के द्वारा–जीवात्मा के अन्तःकरण की शुद्धि एवं उपास्य देव या देवी के प्रति प्रेम, विश्वास एवं श्रद्धा की वृद्धि होती है।

उपासना के द्वारा– उपासक अपनी रक्षा का सम्पूर्ण भार अपने अराध्य देव और उसके माध्यम से परमात्मा पर डाल डाल देता है, जिससे वह परमात्मा का कृपापात्र तो बन ही जाता है, अपितु जीवन के अधिकांश तनावों और चिन्ताओं से भी छुटकारा मिल जाता है और इस प्रकार की अलौकिक शान्ति और मानसिक संतुष्टि की प्राप्ति होती है– उपासक को।

उपासना से–मानपव को धन, जन, समस्त–ऐश्वर्य एवं मनोवांछित समस्त फलों की प्राप्ति होती है।

एकाग्र मन का उपासना पर प्रभाव

उपासकों! खेल–तमाशों सांसारिक कर्मों में मानव का मन तुरन्त लग जाता है, परन्तु उपासना, भजन, पूजन, कीर्तन आदि में प्रारम्भ में कुछ दिनों तक मन नहीं जमता, चित्त चंचल बना रहता है। कई बार तो उकताहट और घबराहट जैसी होती है, परन्तु परन्तु यह स्थिति चन्द दिन ही रहती है। शुरु–शुरु में बालक को स्कूल में और नववधू को ससुराल में घबराहट होती है, परन्तु कुछ समय बाद ही बालक का स्कूल में और नववधू का पति गृह में न केवल मन लगने लगता है बल्कि वहां पूर्ण आनन्द भी आने लगता है।

ठीक यही स्थिति आराधना, उपासना और भगवत् भक्ति की है। प्रारंभ में कुछ दिनों तक ही आरधना–उपासना में मन नहीं लगता है, परन्तु कुछ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय बाद ही उपासना में भी समान ही सच्चा आनन्द आने लगता है।

यदि प्रारम्भ में मन नहीं लगता तो विष्णु प्रिया मातेश्वरी लक्ष्मी की आकृति के समक्ष सच्चे हृदय से रोईये, गिड़गिड़ाइये और प्रार्थना कीजिए कि– "हे माँ! मैं तुम्हारी मूर्ख सन्तान हूँ, निपट अनाड़ी हूँ, परन्तु मैं क्या करूँ? हे दयालु मैया! हम पर कृपा करें, अपने चरणों में मन लगावें, हमें अपनी भक्ति दें।"

दया की सागर मातेश्वरी लक्ष्मी को भक्त की पुकार को सुनना ही पड़ेगा, क्योंकि वे हमारी ही नहीं बल्कि समस्त सृष्टि की धन दात्री हैं, सम्पूर्ण जीवों की माता हैं। हम उनसे विमुख हो सकते हैं, परन्तु वे हमसे विमुख नहीं हो सकतीं। माता के समक्ष पुत्र कुछ भी मांग सकता है, जितना अधिक मांग सकते हैं मांगिए माँ से प्रेम भाव, दया और भक्ति की भिक्षा।

उपासना का प्रदर्शन सफलता में बाधक

उपासकों! भक्तों पर सब कुछ लुटाने वाली, समस्त कामना प्रदान करने वाली दयामयी अम्बिका लक्ष्मी की कृपा प्राप्ति के आप एकान्त स्थान में शान्त मन से आराधना–उपासना करें।

आराधना, उपासना, पूजा–पाठ, जप–तप, अथवा भक्ति का कोई भी मार्ग अपनाया जाये, यदि उसका प्रदर्शन हो जाता है तो पुण्य फलों में न केवल न्यूनता आ जाती है, बल्कि बड़ी सीमा तक उसका लोप भी हो जाता है।

आराधना–उपासना न तो बिक्री की वस्तु है और न ही प्रदर्शन की। उपासना का थोथा–प्रदर्शन आपको समाज में सम्मान और आत्म–प्रदर्शन का थोथा सुख और स्वयं को विशिष्ठ समझाने का झूठे गर्व तो दिला सकता है, परन्तु मातेश्वरी लक्ष्मी का सच्चा प्यार और कृपाएँ नहीं। माँ हमारी और हम उनके पुंत्र, फिर माता–पुत्र के मध्य में अन्यों का क्या काम? इसलिए जहां तक हो सके एकान्त में ही श्री लक्ष्मी की पूजा, ध्यान, भजन और उपासना कीजिए।

"भक्ति का प्रदर्शन" किस प्रकार भक्तों को कष्ट में डाल देता है, इसके हजारों जीवन्त उदाहरण हमारे धार्मिक ग्रन्थों में मिलते हैं–

"भक्तराज प्रहलाद" और भक्त ध्रुव" को बचपन से ही वर्षों तक कठोर तपस्याएँ करनी पड़ीं, तब जाकर उन्हें कहीं भगवान के दर्शन हुए,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्योंकि उनकी भक्ति कर सम्पूर्ण समाज को पता लग गया था इसके विपरीत महाराज रावण का भाई विभीषण प्रातः काल उठते समय ही चन्द क्षणों के लिए ईश्वर का सुमिरण करता था, परन्तु यह बात रावण तो क्या उसकी पत्नी तक से छुपी हुई थी–

"उनकी भक्ति।" यह विभीषण की छिपी हुई भक्ति का ही कमाल था कि ध्रुव और प्रहलाद की अपेक्षा सौवें अंश से भी कम समय तक आराधना करने पर ही न केवल उसे भगवान राम का सान्निध्य प्राप्त हुआ बल्कि इस लोक में लंका का राज्य और परलोक में विष्णु के लोक में वास भी मिला।

इसलिए माता लक्ष्मी की दया पाने के लिए, कामनाओं की प्राप्ति के लिए, धन, जन, सुख समस्त ऐश्वर्य, प्रसन्नता, शान्ति एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए उपासना रूप से अवश्य कीजिए, परन्तु उपासना का प्रदर्शन मत कीजिए, तो आप जो भी चाहेंगे प्राप्त कर लेंगे।

उपासना की योग्यता

उपासकों के लिए लक्षण निर्देश करते हुए शास्त्रों में कहा है कि –"उपासक को शीलवान, विनम्र, निश्छल, श्रद्धालु, धैर्यवान, शारीरिक दृष्टि में स्वस्थ कार्य सक्षम सच्चरित्र, इन्द्रिय संयमी और कुल प्रतिष्ठा का पोषक होना चाहिए।"

यह तो स्वयं सिद्ध है कि यदि कोई उपासक गुणों से रहित है तो वह श्रद्धा विधान पूर्वक स्थिर चित्त होकर न तो उपासना कर सकता है और न ही उसे कोई लाभ ही मिल सकता है। उपासना में सफलता का पात्र वही होता है जो विधि–विधान और पूर्ण मनोयोग के साथ उपासना पूरी कर सके।

नित्य–नियम उपासना का फल

उपासकों! कोई भी कर्म हो, नियम पूर्वक निरंतर करने से ही उसमें सफलता मिलती है। वर्ष भर नियम बिना क्रम तोड़े पढ़ने वाला विद्यार्थी ही "प्रथम श्रेणी" प्राप्त करता है।

ठीक यही दिशा पूजा, आराधना और उपासना की है। निश्चित समय पर नित्य उपसना करने से ही वांछित फलों की प्राप्ति होती है। जबकि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रमाद और आलस्य पुण्य फलों में तो कमी कर देता है, बार–बार का यह प्रमाद उपासना को खण्डित भी कर देता है, और फिर हमारा ध्यान उपासना तो क्या सामान्य पूजा--पाठ में भी नहीं लगता है।

जहां तक उपासना में लगाए जाने वाले समय का प्रश्न है, जितना नियम है उतनी आराधना–उपासना तो प्रतिदिन कम से कम निश्चित समय पर अवश्य कीजिए, ही, जितना अधिक हो जाये उतना ही अच्छा है। नियम कम से कम के लिए होता है, अधिकतम की सीमा नहीं।

क्या धन से किसी का मन भरा है? पांच वाला पचास के लिए, लाख वाला करोड़ के लिए सतत् चेष्टा करता ही रहता है, कभी उसे संतोष नहीं होता। जब संसार के इस नाशवान धन से हम नहीं उकताते, सदैव अधिक की कामना करते रहते हैं, तब भगवती लक्ष्मी के उस कृपा रूपी असीम धन को ही सीमा में कैसे बांध सकते हैं। जितने अधिक समय तक मातेश्वरी का चिन्तन, मनन, ध्यान, आराधना और उपासना हो जाये, उतना ही कम है। परन्तु इसमें एक दिन का भी व्यवधान नहीं पड़ना चाहिए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री लक्ष्मी उपासना हेतु आसन एवं मालाओं का प्रयोग खण्ड

उपासना हेतु विभिन्न आसन

उपासकों! भगवती लक्ष्मी की उपासना में लाल कम्बल के आसन या कुशा का आसन प्रयोग में लाना चाहिए।

महालक्ष्मी अनुष्ठान करना चाहें तो 108 दाने वाली शुद्ध तुलसी की माला रूद्राक्ष की माला जप कार्य में प्रयोग करें।

उपासना हेतु आसन का उपयोग क्यों ?

आर्य ग्रन्थों के अनुसार उपासक को उपासना काल में आसन पर विशेष ध्यान देना चाहिए। सभी आसनों के प्रभाव में भिन्नता होती है, अतः साधक को अपने लक्ष्य संम्बन्धित देवता और मंत्र के अनुरूप आसन का प्रयोग करना चाहिए।

नंगी भूमि पर जप करने से विद्युतीय प्रतिक्रिया शरीर को हानी पहुंचाती है, अतः उससे रक्षा हेतु आसन प्रयोग का विधान दिया गया है।

आसन का चुनाव करते समय विशेष रूप से यह ध्यान देना चाहिए कि जिस आसन पर बैठकर कोई व्यक्ति उपासना या साधना कर चुका है, उस पर बैठकर पुनः उपासना नहीं करनी चाहिए। मनीषियों ने अनुभव दिया है कि दूसरें के द्वारा प्रयोग किए आसन में उसके "दोशांष" स्थित रहते हैं, जो नए उपासकों के लिए हानिकारक हो सकते हैं, अतः साधक को चाहिए कि वह अपने लिए सर्वथा "नवीन आसन" की व्यवस्था करें और उसे भी प्रयोग से पूर्व भली–भांती धो पोंछ कर शुद्ध कर लें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जप-तप, पूजा-पाठ के लिए उपयोगी आसन

उपासकों! किसी भी उपासना में निम्न प्रकार के आसनों का प्रयोग होता है–

1. कुशा का आसन, 2. मृगचर्म, 3. व्याघ्र चर्म, 4. उनी वस्त्र, 5. रेशमी वस्त्र और 6. काष्टासन।

कुशासन पर उपासना के लाभ

भगवती लक्ष्मी के उपासकों! साधारणतः कोई भी उपासना हो यदि "कुशासन" पर बैठकर जप या पूजा पाठ किया जाये तो सफलता अवश्य मिलती है। कुशासन पर बैठकर उपासना करने से निम्नलिखित लाभ होते हैं--

1. अन्तः करण पवित्र होता है।
2. उपासक को बल की प्राप्ति में सुविधा हो जाती है।
3. उपासक की दृढ़ इच्छा शक्ति और स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर वृद्धि होती है।
4. दूषित प्रभावों–अर्थात् भूत बाधाओं का शमन होता है।
5. उपासक की उपासनात्मक उपलब्धि प्रबल होती है।

मृग चर्म पर उपासना के लाभ

मोक्ष प्राप्ति अथवा धन के उद्देश्य से की जाने वाली उपासना में "कृष्ण मृग चर्म" विशेष रूप से अनुकूल प्रभाव देता है।

व्याघ्र चर्म के आसन पर उपासना के लाभ

उपासकों! यह "रजोगुणी" आसन है। राजसिक वृत्ति वाले साधकों द्वारा "राजसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु की जाने वाली साधना या स्वभाव वाले लगभग समस्त गुण इनमें आंशिक रूप से विद्यमान रहते हैं।

परीक्षणों से सिद्ध हुआ है कि व्याघ्र चर्म के पास कोई "जीव–जन्तु" नहीं जाता। इस बैठे हुए उपासक को सांप–बिच्छु का भय नहीं रहता, क्योंकि ये जन्तु व्याघ्र चर्म पर चढ़कर उस पर आसीन उपासक को छूने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का साहस नहीं कर पाते। निर्विघ्न साधना हेतु "व्याघ्र चर्म" विशेष उपयोगी है।

वैसे इसका भी वैज्ञानिक महत्व है और पवित्रता में भी यह किसी से कम नहीं। आर्य संस्कृति के सबसे बड़े देवता और ब्रह्माण्ड के सबसे बड़े महान योगी तथा तंत्र साधक "भगवान शिव" को यह इतना प्रिय है कि वे उसे ओढ़ने बिछाने और पहनने तक काम में लाते हैं।

ऊनी वस्त्र कम्बल के आसन पर उपासना के लाभ

उपासकों! "कर्म सिद्धि" की लालसा से किए जाने वाली उपासना में "कम्बल का आसन" लाभदायक होता है। लाल एवं सतरंगे रंग का कम्बल विशेष उत्तम माना गया है।

रेशमी आसन पर उपासना के लाभ

उपासकों! "रेशमी आसन" भी उपासना में प्रयुक्त होते हैं। इस पर बैठकर जप या उपासना करने वाले साधक की शारीरिक विद्युत शक्ति पृथ्वी में प्रवेश न करके सुरक्षित रहती है। वस्तुतः ऊनी और रेशमी आसन कुचालक (असंक्रमक, नॉन कंडक्टर) पदार्थों की कोटि मे आते हैं।

साधक के लिए उचित यही होगा कि वह अपने गुरू किसी योग्य विद्वान पंडित से आसन और अन्य सामग्री तथा नियमों के पालन करने की जानकारी लेनी चाहिए।

उपासना हेतु निषिद्ध आसन

वैदिक शास्त्रों में कुछ आसनों को व्याज्य बताकर उनके प्रयोग को निषिद्ध कहा गया है–

(क) लकड़ी के आसन पर बैठकर उपासना करना वर्जित है।

(ख) बांस के बनाए गये आसन पर बैठकर जप करने से दरिद्रता आती है।

(ग) पत्थर का आसन उपासक को व्याधि ग्रस्त करता है।

(घ) धरती पर बैठकर खुली भूमि पर उपासना करने वाला व्यक्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुःख से आक्रान्त होता है।

(ड.) छेद वाली लकड़ी, घुने हुए लकड़ी के आसन का प्रयोग दुर्भाग्य कारी होता है।

(च) तिनकों से बने आसन का प्रभाव साधक को धन हानि और यश क्षीण का संताप देता है।

(छ) पल्लवों (पत्तों) से निर्मित आसन मानसिक विघ्न उत्पन्न करता है।

(ज) सामान्य वस्त्र, कपड़ा या कुर्सी का प्रयोग भी उपासना में निन्दित कहा गया है।

माला की उपयोगिता और फेरने का नियम

माला की आवश्यकता–किसी भी देवी–देवता की उपासना में "मंत्र का जप" करने हेतु "माला" की जरूरत होती है और इन्हीं माला के द्वारा "जप की संख्या" याद रखी जाती है, अतः मंत्र जप के लिए आपके पास माला का होना अति आवश्यक है।

माला की बनावट– सामान्य माला में 108 "मनके" अर्थात् दाने होते हैं तथा एक "सुमेरू" होता है। ये मालाएँ – रूद्राक्ष, तुलसी, चन्दन हल्दी, स्फटिक, बीच में गांठ लगी होनी चाहिए ताकि प्रत्येक मनका अलग–अलग रहे।

माला को गूंथने के लिए सोने, चांदी अथवा रेशमी धागे का प्रयोग करना चाहिए। यह मनके साफ, स्वच्छ हों, टूटे फूटे न हों। मंत्र जप के लिए माला का पूर्ण और शुद्ध होना आवश्यक है।

माला जपते समय, माला का एक फेरा पूर्ण हो जाने पर "सुमेरू" तक पहुँचकर वहां से फिर विपरीत दिशा में जप प्रारंभ देना चाहिए।

"सुमेरू" को लांघकर जप करना वर्जित है।

माला जपने का नियम– जप करते समय मंत्र को गुप्त रखना चाहिए, अतः "गोमुखी" (लाल कपड़े के थैले) में हाथ रखकर जप करें। खुली माला से जप करने पर यक्ष, राक्षस, बेताल, पिशाच, सिद्ध और विद्याधर आदि प्रभाव ग्रहण कर लेते हैं और खुली माला से जप करने पर आपका ध्यान सुमेरू या माला समाप्ति की ओर भी जा सकता है, जिससे विघ्न उत्पन्न होता है।

प्रातः काल जप के समय माला नाभि के सामने मध्याह्न में हृदय के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामने और सायंकाल मस्तक के सामने रखकर जप करना चाहिए। जप करते समय मंत्र का उच्चारण साफ और सपष्ट हो।

माला को मध्यमा अंगुली के मध्य पर्व पर अथवा अनामिका के मध्य पर्व पर रखें व अंगुष्ठ (अंगुठे) के प्रथम पर्व से एक–एक मनके को एक–एक मंत्र बोलने के बाद आगे बढ़ाइये। तर्जनी अंगुली माला से स्पर्श नहीं होनी चाहिए। जप के समय परस्पर बातें नहीं करनी चाहिए।

"सुमेरू" एक माला के पूर्ण होने का "संकेतक" है। सुमेरू पर जप नहीं होता है। माला घुमाते समय बायें से दाहिनी ओर घुमाएँ।

माला हाथ से गिरा देने पर जप के समय दोष होता है, अतः इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

जप के समय मन प्रसन्न रखें, पूर्ण निष्ठा भाव रखें। स्वयं को जप के योग्य व समर्थ समझें। ईष्ट के प्रति श्रद्धा रखें।

उपासना आरम्भ से पूर्व उपासकों के लिए अति आवश्यक निर्देश

उपासकों! उपासना अथवा मंत्रानुष्ठान हेतु नियमों का पालन करना तो अपरिहार्य है ही, कुछ अन्य नियम भी हैं, जिनका पालन करना आवश्यक होता है। अनेक विद्वानों, मर्मज्ञों ने परीक्षण करके इनकी व्यवहारिक उपयोगिता और प्रभाव को स्वीकार किया है। उपासना विधान के अन्तगर्त उपासकों को इस प्रकार के निर्देश दिए गये हैं–

1. स्नान करके, शुद्ध स्वच्छ वस्त्र पहनकर ही उपासना स्थल में जाना चाहिए।

2. वस्त्र दो हों और सिले हुए नहीं हों।

3. साधना या उपासना स्थल पूर्णतः शान्त, सुरक्षित और एकान्त हो।

4. दिन भर के पहने हुए वस्त्र, उपासना के समय नहीं पहनने चाहिए।

5. आसन पर एक बार बैठ जाने पर बार–बार उठना उचित नहीं होता।

6. बैठने में सदैव शरीर सीधा रहे, मेरूदण्ड को झुकना नहीं चाहिए।

7. उपासना या अनुष्ठान में पूजन, जप एवं आहुतियों की पूर्ति आवश्यक होनी चाहिए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

8. उपासना या अनुष्ठान आरम्भ करते समय शुभ दिन, तिथि, मुहूर्त आदि का विचार अवश्य कर लेना चाहिए।

9. उपासना काल में नित्य देवता का आवाहन विसर्जन करते रहना आवश्यक होता है।

10. धुप–दीप, अक्षत, चन्दन, गंगाजल, बिल्वपत्र, पुष्प और नैवेद्य का नियमानुसार प्रयोग अवश्य किया जाये।

11. उपासना या अनुष्ठान हवन, तर्पण और मार्जन क्रिया भी बहुत आवश्यक है। इसके पश्चात् दान, ब्राह्मणों एवं कुमारियों की पूजन एवं भोजन की भी वरीयता दी गई है।

12. पूरी साधना काल में "ब्रह्मचर्य व्रत" का पालन करना चाहिए।

13. श्रृंगार, सज्जा, स्वादेच्छा, पर स्पर्श न करके अपना काम स्वयं करें। कार्य और विचार दोनों ही पवित्र एवं स्वच्छ हों।

14. उपासना या अनुष्ठान आरम्भ करते समय जैसा "संकल्प" किया जाये, उसका अन्त तक पालन करना चाहिए।

15. अनुष्ठान से बचे समय में धार्मिक विषयों का चिन्तन, धर्म चर्चा, आध्यात्मिक विचार वाले लोगों का सामीप्य और ईष्ट देवता का स्मरण कल्याणकारी होता है।

16. मंत्र का उच्चारण पूर्णतः शुद्ध हो।

उपासना में निषेध

1.उपासना काल में प्रतिकूल भोजन सर्वथा व्याज्य है। गरिष्ठ, तामसिक भोजन से उपासक की मनोशांती और शुचिता नष्ट होती है।

2. कुत्संग, अश्लील दृश्य, अनैतिक विषयों की चर्चा, काम चिन्तन, श्रृंगार उत्तेजक वस्तु दृश्य अथवा वार्तालाप सर्वथा वर्जित है।

3. मादक द्रव्यों का निषेध। बहुतेरे साधु–फकीर गांजे–चरस का दम लगाकर कहते हैं कि –"इससे ध्यान लगता है"– यह सर्वथा असंगत है। उपासक के लिए किसी भी प्रकार के मादक पदार्थ की स्वीकृति नहीं दी गई है। साधना काल में समस्त प्रकार विलासित और मादक पदार्थ का निषेध कहा गया है।

4. मांस–मदिरा, लहसुन, प्याज का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

5. बिना स्नान किए, अपवित्र अवस्था में उपासना करना वर्जित है।

6. नग्न होकर उपासना नहीं करनी चाहिए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

7. शिखा खोलकर उपासना करना वर्जित है।

8. बिना आसन बिछाए, नंगी भूमि पर जप व उपासना करना निषेध है।

9. जप के समय वार्तालाप नहीं किया जाता।

10. भीड़–भाड़ वाले जनसंख्या स्थान में उपासना या जप करना वर्जित है।

11. माला जपते समय हाथ और सिर खुला रहना चाहिए।

12. राह चलते या राह में कहीं बैठकर उपासना या जप नहीं किया जाता।

13. भोजन करते समय अथवा शयन काल में जप करना वर्जित है।

14. आसन विरूद्ध किसी भी स्थिति में बैठकर, लेटकर, या पैर पसार कर उपासना नहीं की जाती।

15. छींक, खंखार, खांसी, थूकना जैसी व्याधि के समय जप न करें।

पूजन हेतु फूल तोड़ने की विधि और मंत्र

उपासकों! प्रातः काल स्नान करने के बाद तुलसी, बिल्वपत्र और फूल तोड़ने चाहिए। स्नान के बाद में जब फूल तोड़ने जाएं तो हाथ– पैर धोकर आचरण कर लें, तत्पश्चात् पूर्व की ओर मुख पर हाथ जोड़कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें–

मा नु शोकं कुरुष्व त्वं स्थान त्यागं च मा कुरु।
देव पुजनार्थाय प्राथयामि वनस्पते।।

पहला फूल तोड़ते समय–ऊँ वरुणाय नमः
दूसरा फूल तोड़ते समय– ऊँ ब्योमाय नमः
तीसरा फूल तोड़ते समय– ऊँ पृथिब्यै नमः बोलें,
फिर आवश्यकतानुसार बिना मंत्र के ही आगे फूल तोड़ लें।

(तत्व सागर संहिता से)

बिल्वपत्र तोड़ने का मंत्र, विधि तथा बिल्वपत्र तोड़ने का निषिद्ध काल

उपासकों! स्नान से पवित्र होकर निम्नलिखित मंत्रोच्चारण करते हुए,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्रमशः पांच बार मंत्र पढ़कर तोंड़ें–

अमृतोद्भव श्री वृक्ष महादेव प्रिय सदा।
गृहणामि तव पत्राणि लक्ष्मी पूजनार्थ मादरात।।

ध्यान रहे–

चतुर्थी, अष्टमी, नवमीं, चतुर्दशी और अमावस्या तिथियों को, संक्रान्ति के दिन और सोमवार को बिल्वपत्र शंकर जी, विष्णु एवं लक्ष्मी जी को बहुत प्रिय हैं, अतः निषद्ध समय से पहले दिन का रखा बिल्वपत्र चढ़ाना चाहिए। शास्त्रों ने तो यहां तक कहा है कि यदि नूतन बिल्वपत्र न मिल सके तो चढ़ाए हुए बिल्वपत्र को ही धोकर बार–बार चढ़ाते रहें।

(लिंग पुराण से)

बासी जल, फूल का निषेध

उपासकों। जो फूल, पत्ते और जल बासी हो गये हों, उन्हें देवी–देवताओं पर न चढ़ायें किन्तु तुलसी दल और गंगाजल बासी नहीं होते। तीर्थों का जल भी बासी नहीं होता। वस्त्र, यज्ञोपवीत और आभूषण में निर्मालय का दोष नहीं आता। माली के घरों में रखे हुए फूलों में बासी दोष नहीं आता। मणि, रत्न, सुवर्ण, वस्त्र आदि से बनाए गए फूलों में बासी दोष नहीं आता। मणि, रत्न, सुवर्ण, वस्त्र आदि से बनाए गए फूल बासी नहीं होते। इन्हें प्रोक्षण कर चढ़ाना चाहिए।

मानस फूल चढ़ाने का विधान

उपासकों! किसी–किसी उपासक को नित्य ही भगवती व भगवान को चढ़ाने हेतु पुष्प उपलब्ध नहीं होते। ऐसे उपासकों के लिए "देवर्षि नारद जी" ने मानस फूल (मन के द्वारा रचे हुए पुष्प) चढ़ाने का विधान बताये हैं। जो इस प्रकार हैं–

"तस्मान्नमान समेवातः शस्तं पुष्पं मनीषिणाम्।।"

(तत्व सागर संहिता)

देवर्षि नारद जी ने तत्व सागर संहिता के अन्तगर्त देवराज इन्द्र को उपदेश दिए हैं कि "हजारों–करोड़ों ब्राह्म फूलों को चढ़ाकर जो फल प्राप्त किया जाता है, वह केवल एक 'मानस फूल' चढ़ाने से प्राप्त हो जाता है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्राह्म पुंष्पं सहस्त्राणां सहस्त्रा युत कोटिभिः।
पूजते यत्फलं पुसां तत्फलं त्रिदशाधिप।।
मानसे नैकेन पुष्पेण विद्वाना नोत्य संशयत।।

(तत्व सागर संहिता वीर. पूजा. पृ. 57)

अर्थात्–"तत्व सागर संहिता" में कहा है कि पुष्पों में मानस पुष्प ही सबसे उत्तम है। मानस पुष्प में बासी आदि का दोष नहीं होता। इसलिए पूजा करते समय–"मन से गढ़कर" फूल चढ़ानें का अद्भूत आनन्द अवश्य प्राप्त करना चाहिए।

सामान्यतया निषिद्ध फूल

यहां उन निषेधों को दिया जा रहा है, जो सामान्यतया सभी देवी–देवताओं के पूजन में सब फूलों पर लागू होते हैं–

"भगवान या भगवती पर चढ़ाया हुआ फूल "निर्मालय" कहलाता है, सूंघा हुआ या अंग में लगाया हुआ फूल उसी कोटि में आता है। इन्हें न चढ़ायें। भौरें के सूंघने से फूल दूषित नहीं होता।

"जो फूल अपवित्र बर्तन में रख दिया गया हो, अपवित्र स्थान में उत्पन्न हो, आग से झुलस गया हो, कीड़ों से विद्ध हो, सुन्दर न हो, जिसकी पंखुड़ियों बिखर गई हों, जो पृथ्वी पर गिर पड़ा हो, जो पूर्णतः खिला न हो, जिससे खट्टी गंध या सड़ापन आती हो, निर्गन्ध हो, या-उग्र गंध वाला हो–ऐसे पुष्पों को नहीं चढ़ाना चाहिए।"

जो फूल बायें हाथ, पहनने वाले अधोवस्त्र, आक या रेड़ के पत्ते में रखकर लाए गए हों वे फूल व्याज्य हैं। कलियों को चढ़ाना मना है, किन्तु यह निषेध कमल पर लागू नहीं है।

फूल को जल में डुबोकर धोना मना है। केवल जल से इसका प्रोक्षण कर देना चाहिए।

पुष्पादि चढाने की विधि

"फूल और पत्ते जैसे उगते हैं वैसे ही इन्हें चढ़ाना चाहिए। उत्पन्न होते समय इनका मुख ऊपर की ओर रखना चाहिए।"

दूर्वा एवं तुलसी दल को अपनी ओर बिल्वपत्र नीचे मुख कर चढ़ाना चाहिए। इनसे भिन्न पत्तों को ऊपर मुख कर या नीचे मुख कर दोनों ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकार से चढ़ाया जा सकता है। दाहिने हाथ के करतल को उतान कर मध्यमा, अनामिका और अंगूठे से फूल चढ़ाना चाहिए।

("सार दीपिका, आयारेन्दु, चिन्तामणि और कालिका पुराण से आधारित प्रमाण।")

भगवान पर चढ़ाया हुआ फूल उतारने का विधि

चढ़े फूल को अंगुठे और तर्जनी की सहायता से उतारें।

(कालिक पुराण)

कुमारी कन्याओं की वैदिक महत्ता और निरूपम

एक वर्ष की उम्र वाली बालिका "सन्ध्या" कहलाती है, दो वर्ष वाली "सरस्वती" तीन वर्ष वाली "त्रिदधा मूर्ति", चार वर्ष वाली "कालिका" पांच वर्ष की होने पर "सुभगा" छः वर्ष की "उमा" सात वर्ष का "मालिनी" आठ वर्ष की "कुब्जा" नौ वर्ष की "काल संदर्भा" दसवें में अपराजिता", ग्याहरवें में "रूद्राणी" बारहवें में। "भैरवी" तेरहवें वर्ष में "महालक्ष्मी" चौदह पूर्ण होने पर "पीठ नायिका" पन्द्रहवें में "क्षेत्रज्ञा" और सोलहवें में "अम्बिका" मानी जाती है।

इस प्रकार जब तक "ऋतु" का उद्‌गम न हो, तभी तक क्रमशः संग्रह करके प्रतिपदा आदि से लेकर पूर्णिमा तक वृद्धि भेद से "कुमारी पूजन" करना चाहिए।

(रुद्रयामल उत्तर खण्ड–छठा पटल)

कुमारी पूजन का फल

"जो "कुमारी कन्याओं" को अन्न, तथा जल अर्पण करता है उसका वह अन्न "मेरू" के समान जल से समुद्र के सदृश्य अक्षुण्ण तथा अनन्त होता है। अर्पण किए हुए वस्त्रों द्वारा वह करोड़ों–अरबों खरबों वर्षों तक "देवलोक" में पूजित होता है। जो कुमारी के लिए पूजा के उपकरणों को देता है। उसके ऊपर देवगण प्रसन्न होकर उसी के पुत्र से प्रकट होते हैं"

(कुब्जिका तंत्र)

कुमारी पूजा का फल अवर्णनीय है, इसलिए सभी जाति की बालिकाओं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का पूजन करना चाहिए। कुमारी पूजन में जाति भेद का विचार करना उचित नहीं है। जाति भेद करने से मनुष्य नरक से छुटकारा नहीं पाता। संशय में पड़ा हुआ मन्त्र साधक (उपासक) अवश्य पातकी होता है। इसिलिए भक्त को चाहिए कि देवी बुद्धी से कुमारी की पूजा करे, क्योंकि कुमारी सर्वविद्या स्वरूपी है–इसमें कोई संदेह नहीं है। जहाँ कुमारी की पूजा हो वह पृथ्वी पर परम पावन देश है, उसके चरणों और पांच कोस तक का प्रान्त अत्यंत पवित्र हो जाता है।"

(योगिनी तंत्र, पूर्व खण्ड, सत्रहवां पटल)

"सभी बड़े–बड़े पर्वों पर अधिकतर पुण्य मुहूर्त में और महा नवमी तिथि करके मन्द भाग्य पुरुष भी विजय और मंगल प्राप्त करता है। पूजन तथा भोजन आदि से ही कुमारी एक दो तीन "बीजमंत्रों" की सिद्धि का फल देने वाली है– इसमें कोई सन्देह नहीं है। उन्हें फूल, फल अनुलेप और बाल प्रिय नैवेद्य आदि देकर उनकी सेवा भाव से ही प्रवृत्त हो जाये। कन्या ही सबसे बड़ी समृद्धि और सबसे उत्तम तपस्या है। वीर पुरुष कुमारी पूजा से कोटि गुणा फल प्राप्त करता है"

"यदि कुलीन पंडित कन्या को पुष्पांजलि अपर्ण करे तो वह पुरूष करोड़ों सवुर्णमय मेरू के समान हो जाता है उक्त मेरू के दान का जो पुण्य है उसे वह उसी क्षण प्राप्त कर लेता है। जिनसे कुमारी को भोजन काराया उसने मानों "त्रिभुवम" को तृप्त कर दिया।"

(यागल)

"सम्पूर्ण कर्मों का फल प्राप्त करने के लिए कुमारी पूजन करें।"

(काली तंत्र ग्यारहवां पटल)

"कुमारी पूजा में मनुष्य सम्मान लक्ष्मी धन, पृथ्वी, श्री सरस्वती और महान तेज प्राप्त कर लेता है। उसके ऊपर दशों महाविद्यायें और देवगण प्रसन्न होते हैं–इसमें कोई संदेह नहीं। कुमारी पूजन मात्र से पुरुष "त्रिभुवन" को वश में कर सकता है और उसे परम शान्ति मिलती है। इस प्रकार कुमारी पूजन समस्त पुण्यफलों को देने वाला है।"

(रूद्रायमल उत्तर खण्ड सातवां पटल)

"महान भय, दुर्भिक्ष आदि उत्पात, दुस्वप्न, दुर्मृत्यु तथा अन्य भी जो मनुष्यों के लिए दुखदायी समय है वे सभी कुमारी पूजन से असम्भव हो जाते हैं। प्रतिदिन विधि पूर्वक कुमारी पूजन करना चाहिए। पूजित हुई कुमारियों विघ्न भय और अत्यंत उत्कट शत्रुओं को भी नष्ट कर डालती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं। पूजा करने वाले के ग्रह रोग, भूत, बेताल और सम्पादि से होने वाले भय मिट जाते हैं।"

(बृहन्नील तंत्र)

"कुमारी" साक्षात् योगिनी और श्रेष्ठ देवता है। विधि युक्त कुमारी को अवश्य भोजन कराना चाहिए। कुमारी को पाद्य, अर्घ्य धूप, कुंकुम और शुभ चन्दन आदि अपर्ण करके भक्ति भाव से उसकी पूजा करे। जो कन्या की पूजा करता है उसके ऊपर असुर, दुष्ट नाग, दुष्ट ग्रह, भूत, बेताल, गन्धर्व, डाकिनी, यक्ष, राक्षस तथा अन्य सभी देवता भूः भुवः स्वः, भैरव गण, पृथ्वी आदि सब भूत चराचर ब्रह्मांड, ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र ईश्वर और सदाशिव– ये सभी प्रसन्न होते हैं।

(रूद्रयामल तन्त्र)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री लक्ष्मी पूजन खण्ड

भगवती लक्ष्मी नित्य पूजन विधि

(हिन्दी भाषी उपासकों के लिए)

उपासकों! निष्काम भाव से नित्य ही "श्री लक्ष्मी उपासना" करने वाले उपासकों को चाहिए कि वे ब्रह्म मुहूर्त्त में निद्रा को त्यागे। शौचादि से निवृत्त हो स्नानादि से पवित्र हो जाये। तत्पश्चात् अपने कमरे में पवित्र स्थान पर पूर्व दिशा में (पूरब दिशा) आम लकड़ी से बना लाल रंगा का सिंहासन स्थापित करें। सिंहासन के ऊपर लाल रंग के कपड़े का आसन विछावें। सिंहासन पर माता लक्ष्मी की प्रतिमा या तस्वीर की स्थापना करें। उपासना आरम्भ करने से पूर्व लाल या पीले रंग के बिना सिले हुए वस्त्र धारण का लें। इसके पश्चात् निम्नलिखित पूजन सामग्री अपने पास एकत्र. कर लें–

नित्य लक्ष्मी पूजन सामग्री

आम की लकड़ी या लाल चन्दन की लकड़ी से बना हुआ सिन्दूरी रंग का सिंहासन, लक्ष्मी जी की प्रतिमा या तस्वीर, सिंहासन पर बिछाने हेतु लाल वस्त्र, उपासक के लिए नवीन लाल या पीले रंग का बिना सिले हुए वस्त्र (धोती–अंगोछा अथवा चादर), उपासना में बैठने हेतु लाल रंग के कम्बल का आसन या कुशा का आसन, दीपक, रूई, माचिस, अगरबत्ती, देशी (शुद्ध) घी, सिन्दूर, लाल चन्दन, गंगा–जल, पान, सुपारी, अक्षत, नैवेद्य, (मिठाई और विभिन्न प्रकार के फूल) बिल्वपत्र, पुष्प, कपूर, लाल तौलिया या रूमाल इत्यादि।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नित्य श्री लक्ष्मी पूजन आरम्भ

उपासकों! माता लक्ष्मी तस्वीर के समक्ष धूप और दीप जलावें। कम्बल के आसन पर बैठ जाएँ। तत्पश्चात् दाहिने हाथ की अंगुली में जल लेकर निम्नलिखित मुत्र पढ़ें–

शरीर पवित्र करने का मंत्र

ऊँ अपवित्रः पवित्रो का सर्वा वस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत पुण्डरी काक्षं स बाह्यभ्यंतरः शुचिः।
ऊँ पुण्डरी काक्ष पुनातु।।

हिन्दी में अनुवाद–"कोई पवित्र हो, अपवित्र हो, अथवा किसी भी अवस्था में क्यों न हो, जो "पुण्डरी काक्ष" (भगवान विष्णु) का स्मरण करता है, वह बाहर और भीतर से भी परम पवित्र हो जाता है।"

नोट–नीचे लिखित मंत्र पढ़कर लक्ष्मी जी को स्नान हेतु गंगाजल तांबे को अरघी में भरकर चढ़ावें।

इदम स्नानार्थ आचमन पाद्य जलं समर्पयामि
भगवती श्री लक्ष्मी नमः

नोट–अब लक्ष्मी जी को वस्त्र चढ़ावें–

"इदम् वस्त्रम् समर्पयामि भगवती श्री लक्ष्मी नमः।"

नोट–चन्दन चढ़ावें–

इदम् चन्दनम् लेपनम् भगवती लक्ष्मी सहित विष्णु यहा गच्छ इहं तिष्ठ्।

नोट– अब लक्ष्मी जी को बिल्वपत्र चढ़ावें–

इदम् विल्वपत्राणि समर्पयामि भगवती श्री लक्ष्मी नमः।

नोट– अब लक्ष्मी जी को पुष्प चढ़ावें–

इदम पुष्पम् समर्पयामि भगवती श्री लक्ष्मी नमः।

नोट– अब लक्ष्मी जी को सिंहासन पर निम्न मंत्र पढ़ते हुए फल व मिठाई चढ़ावें–

इदम नैवेद्यं समर्पयामि भगवती श्री लक्ष्मी नमः।

नोट–अब लक्ष्मी जी को ताम्बूल (पान का बीड़ा) भेंट करें–

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इदम् ताम्बूलं पुगीफलं समर्पयामि भगवती श्री लक्ष्मी नमः।

अब हाथ जोड़कर निम्न मंत्र पढ़ें–

ऐतानि गंध पुष्पं धूप दीप ताम्बूल नैवेधानि समर्पयामि भगवती लक्ष्मी यहा गच्छ यह तिष्ठ।।

नोट–उपासकों! अब "लक्ष्मी चालिसा" का पाठ करें।

श्री लक्ष्मी चालिसा

दोहा– मातु लक्ष्मी करि कृपा, करो हृदय में वास।
मनोकामना सिद्ध करि, पुरवहु मेरी आस।।

सोरठा– यही मोर अरदास, हाथ जोड़ विनती करूँ।
सबविधि करौ सुवास, जय जननि जगदंबिका।।

सिन्धु सुता मैं सुमिरौं तोही । ज्ञान बुद्धि विद्या दो मोही।।
तुम समान नहिं कोई उपकारी । सब विधि पुरवहु आस हमारी।।
जय जय जगत् जननि जगदम्बा। सबकी तुम ही हो अविलम्बा।।
तुम ही हो सब घट घट वासी । विनती यही हमारी खासी।।
जगजननी जय सिन्धु कुमारी । दीनन की तुम हो हितकारी।।
विनवौं नित्य तुमहिं महारानी । कृपा करौ जग जननी भवानी।।
केहि विधि स्तुति करौं तिहारी । सुधि लीजै अपराध बिसारी।।
कृपा दृष्टि चितवो मम ओरी । जगजननी विनती सुन मोरी।।
ज्ञान बुद्धि जय सुख की दाता । संकट हरो हमारी माता।।
क्षीरसिन्धु जब विष्णु मथायों । चौदह रत्न सिन्धु में पायो।।
चौदह रत्न में तुम सुखरासी । सेवा कियो प्रभु बनि दासी।।
जब जब जन्म जहां प्रभु लीन्हा । रूप बदल तहं सेवा कीन्हा।।
स्वयं विष्णु जब नर तनु धारा । लीन्हेउ अबधपुरी अवतारा।।
तब तुम प्रगट जनकपुरी माहीं । सेवा कियो हृदय पुलकाहीं।।
अपनायौं तोहि अन्तर्यामी । विश्व विदित त्रिभुवन की स्वामी।।
तुम सम प्रबल शक्ति नहिं आनी । कहं लौ महिमा कहौं बखानी।।
मन क्रम वचन करै सेवकाई । मन इच्छित वांछित फल पाई।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तजि छल कपट और चतुराई। पूजहिं विविध भांति मन लाई।।
और हाल मैं कहौं बुझाई। जो यह पाठ करै मन लाई।।
ताको कोई कष्ट न होई। मन इच्छित पावै फल सोई।।
त्राहि–त्राहि जय दुख निवारणी। त्रिविध ताप भव बंधन हारिणी।।
जो यह चालीसा पढ़ै–पढ़ावै। ध्यान लगाकर सुनै–सुनावै।।
ताकौ कोई न रोग सतावै। पुत्र आदि धन सम्पत्ति पावै।।
पुत्रहीन अरु संपत्ति हीना। अंध बधिर कोढ़ी अति दीना।।
विप्र बोलाय के पाठ करावै। शंका दिल में कभी न लावै।।
पाठ करावै दिन चालीसा। ता पर कृपा करैं गौरीसा।।
सुख सम्पत्ति बहुत सी पावै। कमी नहीं काहू की आवै।।
प्रतिदिन पाठ करो मन माही। उन सम कोई जग में कहुं नाहीं।।
बहुविधि क्या मैं करौ बड़ाई। लेय परीक्षा ध्यान लगाई।।
करि विश्वास करै व्रत नेमा। होय सिद्ध उपजै उर प्रेमा।।
जय–जय–जय लक्ष्मी भवानी। सबमें व्यापित हो गुण खानी।।
तुम्हरो तेज प्रबल जग माहीं। तुम सम कोऊ दयालु कहुं नाहिं।।
मोहि अनाथ की सुधि अब लीजै। संकट काटि भक्ति मोहि दीजै।।
भूल चूक करि क्षमा हमारी। दर्शन दीजै दशा निहारी।।
बिन दर्शन व्याकुल अधिकारी। तुमहि अक्षत दुख सहते भारी।।
नहिं मोहि ज्ञान बुद्धि है तन में। सब जानत हो अपने मन में।।
रूप चतुर्भुज करके धारण। कष्ट मोर अब करहु निवारण।।
केहि प्रकार मैं करों बड़ाई। ज्ञान मोहि नहिं अधिकाई।।

दोहा– त्राहि–त्राहि दुख हहरिणी, हरो बेगि सब त्रास।
जयति जयति जय लक्ष्मी, करो शत्रु को नाश।।
रामदास धरि ध्यान नित्, विनय करत कर जोर।
मातु लक्ष्मी दास पर, करहु दया की कोर।।

नोट–उपासकों! लक्ष्मी चालीसा का पाठ समाप्त होने के बाद कांशे की थाली में कपूर की बाती जलाकर माता लक्ष्मी की आरती उतारें। कपूर के नीचे पान का पत्ता रखें। माता को आरती दिखावें और पुस्तक के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्तिम पृष्ठ पर लिखी हुई आरती स्तुति गावें।

आरती के पश्चात् माता को प्रणाम कर, चाय–नाश्ता ग्रहण कर अपने कार्य में लग जावें। शाम को भी लक्ष्मी जी के सिंहासन पर धूप–दीप जगावें। उपरोक्त पूजन व चालीसा पाठ नित्य करते रहने से माता लक्ष्मी की अपार कृपा आप पर हो जायेगी।

(इति श्री नित्य लक्ष्मी पूजन सम्पूर्णम्)

दिवाली की रात्री में माता लक्ष्मी का बृहद वैदिक षोड़शोपचार पूजन

माता महालक्ष्मी के श्रद्धालू उपासकों! पूजन आरम्भ से पूर्व निम्नलिखत पूजन सामग्री अपने पास पूजन स्थल पर एकत्रित कर लें।

श्री लक्ष्मी पूजन सामग्री

आम की लकड़ी से बना लाल रंग से रंगा सिंहासन, सिंहासन पर बिछाने हेतु लाल वस्त्र, श्री लक्ष्मी, सरस्वती, गणेश प्रतिमा हेतु वस्त्र, श्रृंगार की वस्तुएँ पुरोहित के लिए धोती–1 जोड़ा, गमछा–1, यजमान हेतु नवीन वस्त्र जनेऊ–5, लाल अबीर, गेंहूँ का आटा, पान–11, सुपारी–11, काले तिल, सिन्दूर, लाल चन्दन, गाय का घी , अगरबत्ती, धूप, रूई, कपूर, पंचरत्न, सर्वोसधि, मिट्टी का घड़ा–1, पानी वाला नारियल–1, सूखा नारियल हवन के लिए, केले, लड्डू, फूल माला, पुष्प, बिल्वपत्र, आम, का पल्लव, केले का पत्ता, गंगाजल, अरघी, पंचपात्र, आसन हेतु दो लाल कम्बल या कुशा का आसन, दीपक–11, आम की लकड़ी, माचिस, दुर्वादल, गाय का गोबर, शहद, गाय का दही, गाय का दूध, लक्ष्मी + सरस्वती +श्री गणेश की प्रतिमा या तस्वीर, आरती स्टेन्ड, जौ, पूजन की पुस्तकें, थाली, कटोरी, शंख, केशर, पंचमेवा, मोली, रोली चन्दन, भेंट में देने हेतु द्रव्य आदि।

पूजन प्रारम्भ

माता महालक्ष्मी के श्रद्धालु भक्तों! माता की षोड़षोपचार पूजन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिवाली की रात्री 10 बजे से आरम्भ करें, अथवा किसी भी मंगलवार के दिन में पूजन कर सकते हैं।

उपरोक्त समय में प्रातःकाल (दिवाली में रात 10 बजे) स्नानादि से पवित्र हो जोयें। फिर पूजा स्थल पर आम की लकड़ी से बना सिंहासन स्थापित करें, समस्त पूजन सामग्री अपने पास इकठ्ठे कर लें। सिंहासन पर लाल वस्त्र बिछाकर माता लक्ष्मी की प्रतिमा या तस्वीर स्थापित करें। तत्पश्चात् पूजन स्थल पर गंगाजल छिड़कें, धूप जगावें, फिर पवित्र तन–मन से गाय घी और रूई की बाती का चौमुखी दीप प्रज्जवलित करें। दीपक जलाकर माता जी के सिंहासन के सामने–पास में दाहिनीं ओर अक्षत पुंज पर (चावल छिड़क कर) प्रज्जयलित दीपक रखें। यह पूजन योग्य वैदिक पंडित द्वारा ही सम्पन्न करावें तो अति लाभकारी सिद्ध होगा, क्योंकि योग्य पंडित के रहते पूजन में अशुद्धि नहीं आती। सम्भव न हो तो स्वयं ही शुद्ध विधि से कम्बल के आसन पर पूरब मुख सिंहासन के सामने बैठकर पूजन आरम्भ करें।

पूजन आरम्भ से पहले सिर पर लाल रूमाल या लाल तौलिया अवश्य रख लें, स्वयं भी लाल रंग का ही वस्त्र धारण करें। सर्वप्रथम दाहिने हाथ की अंगुलीं में गंगाजल लेकर निम्न मंत्र पढ़ें और मंत्र समाप्ति के बाद अंजुली का जल शरीर पर छिड़क लें।

शरीर पवित्र करने का मंत्र

ऊँ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत पुण्डरी काक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचि।।
ऊँ पुण्डरी काक्ष पुनातु।।

हिन्दी अनुवाद–कोई पवित्र हो, अपवित्र हो अथवा किसी भी अवस्था में क्यों न हो, जो "पुण्डरीकाक्ष" का स्मरण करता है, वह बाहर और भीतर से भी परम पवित्र हो जाता है, अतः हे "ऊँ रूप पुण्डरी काक्ष" हमें पवित्र करें।

नोट–अब दीपक की पूजा करें–

दीप पूजन मंत्र

"ऊँ ज्योतिषे नमः"

यह मंत्र मुख से बोलकर–जल, अक्षत, पुष्प चन्दन, बिल्वपत्र, नैवैद्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीपक के पास चढ़ावें। फिर उस दीप में माता लक्ष्मी रूप की भावना करते हुए हाथ जोड़कर यह श्लोक बोलें–

"भो दीप देवी रूपस्तवं कर्म साक्षी ह्वविघ्न कृत।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरों भव।।

हिन्दी में अनुवाद–"हे दीप! आप माता काली के रूप हैं, कर्म के साक्षी तथा विघ्न के निवारक हैं, जब तक पूजन कर्म पूरा न हो जाय, तब तक आप सुस्थिर भाव से सन्निकट रहें।"

नोट–इसके पश्चात् निम्नि मंत्रों को पढ़कर तीन बार आचमन करें–

आचमन मंत्र

ऊँ केशवाय नमः। ऊँ नारायण नमः। ऊँ माधवाय नमः।

तत्पश्चात्–

ऊँ हृषिकेशवाय नमः–मत्र पढ़कर हाथ धो लें। फिर दाहिने हाथ के अंगुठे से चौथी अंगुली में कुशा से बना पवित्री (अंगूठी) या सोने अथवा ताँबे की अंगूठी निम्न मंत्र पढ़कर धारण करें।

पवित्र धारण मंत्र

ऊँ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुणा–म्याच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्यते पवित्रते पूतरस्य यत्कामः पुणे तच्छकेचम।।

नोट–अब पंडित यजमान के हाथ में रक्षा सूत्र मौली बांध दें। तत्पश्चात् हाथ जोड़कर विनियोग मंत्र पढ़ें–

विनियोग मंत्र

अस्य श्री दक्षिण कालिका मन्त्रस्य भैरव ऋषि, उष्णिक छन्द, दक्षिण कालिका देवता ह्री बीजं, हुं शक्ति, क्री कीलकं, मम अभिष्ट सिद्धियर्थे जपेविनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

ऊँ भैरव ऋषये नमः शिरसि, उष्णिक छन्दसे नमः मुखे, दक्षिण कालिका देवतायै नमः हृदि, ह्वीं बीजाय नमः गुह्ये, हुं शक्तये नमः पादयोः क्रीं कीलकाय नमः नाभौ, विनियोगाय नमः सर्वांगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करन्यास मंत्र

ऊँ क्रां अगुंष्ठाभ्यां नमः। ऊँ क्रीं तर्जनीभ्याः नमः। ऊँ क्रु मध्यमाभ्यां नमः। ऊँ क्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ऊँ क्रौं कनिष्काभ्यां नमः। ऊ क्रः करतल पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास मंत्र

ऊँ क्रां हृदयाय नमः। ऊँ क्रीं शिरसे स्वाहा।
ऊँ क्रूं शिखायै वष्ट्। ऊँ क्रैं कवचाय हुम्।
ऊँ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट। ऊँ क्रः अस्त्राय फट्।

नोट–हृदयादि न्यास करने के पश्चात् मस्तक पर निम्न मंत्र पढ़ते हुए चन्दन लगावें–

चन्दन लेपन मंत्र

ऊँ चन्दनस्य महत्वपुण्यं पवित्र पापनाशनम।
आप्रदं हरते नित्यं लक्ष्मी स्तिस्थि सर्वदा।।

नोट–अब निम्न मंत्र पढ़कर शिखा बांधे–

शिखा बन्धन मंत्र

ऊँ मानस्तोके तनये मानड्.ग आयुषि मानौ गोषु
मानोऊ अश्वेषु रीरिषः।
भानो वीरान रूद्र भामिनो वधीर्ह है विष्मन्तः–
सदमित्वा हवामहे।।

नोट–इसके पश्चात् भगवान गणेश का ध्यान करें। किसी भी पूजन में सर्वप्रथम शुभता के दाता श्री गणेश जी की पूजा की जाती है, तभी कोई उपासना में सफलता मिलती है।

श्री गणेश आराधना मंत्र

विश्वेश माधवं दुन्दि दण्डपाणि।
बंदे काशी गुह्या गंगा भवानी मणिक कीर्णकाम्।।
वक्रतुण्डं–महाकाव्य कोटि सूर्य सम प्रभ।
निर्विध्नं कुरू मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुमखश्यैक दन्तस्य कपिलो गज कर्णकः।
लम्बोदरस्य विकटो विघ्ननासो विनायकः।।
धूम्रकेतु र्गणाध्यक्ष तो भालचन्द्रां गजाननः।।
द्वादशै तानि नमामि च पठेच्छणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
शुक्लां वर धरं देवं शशि वर्ण चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनं घ्यायते सर्वविघ्नोप शान्तये।।
अभित्सितार्थ सिद्धयर्थं पूजितो य सुरासैरः।
सर्व विघ्नच्छेद तसमै गणधिपते नमः।।

हिन्दी अनुवाद–हे विश्वनाथ, माधव दुण्ढ़िराज गणेश, दण्डपाणि, भैरव, काशी, कुह्या, गंगा तथा भवानी कर्णिका का मैं वन्दना करता हूँ। टेढ़ी सूंड वाले गणपति देव! आप सर्वदा सदैव समस्त कार्यों में मेरे विघ्नों का निवारण करें।

सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्ण, लम्बोदर, विकट, विघ्ननाशक, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालू चन्द्र और गजावन–से विवाह, गृहप्रवेश, यात्रा, संग्राम तथा संकट के अवसर पर इन बारह नामों का पाठ और श्रवण करता है, उसके कार्यों में विघ्न उत्पन्न नहीं होता है।

शक्ल धारण करने वाले चन्द्रमा के समान और गौर, चार भुजाधारी और प्रसन्न मुख वाले गणपति देव मैं आपका ध्यान करता हूँ। हमारे सम्पूर्ण विघ्नों को भी शान्त करें।

देवताओं और असुरों ने भी अभीष्ट मनोरथ सिद्धि के लिए जिनकी पूजा की है, विघ्न बाधाओं को हरने वाले हैं, उन गणपति जी को नमस्कार है।

नोट–इसके पश्चात् पृथ्वी की पूजा करें। इस सन्दर्भ में दाहिने हाथ की अंजुली में ज़ल लेकर निम्न मंत्र पढें, मंत्र समाप्त होते ही जल पृथ्वी पर छोड़ दें।

पृथ्वी शुद्धि मंत्र

ऊँ अपर्षन्तु ये भूता ये भूता भूवि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्ता रश्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नोट–अब पूजन का "संकल्प" करें–

इस संदर्भ में दाहिने हाथ की अंजुली पर पान, सुपारी द्रव्य, गंगाजल, अक्षत, पुष्प, तिल लेकर निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करें। संकल्प मन्त्र के मध्य जहां–जहां भी "अमुक" शब्द का उच्चारण किया गया है, वहां कमशः मास, तिथि, नक्षत्र, करण, राशि, निवास स्थान आदि उच्चारण करें।

लक्ष्मी पूजन "संकल्प" मंत्र

ऊँ विष्णु र्विष्णु र्विष्णु श्री मद् भगवतो महा पुरुषस्य विष्णो राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्राह्मणोंह्विों द्वितीय प्रहरार्द्धे, श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत–मनवन्तरें अष्टांविशा तितमे युगे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भूर्लोक जम्बू द्वीपे भारत वर्षे भरत खण्डे आर्यावर्त देशे "अमुक" नगरे, अमुक ग्रामे अमुक स्थाने वा वोद्धावतारे अमुक नाम संवत्सरे श्री सूर्य अमुकायने अमुक तौ महामांगल्य प्रद मासोत्तमे मासे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक नक्षत्रे अमुक वासरे अमुक योगे अमुक करणे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक नक्षत्रे अमुक वासरे अमुक योगे अमुक करणे अमुक राशि स्थिते देव गुरौ शेषेषु ग्रहेषु च यथा अमुक शर्मा महात्मनः मानोकामना पूर्ति, धन, जन सुख सम्पदा प्रसन्नता परिवार सुख शान्ति हेतु, सफलता हेतु श्री महालक्ष्मी पूजन–कलश स्थापन–हवन–कर्म आरती कर्म अहम् करिष्येत।

नोट–हथेली की वस्तुएं माता जी के सिंहासन पर समर्पित कर दें। अब आप "स्वस्ति वाचन" के ग्यारह मंत्र पढ़ें। इस मंत्र का उच्चारण करते समय उपासक हाथ में चावल लेकर–दो चार दाने कर पूजा स्थल के सिंहासन पर छिड़कते जाएं, यह चावल तब तक छिड़कते रहें जब तक सम्पूर्ण (ग्यारह) मंत्र पढ़कर पूर्ण न कर लें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"स्वस्ति वाचनम" के पाँच मंत्र

(पहला मंत्र)

ऊँ स्वस्तिनः इन्द्रो पद्धश्रवा स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिन स्ताक्षर्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।

हिन्दी में अनुवाद–अत्यंत यशस्वी इन्द्र हमारा कल्याण करने वाले हों। जिनके संकट नाशक चक्र को कोई रोक नहीं सकता वह परमात्मा गरूड़ और बृहस्पति हमारा कल्याण करें।

(यं. वे. 18/31)

(दूसरा मन्त्र)

पचः पृथिव्यां पचः औषधिषु पयो दिव्यन्त।
रिक्षे पयोधाः पश्यवति प्रदिशाः सन्तु मह्यम।।

हिन्दी अनुवाद–हे अग्नि तुम पृथ्वी में रस को धारण करो, औषधि में रस की स्थापना करो, स्वर्ग में और अन्तिरिक्ष में भी रस को स्थापित करें। मेरे लिए दिशा–प्रदिशा सभी रस देने वाले हों।

(य.वे. 18/39)

(तीसरा मंत्र)

ऊँ द्यौः शान्ति रन्तरिक्षग्वं शान्तिः पृथ्वी शान्तिः रापः शान्तिः रोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिः विश्व देवाः शान्ति ब्रह्म शान्तिः स्र्वग्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिः शान्ति रेधि।। सुशान्ति–र्भवतु।।

हिन्दी अनुवाद–स्वर्ग, अंतरिक्ष और पृथ्वी शान्त रूप हो। जल औषधि, वनस्पति, विश्व देवता, ब्रह्म रूप ईश्वर, सब संसार शान्ति रूप हो, जो साक्षात शान्ति है, वह भी मेरे लिए शान्ति देने वाली हो।

(य. वे. 16/48)

(चौथा मन्त्र)

इमा रूद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्विराय प्रभरामहे मतीः।
यथा शमशादि द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन नातुरम।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी अनुवाद–पुत्रादि मनुष्यों और गादि मनुष्यों में जैसे कल्याण की प्राप्ति हो और इस ग्राम के मनुष्य उपद्रव से रहित हों, उसी प्रकार मैं अपनी श्रेष्ठ मतियों को जटाधारी रूद्र के निमित्त अर्पित करता हुँ।

(य. ब. 16/48)

(पांचवा मंत्र)

ऊँ गणानात्वा गणपति ग्वं हवामहे प्रिया नांत्वा प्रियपति ग्वंहवामहे निधिनांत्वा निधिपति ग्वं हवामहे वसो नम।

आहम जानि गर्भध मात्व मजासि गर्भधम्।।

हिन्दी अनुवाद–हे गणपति! तुम सब गणों के स्वामी हो, हम तुम्हें आहुत करते हैं। प्रियों के मध्य निवास करने वाले प्रियों के स्वामी हम तुम्हें आहुत करते हैं। हे निधियों के मध्य निवास करने वाले निधिपतें! हम तुम्हें आहुत करते हैं। तुम श्रेष्ठ निवास करने वाले रक्षक होओं। हम गर्मधारण जल को सब प्रकार से आकर्षित करते हैं, तुम गर्भधारण करने वाले को अभिमुख करते हो। तुम सब पदार्थों के रचयिता होते हुए सब प्रकार से अभिमुख होते हो।

(य. वे. 23/11)

नोट–उपासकों! इसके पश्चात् भगवान विष्णु का पूजन करें। किसी भी पूजन में गणपति पूजन के बाद भगवान विष्णु एवं पंच देवता की पूजा की जाती है। इस संदर्भ में केले के पत्ते पर सिंहासन के दाहिने तरफ पांच पान के पत्ते, पांच सुपारी और नैवेद्य रखें और उसी पर भगवान विष्णु एवं पंचदेवता की पूजा करें। इस क्रम में सर्वप्रथम दाहिनें हाथ की अंजुली में जल लेकर निम्न मंत्र पढ़ें, मंत्र समाप्ति के बाद जल पान पत्ते पर रख दें। इसी प्रकार क्रमशः अक्षत, तिल, चन्दन, बिल्वपत्र, पुष्प, तुलसी दल, नैवेद्य और पुनः जल से पूजन करें।

भगवान विष्णु एवं पंचदेवा का पूजन

गंगा जल से–

ऊँ गंगाजले स्नानियम् भगवते श्री विष्णवे नमः।

अक्षत से–

इदम् अक्षदम् समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिल से–

एते तिला समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

चन्दन से–

इदम् चन्दनम लेपनम सर्मयामि भगवते श्री विष्णवे नमः

बिल्वपत्र से–

इदम बिल्वपत्राणियम समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

पुष्प से–

इदम् पुष्पम् समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

नैवेद्य से–

ईदम नैवेद्यं समर्पयामि भगवते श्री विष्णवे नमः।

पुनः गंगाजल से–

एतानी गंध पुष्प धूप दीप ताम्बूल यथा भाग नैवेद्यानि भगवते श्री विष्णेव नमः।

नोट–उपरोक्त विधि और मंत्र से ही "पंचदेवता" का पूजन उसी स्थान पर करें। पूजन के अर्न्तगत जहां "विष्णवे नमः" शब्द कहा गया है उस स्थान पर "पंचदेवता नमः" शब्द का उच्चारण करें।

पंचदेवता पूजन समाप्त होने के पश्चात् माता जी के "कलश" की स्थापना करें।

माता लक्ष्मी कलश स्थापना विधि और कलश पूजन

नोट–सर्वप्रथम संतरंगे गुलाल से अष्टदल कमल पूजा स्थल पर माता काली सिंहासन के आगे बनावें। पश्चात् शुद्ध मिट्टी या जौ का थड़ा बनावें। उस थड़ा के मध्य सिन्दूर से पांच तिलक किया हुआ जल से भरा घड़ा रखें। पश्चात् कलश के पेंदे के पास हाथ रखकर यह मंत्र पढ़ें–

कलश भूमि स्पर्श मंत्र

ऊँ भूरसि भुमिरस्य दितिरसि विष्वछाया विश्वस्य भुवनश्य धत्रीं पृथ्वी दुखहिं पृथ्वी मां हिसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसके पश्चात् कलश के मुख को दाहिनी हथेली से बन्द करके निम्नलिखित मंत्र पढ़ें–

ऊँ वरूणस्योत्तम्भ वरूणस्य स्कम्भ सर्जनी स्थां वरूणस्य ऋतसदन्यसि वरूणस्य ऋतसदनमीस वरूणस्य ऋतसदनमासीद्।

नोट–अब कलश में सर्वोसधि डालें।

कलश सर्वोसधि समर्पण मंत्र

ऊँ या औषधि पूर्वाजाता देवेभ्य स्वियुगम्पुरा।
मनैनुवभ्रणामहग्वं शतन्धामणि सप्त च।।

नोट–कलश में दुर्वा डालें।

कलश दुर्वादल समर्पण मंत्र

ऊँ काण्डात–काण्डात प्ररोहन्ति पुरुषः परुषपरि।
एवानो दुर्वेप्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।

नोट–कलश में पुंगीफल (सुपारी) डालें–

कलश पुंगीफल समर्पण मन्त्र

ऊँ या फलिनीयां अफलां अपुष्पा यास्य पुविषणीः।
बृहस्पतिः प्रसूतास्तानो मुंचनत्वग्वं हसः।।

नोट–अब कलश में पंचरत्न डालें–

कलशपंचरत्न समर्पण मंत्र

ऊँ परिवाज पतिः कविरग्नि र्हव्यान्य क्रमी दधद्रत्नानि दाशुषे।

अब कलश में सुवर्ण या द्रव्य डालें–

कलश द्रव्य समर्पण मंत्र

ऊँ हिण्यगर्भः समवर्त्ततार्गे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथ्वीद्या मुतोमाङ्.ग कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

अब कलश में आम का पल्लव डालें–

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आम्र पल्लव समर्पण मंत्र

ऊँ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयंति कस्यद्।
किंजिद वासिनं कलशं दद्यात।।

नोट–अब कलश में पानी वाला नारियल रखें–

कलश श्री फल समप्रण मंत्र

ऊँ श्रीश्वते लक्ष्मीश्य पत्नया बहोरात्रों पार्श्वे नक्षत्राणि रूप मश्विनो व्याप्तम। इष्पान्नि षाणां मुम्म इषाण सर्व लोकम्प ईषाण।।

नोट–कलश में लाल वस्त्र एवं मौली लपटें।

कलश वस्त्र समर्पण मंत्र

ऊँ वस्त्रों पवित्रमसि शतधारं वसो पवित्र मसि सहस्त्र धारम।
देवचत्स्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधोरण सुत्वा काम धुक्षः।।

नोट–अब कलश के साथ गाय का गोबर स्पर्श करावें।

कलश में गाय का गोबर स्पर्श मंत्र

ऊँ मानस्तोषे तनयेमान आयुष्मान व्यर्दिवृविषः सदामित्वा हवामहे इति गोमयेन कलश स्पर्शयेत।

नोट–अब हाथ जोड़कर वरुण देव का आवाहन करें–

श्री वरूण देव आवाहन मंत्र

ऊँ तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्त यजमानो हविर्भिः।
अहेऊ मानो वरूणेह बोध्युषाग्वं आयुः प्रमोषि।।
ऊँ भुर्भूवः स्वः भो वरूण इहतिष्ठ। स्थापयामि पुजयामि।

नोट–इसके पश्चात् सम्पूर्ण तीर्थ एवं नदियों का कलश पर आवाहन करें–

सम्पूर्ण तीर्थों एवं नदियों का आवाहन

ऊँ सर्वे समुद्रा सरितसंतिर्थानी जलदाः नदाः आयान्तु देविः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूजार्थ दुरितक्षकारकाः। कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रूद्रः समाश्रितः।।

कलश प्राण प्रतिष्ठा मंत्र

नोट–निम्न मंत्र पढ़ते हुए कलश पर अक्षत छिड़कें–

ऊँ मनोजूतिर्जुषताभाज्यस्य बृहस्पति र्यज्ञामिवं तनोत्व रिष्टं यज्ञ सीममं दधातु। विश्व देवास इह महाकाली महाकाल सर्व देव सवेदेवि मदयन्तामे इह प्रतिष्ठ।

नोट–अब कलश पर वरुण देव, नवग्रह, ईष्टदेव लक्ष्मी, सरस्वती, नवदुर्गा, राम लक्ष्मण, सीता, हनुमान, राधा–कृष्ण, ग्राम देवता, कुदेवता, भगवान शिव, गौरी, आदि समस्त देवि–देवताओं की पूजा इस प्रकार करें जैसे पीछे भगवान विष्णु का पूजन किए हैं। तत्पश्चात् माता लक्ष्मी का आवाहन करें।

माता लक्ष्मी आवाहन मंत्र

आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्प निषूदिनि।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्त शंकर प्रिये।।

नोट–सिंहासन पर बिछे वस्त्र का स्पर्श करते हुए यह मंत्रोच्चारण करें–

महालक्ष्मी आसन समर्पण मंत्र

ऊँ विचित्र रत्न खचितं दिव्यास्तरण संयुक्तम्।
स्वर्ण सिंहासन चारू गृहीष्व महाकाली पूजितः।।

हिन्दी अनुवाद–हे मातेश्वरी लक्ष्मी माता! यह सुन्दर स्वर्णमय सिंहासन ग्रहण कीजिए, इसमें विचित्र रत्न जड़े गये हैं, तथा इस पर दिव्य बिस्तर बिछा हुआ है।

नोट–अब हाथ की अंजुली में जल लेकर निम्न मंत्र पढ़ें, मंत्र समाप्त होते ही जल सिंहासन पर छोड़ दें।

पाद्य जल सर्मप्रण मंत्र

ऊँ सर्वतीर्थ समूद भूत पाद्यं गन्धदिभिर्युतम।
अनिष्ट हर्त्ता गृहाणेदं भगवती भक्त वत्सला।।
ऊँ श्री दक्षिणा काली नमः। पाद्यं समर्पयामि।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी का अनुवाद–हे भक्त वत्सला माता लक्ष्मी! यह सारे तीर्थों के जल से तैयार किया गया तथा गंध (चन्दन) आदि से मिश्रित पाद्य जल, पैर पखारने हेतु ग्रहण करें।

नोट–पुनः अरधि से चन्दन मुक्त जल सिंहासन पर निम्न मंत्र उच्चारण कर समर्पित करें।

माता लक्ष्मी को अर्ध्य समर्पण मन्त्र

ऊँ श्री मातेश्वरी महालक्ष्मी नमस्तेस्तु ग्रहाण करुणाकारी।
अर्ध्य च फलं संयुक्तं गंधमाल्याक्षतै–युतम्।।

हिन्दी अनुवाद–हे माता लक्ष्मी! आपको नमस्कार है। आप गन्ध, पुष्प अक्षत और फल आदि रसों से युक्त यह अर्ध्य जल स्वीकार करें।

नोट–अब निम्न मंत्र उच्चारण करते हुए अरधी से तीन बार जल सिंहासन न छोड़े।

माता लक्ष्मी को आचमन कराने का मंत्र

मातेश्वरी लक्ष्मी नमस्तुभ्यं त्रिदेशेरेभिविन्ति।
गंगोदकेन देवेशि कुरूष्वा चमनं भगवतिः।।
श्री माता लक्ष्मी नमः। आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

हिन्दी अनुवाद–हे भगवती लक्ष्मी मां! आपको नमस्कार है। आप गंगाजल से आचमन करें।

नोट–इसके पश्चात् अरधी में दूध भरकर माता लक्ष्मी की प्रतिमा को स्नान करावें।

माता लक्ष्मी को दूध से स्नान कराने का मंत्र

भगवती कामधेनु समुदभूतं सर्वेषां जीवन परम्।
पावनं यज्ञाहेदेश्य पयः स्नानार्थ समर्पितम्।।

हिन्दी अनुवाद–हे भगवती! काम धेनु के थन से निकला, सबके लिए पवित्र, जीवन दायी तथा यज्ञ के हेतु यह दुग्ध आपके स्नान हेतु समर्पित है।

नोट–अब अरधी में दही लेकर माता काली को स्नान कराइये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दधि स्नान मन्त्र

शिवा भवानी पयस्तु समुदभुतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देवि स्नानार्थं प्रतिगृहयन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद–हे लक्ष्मी जी! यह दूध से निर्मित खट्टा–मीठा चन्द्र के समान उजला दही ले आया हूं। आप इससे स्नान कीजिये।

नोट–इसके पश्चात् अरघी में गाय का घी लेकर माता काली को स्नान कराइये।

माता लक्ष्मी को घृत से स्नान कराने का मंत्र

जो भगवती नवनीत समुत्पननं सर्वसंतोष कारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्ननानार्थं प्रतिगृहयन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद–हे विष्णु प्रिया! मक्खन से उत्पन्न तथा सबको संतुष्ट करने वाला यह गाय का घृत आपको अर्पित करता हुँ। आप इससे स्नान कीजिए।

नोट–अब अरघी में शहद भरकर माता लक्ष्मी को स्नान करावें।

माता लक्ष्मी को शहद से स्नान कराने का मंत्र

भो खप्पड़वाली मातुः पुष्प रेणु समुंद भूत सुस्वादु मधुरं मधु।
तेज पुष्टि करं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृहयन्ताम।।

हिन्दी अनुवाद–हे लक्ष्मी माता जी! पुष्प के पराग से उत्पन्न, तेज की पुष्टि करने वाला दिव्य स्वादिष्ट मधु आपके समक्ष प्रस्तुत है, इसे स्नान के लिए ग्रहण करें।

नोट–इसके पश्चात् शक्कर घोले रस से माता लक्ष्मी को स्नान करावें।

शर्करा रस से स्नान कराने का मंत्र

कमल वासिनी मातेश्वरी इक्षुसार समुद भुतं शर्करा पुष्टिवा शुभा।
मलाप हारिका दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृहयन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद–हे महालक्ष्मी माँ! ईख के सार तत्व से यह शर्करा रस निर्मित है, जो पुष्टि कारक, शुभ तथा मैल को दूर करने वाली है, यह दिव्य शर्करा रस आपकी सेवा में प्रस्तुत है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नोट–अब माता लक्ष्मी की प्रतिमा को पुनः गंगा जल से स्नान करावें।

शुद्धोदक स्नान मंत्र

गंगा च यमुनाचैव गोदावरी सरस्वती।
नर्वदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थ प्रतिकृहयन्ताम्।।

हिन्दी में अनुवाद–हे दयामयी अम्बे! यह शुद्ध जल के रूप में गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्वदा, सिन्धु और कावेरी यहां विद्यमान हैं। शुद्धोदक स्नान के लिए यह जल ग्रहण करें।

नोट–अब माता जी के ऊपर सुगन्धित इत्र छिड़कें।

सुवासित स्नान मंत्र

चम्पा काशोक सकुल मालती मोगरादिर्भिः।
वासित स्निग्धता हेतु तैल चारू प्रतिगृहयन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद–हे भक्त रक्षिका लक्ष्मी माता जी! चम्पा, अशोक, मौलसरी, मालती ओर मोगरा आदि से वासित तथा चिकनाहट के हेतु यह तेल और इत्र आप ग्रहण करें।

माता लक्ष्मी को वस्त्र समर्पण मंत्र

भो भक्तप्रिया मातुः शीतवातोष्ण संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम देव लंकारणं वस्त्रभतः शान्ति प्रयच्छ मे।।

हिन्दी अनुवाद–हे भक्तप्रिया मातेश्वरी यह वस्त्र आपकी सेवा में समर्पित है। यह सर्दी गर्मी, हवा से बचाने वाला, लज्जा का उत्तक रक्षक तथा शरीर का अलंकार है, इसे ग्रहण कर हमें शान्ति प्रदान करें।

नोट–अब प्रतिमा के मस्तक में चन्दन लगावें।

चन्दन समर्पण मंत्र

श्री खण्ड चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपन चन्दनं प्रतिगृहयन्ताम।।

हिन्दी अनुवाद–हे करूणामयी माता! यह दिव्य श्री खण्ड रक्त चन्दन सुगंध से पूर्ण तथा मनोहर है। विलेपन के लिए यह चन्दन स्वीकार करें।

नोट–अब माता लक्ष्मी जी के ऊपर अक्षत छिड़कें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माता लक्ष्मी जी को अक्षत समप्रण मंत्र

अक्षतास्य भगवतिः कंकु भाक्त सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि।।

हिन्दी अनुवाद–हे परमेश्वरी! ये कुंकुंम (लाल गुलाल) में रंगे हुए सुन्दर अक्षत हैं, आपकी सेवा में समर्पित करता हूँ, इन्हें ग्रहण कीजिए।

नोट–अब माता लक्ष्मी को बिल्वपत्र एवं पुष्प चढ़ाइये।

बिल्वपत्र एवं पुष्प समर्पण मंत्र

बन्दारूज नाम्बदार मन्दार प्रिये धीमहि।
मन्दार जानि रक्त पुष्पाणि स्वेताकार्दीन्मुपेहि भो।।

हिन्दी अनुवाद–वन्दना करने वाले भक्तों के लिए मन्दार कल्प वृक्ष समान कामना पूरक है।.हे मन्दार प्रिय लक्ष्मी माता, मन्दार तथा लाल पुष्प आप कृपया ग्रहण करें।

माता लक्ष्मी जी को पुष्प माला अर्पण मंत्र

भगवतिः माल्यादीनि सुगन्धिनि माल्यादीन वै देविः।
मायाहृतानि पुष्पाणि गृहायन्ता पूजनाय भो।।

हिन्दी अनुवाद–हे भगवती! लाल पुष्प मालती इत्यादि पुष्पों की मालाएं और पुष्प आपके लिए लाया हूँ, आप इन्हें पूजा के लिए ग्रहण करें।

माता लक्ष्मी जी को सिन्दूर समर्पण मंत्र

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुख वर्द्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिदूरं प्रति गृह यन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद–हे मातेश्वरी! सुन्दर लाल, सौभाग्य सूचक, सुखवर्द्धन, शुभद, तथा काम पूरक सिन्दूर आपकी सेवा में अर्पित है। इसे स्वीकार करें।

नोट–इसके पश्चात् माता जी के चरणों में लाल गुलाल समर्पित करें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाल गुलाल अर्पण मंत्र

नाना परिमले द्रव्यौ निर्मितं चूर्णमुत्तम्।
गुलाल नामकं चूर्ण गन्धाढ्यं चारू प्रति गृह यन्ताम।।

हिन्दी अनुवाद–हे माता लक्ष्मी जी! तरह–तरह– के सुगन्धित द्रव्यों से निर्मित यह गन्ध युक्त गुलाल नामक उत्तम चूर्ण ग्रहण कीजिए।

नोट– अब माता लक्ष्मी को सुगन्धित धूप या अगरबत्ती दिखावें।

सुगन्धित धूप अर्पण मंत्र

वनस्पति, रसोद, भूतो गन्धोढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां घूपोढ्यं प्रतिगृह यन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद–अब माता जी को प्रज्जवलित दीप दिखावें।

माता लक्ष्मी जी को दीप दर्शन मंत्र

साज्यं य वर्तिसंयुक्त वहिनां योजितं मया।
दीप गृहाण त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवि महेश्वरी।
त्राहि मां निरयाद् घोरा हो पंचोतिर्न मोस्तुतते!!

हिन्दी अनुवाद–हे मातेश्वरी! घी में डुबोई रूई की बत्ती को अग्नि से प्रज्जवलित करके दीपक आपकी सेवा में अर्पित कर रहा हूँ। इसे ग्रहण कीजिए। यह दीप त्रिभुवन के अन्धकार को मिटाने वाला है। मैं अपनी माता श्री लक्ष्मी को यह दीप अर्पित करता हूँ। हे देवि! आप हमें घोर नरक से बचाइये।

नोट–इसके पश्चात् विभिन्न प्रकार की मिठाइयां व नाना प्रकार के फल नैवेद्य समर्पित करें।

नैवेघ समर्पण करने का मंत्र

नैवेद्य गृह यन्ताम देविः भक्ति में ह्वाचलं कुरू।
ईप्सित में वरं देहि परत्र च परां गतिम्।।
शर्करा खण्ड खाद्यानि दीव्यक्षीर घृताणि च।
आहारं भक्ष्य भोज्यं च नैवेद्यं प्रति गृहयन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद–हे भक्तवत्सला! आप यह नैवेद्य ग्रहण करें तथा मेरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भक्ति को अविचल करें। मुझें वांछित वर दीजिए और परलोक में परम गति प्रदान कीजिए। शक्कर व चीनी से तैयार किए गये खाद्य पदार्थ दही, दूध, घी, एवं भक्ष्य भोज्य विभिन्न फल आहार नैवेद्य के रूप में अर्पित हैं, इसे स्वीकार कीजिए।

नोट–अब सिंहासन पर पान बीड़ा चढ़ावें।

पान बीड़ा समर्पण मंत्र

ऊँ पूंगीफल महादव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्
एला चूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृहयन्ताम्।।

हिन्दी अनुवाद–हे दया सिन्धु मातेश्वरी लक्ष्मी! महान दिव्य पूंगीफल, इलायची, और चूना आदि से युक्त पान का बीड़ा आपकी सेवा में अर्पित है, इसे ग्रहण करें।

नोट–इसके पश्चात् माता जी को नारियल फल सिंहासन पर भेंट करें।

नारियल फल अर्पण मंत्र

इदं फलं मया भगवति स्थापित पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाति र्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

हिन्दी अनुवाद–हे सर्व सुख दात्री माता लक्ष्मी जी! यह नारियल फल मैंने आपके समक्ष समर्पित किया है, जिससे हमें जन्म–जन्मांतर तक आप हमें सफलता प्रदान करें।

मुख्य द्वार विनायक पूजन

नोट–उपासकों! अब मुख्य द्वार पर रोली चन्दन से "स्वस्तिक" का चिन्ह बनाकर नीचे लिखित मंत्र से गंगाजल, चन्दन, धूप, दीप, पुष्प, विल्वपत्र आदि से पूजन करें।

ऊँ मुख्य द्वार विनायकाय नमः।।

कलम दवात का पूजन

नोट–अब नीचे लिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए कलम व दवात में मौली बांधें–

लेखनी निर्मिता पूर्व ब्राह्मण परमेष्ठिना।
लोकानां च हितार्थाय तस्मातां पूजायाम्यहम्।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नोट–इसके पश्चात् कलम–दवात पर गंगाजल, अक्षत, चन्दन, पुष्प, बिल्वपत्र चढ़ावें और दोनों हाथ जोड़कर निम्न मंत्र पढ़ते हुए उनकी वन्दना करें–

कलम-दवात की प्रार्थना

शास्त्राणां व्यवहाराणां विद्यानामाप्नु याधतः।
अतस्त्वां पूजयिष्यामी मम हस्ते स्थिरो भवः।।

नोट–अब नवीन व पुराने बही–खाते पर माता सरस्वती का पूजन (पंचोपचार) निम्न मंत्र द्वारा करें।

बही-खाता पूजन मंत्र

ऊँ वीणा पुस्तक धारिण्यै श्री सरस्वत्यै नमः।।

नोट–अब माता सरस्वती का दोनों हाथ जोड़कर निम्न मन्त्रा पढ़ते हुए ध्यान करें–

श्री सरस्वती ध्यान मन्त्र

या कुन्देन्दु तुषार धवला या शुभ्र वस्त्रा वृता।
या वीणा वरदण्ड मण्डित करा या श्वेत मद्यासना।।
या ब्रहा्ा च्युत शंकरा प्रभृति भिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निः शेष जाड्चापहा।।

नोट–अब गल्ले और तिजोरी को खोलकर (उसमें चांदी के ग्यारह सिक्के अवश्य हों) "कुबेर" का "पंचोपचार पूजन" करें। फिर हाथ जोड़कर कुबेर देवता की प्रार्थना करें।

गल्ले और तिजोरी के अन्दर श्री कुबेर का ध्यान मन्त्र

आवाह यामि देव त्वामिहा याहि कृपा कुरू।
कोशं वर्द्धय नित्यं त्वं परिरक्षं सुरेश्वर।।
धनदाय नमस्तुभ्यं निधि पद्माधिपाय च।
भगवान त्वत्प्रसादेन धन धान्यादि सम्पदः।।

नोट–अब तराजू बटखरे के ऊपर गंगा जल अक्षत, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, बिलप, नैवेद्य से निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए पूजन करें–

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तराजू बटखरे का पूजन मंत्र

ऊँ तुला खण्ड भारत्तोलक देव आवाहयामि नमः।

नोट–दोनों हाथ जोड़कर तुला का ध्यान करें–

तुला ध्यान मंत्र

नमस्ते सर्वदेवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिता।
साक्षी भूता जबद्धात्री निर्मिता विस्वयेनिना।।

नोट–अब थाली में 21 दीपक जलाकर उनकी पूजा गंगाजल, बिल्वपत्र, पुष्प, चन्दन, अक्षत, नैवेद्य आदि द्वारा निम्न मंत्र से करें।

प्रज्जवलित 21 दीपक का पूजन पंत्र

ऊ प्रज्जवलित ज्योतिषे नमः।।

नोट–अब दोनों हाथ जोड़कर दीप का ध्यान करें–

प्रज्जवलित दीपक ध्यान मंत्र

त्वं ज्योतिस्त्वं रविश्चन्द्रो विद्युदग्निश्च तारकाः।
सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिर्दीपा वल्यै नमो नमः।।

माता लक्ष्मी को दक्षिणा अर्पण मंत्र

हिरण्यगर्भ गर्भस्यं हेम बीजं विभावसोः।
अनंत पुण्यं फल दमतः शान्ति प्रयच्छमे।।

हिन्दी अनुवाद–हे दयालु माता! सुवर्ण हिरण्य गर्भ ब्रह्मा के गर्भ से स्थित अग्नि का बीज है। यह अनन्त पुण्य फलदायक है। परमेश्वरी! यह आपकी सेवा में अर्पित है। इसे ग्रहण कर हमें शान्ति प्रदान करें।

नोट–इसके पश्चात् दोनों हथेलियों में पुष्प भरकर, मंत्र पढ़ने के पश्चात् माता की पुष्पांजली समर्पित खड़े होकर करें।

पुष्पांजली समर्पण मंत्र

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कलोद् भवा च।
पुष्पांजली र्मया दत्तौ गृहाण परमेश्वरिः।।

हिन्दी अनुवाद–हे परमेश्वरी! यथा समय पर उत्पन्न होने वाले तरह–तरह के सुगन्धित पुष्प मैं पुष्पांजली के रूप में अर्पित कर रहा हूँ,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन्हें स्वीकार कीजिए।

नोट–अब हाथ जोड़कर खड़े होकर माता लक्ष्मी जी के सिंहासन या प्रतिमा के चारों ओर घूम–घूम कर पांच बार "प्रदक्षिणा" करें और निम्नलिखित मंत्र से उच्चारण करते रहें।

प्रदक्षिणा मंत्र

यानि कानि च पापानि च ज्ञाताज्ञात कृताणि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे–पदे।।

हिन्दी अनुवाद–हे कृपालु माता जी! मनुष्यों से जाने–अनजाने में जो पाप हो जाते हैं, वे पाप परिकमा करते समय पद–पद पर नष्ट हो जाते हैं।

नोट–इसके पश्चात् गड़वी में जन भरकर बूंद–बूंद सिंहासन के पास गिरावें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

माता लक्ष्मी को विशेष अर्घ्य अर्पण मंत्र

रक्ष रक्ष भक्तवत्सला रक्ष त्रिलोक्य रक्षिकाः।
भक्तानां भयं कर्त्ता त्राता भाव भवार्णवात्।।

हिन्दी अनुवाद–हे त्रिलोक की रक्षा करने वाली लक्ष्मी जी ! रक्षा कीजिए रक्षा कीजिए रक्षा किजिए। आप भक्तों को अभय देने वाली और भवसागर से उनकी रक्षा करने वाली हैं।

नोट–इसके पश्चात् माता लक्ष्मी की आरती करें और भगवती को आरती दिखाते हुए– इस पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर लिखी हुई"आरती वन्दना" गावें। आरती वन्दना समाप्त होने के बाद माता लक्ष्मी को प्रणाम करें। इसके पश्चात् प्रसाद वितरण करें। माता लक्ष्मी की प्रतिमा (या तस्वीर) के समक्ष रात भर 21 दीपक प्रज्जवलित रहने चाहिए। प्रातः काल पुनः महालक्ष्मी का पंचोपचार पूजन एवं आरती करें। तत्पश्चात् प्रतिमा को उठाकर पूजन स्थल (घर की पूजा स्थल) पर स्थापित कर दें और नित्य ही प्रातः काल स्नान से पवित्र होकर प्रतिमा को धूप–दीप दिखावें और लक्ष्मी चालीसा का पाठ किया करें तो आपके गृह में लक्ष्मी का निवास होना अनिवार्य है–यह "वेदों की वाणी" है।

(इति श्री महालक्ष्मी षोड़षोपचार पूजन सम्पूर्ण)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री लक्ष्मी स्तोत्र एवं कवच खण्ड

(संस्कृत भाषी उपासकों के लिए)

उपासकों! वेदों, पुराण में वर्णित मातेश्वरी लक्ष्मी के "मूल" स्तोत्र एवं कवच पाठ का वर्णन प्रस्तुत कर रहा हूँ। माता लक्ष्मी के तो असंख्य मूल स्तोत्र हैं, क्योंकि सृष्टी जगत सभी देवी–देवताओं ने इनके गुण गाये हैं। अतः समस्त एवं कवचों का वर्णन करना तो असम्भव है, फिर भी दो–चार का वर्णन कर रहा हूँ। इनमें से कोई भी (एक) स्तोत्र का पाठ नित्य ही उपासक करेगा तो उनके गृह में लक्ष्मी की कृपा बनी रहेगी।

श्री लक्ष्मी सहस्त्रनाम स्तोत्र

श्रीः पद्मा प्रकृतिः सत्वा शान्ता चिच्छक्तिरव्यया।
केवला निष्कला शुद्धा व्यापिनी व्योमविग्रहा।।
व्योमपद्मकृताधारा परा व्योमामृतोद्भवा।
निर्व्योमा व्योममध्यस्था पंचव्योमपदाश्रिता।।
अच्युता व्योमनिलया परमानन्दरूपिणी।
नित्यशुद्धा नित्यतृप्ता निर्विकारा निरीक्षणा।।
ज्ञानशक्तिः कर्तृशक्तिर्भोक्तृशक्तिः शिखावहा।
स्नेहाभासा निरानंदा विभूतिर्विमलाचला।।
अनंता वैष्णवी व्यक्ता विश्वानंदा विकासिनी।
शक्तिर्विभिन्नसर्वार्तिः समुद्रपरितोषिणी।।
मूर्तिः सनातनी हार्दी निस्तरंगा निरामया।
ज्ञानज्ञेया ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेय विकासिनी।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वच्छंदशक्तिः गहना निष्कम्यार्चि सुनिर्मला।
स्वरूपा सर्वगा पारा बृंहिणी सुगुणोर्जिता।।
अकलंका निराधारा निसंकल्पा निराश्रया।
असंकीर्णा सुशान्ता च शाश्वती भासुरी स्थिरा।।
अनौपम्या निर्विकल्पा नियंत्रा यंत्रवाहिनी।
अमेद्या भेदिनी भिन्ना भारती वैखरी खगा।।
अग्राह्या ग्राहिका गूढ़ा गम्भीरा विश्वगोपिनी।
अनिर्देश्या प्रतिहता निर्बीजा पावनी परा।।
अपतर्क्या परिमिता भवभ्रांतिविनाशिनी।
एका द्विरूपा त्रिविधा असंख्याता सुरेश्वरी।।
सुप्रतिष्ठा महाधात्री स्थितिर्वृद्धिः ध्रुवा गतिः।
ईश्वरी महिमा ऋदिः प्रमोदा उज्ज्वलोद्यमा।।
अक्षया वर्द्धमाना च सुप्रकाशा विहंगमा।
नीरजा जननी नित्या जया रोचिष्ती शुभा।।
तपोनुदा च ज्वाला च सुदीप्तिश्चांशुमालिनी।
अप्रमेया त्रिधा सूक्ष्मा परा निर्वाणदायिनी।।
अवदाता सुशुद्धा च अमोघाख्या परम्परा।
संघनिकी शुद्धविद्या सर्वभूतमहेश्वरी।।
लक्ष्मी स्तुष्टिर्महाधारा शान्ति रापूरणनवा।
अनुग्रहा शक्ति राद्या जगज्येष्ठा जगद्विधिः।।
सत्या प्रह्वा क्रिया योग्या अपर्णा ह्णादिनी शिवा।
सम्पूर्णा ह्णादिनी शुद्धा ज्योतिष्मत्य मृतावहा।।
रजोव्यर्कप्रतिमा ऽऽकर्षिणी कर्षिणी रसा।
परा वसुमती देवी कांती शांतिर्मतिः कला।।
कला कलंकरहिता विशालोद्दीपनी रतिः।
सम्बोधिनी हारिणी च प्रभावा भवभूतिदा।।
अमृतस्यन्दिनी जीवा जननी खण्डिका स्थिरा।
धूमा कलावती पूर्ण भासुरा सुमतीरसा।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुद्धा ध्वनिः सृतिः सृष्टिर्विकतिः कृष्टिरेव च।
प्रापणी प्राणदा प्रह्वा विश्वा षाण्डुरवासिनी।।
अनंतरूप अनंतामानंतस्थ अनंतसम्भवा।।
महाशक्तिः प्राणशक्तिः प्राणदात्री ऋतम्भरा।
महासमहा निखिला इच्छाधारा सुखावहा।।
प्रत्यक्षलक्ष्मीः निष्कम्पा प्ररोहाबुद्धिगोचरा।।
नानादेहा महावर्ता बहुदेह विकासिनी।।
सहस्त्राणी प्रधाना च न्यायवस्तुप्रकाशिका।
सर्वाभिलाषपूर्णेच्छा सर्वा सर्वार्थभाषिणी।।
नानास्वरूपचिद्धात्री शब्दपूर्वा पुरातना।
व्यक्ताव्यक्ता जीवकेशा सर्वेच्छापरिपूरिता।।
संकल्पसिद्धा सांख्येया तत्त्वगर्भा धरावहा।
भूतरूपा चित्स्वरूपा त्रिगुणा गुणगर्विता।।
प्रजापतीश्वरी रौद्री सर्वाधारा मुखावहा।
कल्याणवाहिका कल्या कलिकल्मषनासिनी।।
नीरूपोदिमन्नसंताना सुयंत्रा त्रिगुणालया।
महामाया योगमाया महायोगेश्वरी प्रिया।।
महास्त्री विमला कीर्तिर्जया लक्ष्मीर्निरंजना।
प्रकृति भवन्मायाशक्तिर्निद्रा यशस्करी।।
चिंता बुद्धिर्यशः प्राज्ञाशांती राप्रीतिवर्द्धिनी।
प्रद्युम्नमाता साध्वी च सुखसौभाग्यसिद्धिदा।।
काष्ठा निष्ठा प्रतिष्ठा च ज्येष्ठा श्रेष्ठा जयावहा।
सर्वातिशायिनी प्रीति विश्वशक्ति महाबला।।
वरिष्ठा विजया वीर जयंती विजय प्रदा।
हृद्गुहा गोपिनी कुह्या गणगंधर्वसेविता।।
योगीश्वरी योगमाया योगिनी योगसिद्धिदा।
महायोगेश्वरवृता योग योगेश्वर प्रिया।।
ब्रहोंद्ररुद्रनमिता सुरासुरवरप्रदा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्रिवर्त्मगा त्रिलोकस्था त्रिविक्रमपदोद्भवा।।
सुतारा तारिणी तारा दुर्गा संतारिणी परा।
सुतारिणी तारयंती भुरितारेश्वरप्रभा।।
गुह्यविद्या यज्ञविद्या महाविद्या सुशोभिता।
आध्यात्मविद्या विघ्नेशी पद्मस्था परमेष्ठिनी।।
आन्वीक्षिकी त्रयीवार्ता दण्डनीति न्यात्मिका।
गौरी वागीश्वरी गोप्त्री गायत्री कमलाद्भवा।।
विश्वम्भरा विष्वरूपा विश्वमाता वसुप्रदा।
सिद्धिः स्वाहा स्वधा स्वस्तिः सुधा सर्वार्थसाधिनी।।
इच्छा सृष्टिर्धुर्तिभूतिः कीर्तिः श्रद्धा दयामतिः।
श्रुतिर्मेधा घृतिर्ह्री श्रीर्विद्या विबुधवंदिता।।
अनसूया घृणा नीतिर्निर्वृतिः कामधुक्वरा।
प्रतिज्ञा संततिर्भूतिद्यौः प्रज्ञा विश्वमानिनी।।
स्मृति वाग्विश्वजननी पश्यंती मध्यमा समा।
संध्या मेधा प्रभा भीमा सर्वाकारा सरस्वती।।
कांक्षा माया महामाया मोहिनी माधवप्रिया।
सौम्याभोगा महाभोगा भोगिनी भोगदायिनी।।
सुधौतकनकप्रख्या सुवर्णकमलासना।
हिरण्यगर्भा सुश्रोणी हारिनी रमणी रमा।।
चंद्रा हिरण्मयी ज्योत्स्ना रम्या शोभा शुभावहा।
त्रैलोक्यमण्डना नारी नरेश्वरार्चिता।।
त्रैलोक्यसुंदरी रामा महाविभववाहिनी।
पद्मास्था पद्मनिलिया पद्मलाविभूषिता।।
पद्मयुग्मधरा कांता दिव्याभरणभूषिता।
विचित्ररत्नमुकुटा विचित्राम्बरभूषणा।।
विचित्रामाल्यगंधद्या विचित्रायुधवाहना।
महानारायणीदेवी वैष्णवी वीरवंदिता।।
कालसंकर्षिणी घोरा तत्त्वसंकर्षिणीकला।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगत्सम्पूरणो विश्वा महाविभवभूषणा।।
वारुणी वरदा व्याख्या घण्टाकर्णविराजिता।
नृसिंही भैरवी ब्राह्मी भास्करी व्योमचारिणी।।
ऐंद्री कामधेनुः सृष्टिः कामयोनिर्महाप्रभा।
दृष्टा काम्या विश्वशक्तिर्बीजगत्यात्मदर्शना।।
गरूडारूढ़हृदया चांद्री श्रीर्म धुराननना।
महोग्ररूपा वाराही नारसिंही हतासुरा।।
युंगांतहुतभग्ज्वाला कराला पिंगलाकला।
त्रैलोक्यभूषणा भीमाश्यामा त्रैलोक्यमोहिनी।।
महोत्कटा महारक्ता महाचण्डा महासना।
शंखिनी लेखिनी स्वस्थालिखिता खेचरेश्वेरी।।
भद्रकाली चैकवीरा कौमारी भवमालिनी।
कल्याणी कामधुरज्वालामुखी चोत्पलमालिका।।
बालिका धनदा सूर्या हृदयोत्पलमालिका।
अजिता वर्षिणी रीतिर्मरूण्डा गरूडासना।।
वैश्वानरी महामाया महाकाली विभीषणा।
महामंदारविभवा शिवानंदा रतिप्रिया।।
उद्रीतिः पद्ममाला च धर्मवेगा विभावनी।
सत्क्रिया देवसेना व हिरण्यरजताश्रया।।
सहसावर्तमाना च हस्तिनादाप्रबोधिनी।
हिरण्यपद्मर्णा च हरिभद्रा सुदुर्द्धरा।।
सूर्या हिरण्यप्रकटसदृशी हेममालिनी।
पद्माननानित्यपुष्टा देवमाता मृतोद्भा।।
महाघना च या शृंगी कर्दमी कम्बुकंधरा।
आदित्यवर्णा चंद्रामा गंधद्वारा दुरासदा।।
वराचिता वरारोहा वरेण्या विष्णुवल्लभा।
कल्याणी वरदा वामा वामेशी विध्यवासिनी।।
योगनिद्रा योगरता देवकी कामरूपिणी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कंसविद्राविणी दुर्गा कौमारी कौशिकी क्षमा।।
कात्यायनी कालरात्रिर्निशितृप्ता सुदुर्जया।
विरूपाक्षी विशालाक्षी भक्तानो परिरक्षिणी।।
बहुरूपा स्वरूपा च विरूपा रूपवर्जिता।
घण्टानिनादबहुला जीमूतध्वनिनिःस्वना।।
महादेवेंद्रमथिनी भ्रकुटीकुटिलानना।
सत्योपयाचिता चैका कौबेरी ब्रह्मचारिणी।।
आर्या यशोदा सुतदा धर्मकामार्थमोक्षदा।
दारिद्रयदुःखशमनी घोरदुर्गार्तिनाशिनी।।
भक्तार्तिशमनी भव्या भवभर्गापहारिणी।
क्षीराब्धितनया पद्मा कमला धरणीधरा।।
रूक्मिणी रोहिणी सीता सत्यभामा यशस्विनी।
प्रज्ञाधारामितप्रज्ञा वेदमाता यशोवती।।
समाधिर्भावाना मैत्री करूणा भक्तवत्सला।
अंकर्वेदी दक्षिणी च ब्रह्मचर्यपरागतिः।।
दीक्षा वीक्षा परीक्षा च समीक्षा वीरवत्सला।
अम्बिका सुरभिः सिद्धा सिद्धविद्याधरार्चिता।।
सुदीक्षा लेलिहाना च कराला विश्वपूरका।
विश्वसंधारिणी दीप्तीस्तापनी ताण्डवप्रिया।।
उद्भवा विरजा राज्ञी तापनी बिन्दुमालिनी।
धीर धारासुप्रभावा लोकमाता सुवर्चसा।।
हव्यगर्भा चाज्यगर्भा जुह्वतो यज्ञसम्भवा।
आप्यायनी पावनी च दहनी दहनी दहनाश्रया।।
मातृका माधवी मुख्या मोक्षलक्ष्मीर्महर्द्धिदा।
सर्वकामप्रदा भद्रा सुभद्रा सर्वमंगला।।
श्वेता सुशुक्लवसना शुक्लमाल्यानुलेपना।
हंसा हीन करी हंसी हृद्या हृत्कमलालया।।
सितातपत्रा सुश्रोणी पद्मपत्रायतेक्षणा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सावित्री सत्यसंकल्पा कामदा कामकामिनी।।
दर्शनीया दृशादृश्या स्पृश्या सेव्या वरांगना।
भोगप्रिया भोगवती भोगीन्द्रशयनासना।।
आद्रा पुष्करिणी पुण्य पावनी पापसूदनी।
श्रीमती च शुभाकारा परमैश्वर्यभूतिदा।।
अचिंत्य अनंदविभवा भवभावविभावनी।
निश्रेणिः सर्वदेहस्था सर्वभूतनमस्कृता।।
बला बालाधिका देवी गौतमी गोकुलालया।
तोषिणी पूर्णचंद्राभा एकानंदा शताननना।।
उद्याननगरद्वारहर्म्योपवनवासिनी।
कूष्माण्डा दारुणा चण्डा किराती नंदनालया।।
कालायना कालगम्या भयदा भयनाशिनी।
सौदामनी मेघरवा दैत्यदानवमर्द्दिनी।।
जगत् माता भयकरी भूतधात्री सुदुर्लभा।
काश्यपी सुभदाता च वनमाला शुभावरा।।
धन्या धन्येश्वरी धन्या रत्नदा वसुवर्द्धिना।
गांधर्वी रेवती गंगा शकुनी विमलानना।।
इडा शांतिकरी चैव तामसी कमलालया।
आज्यपा वज्रकौमारी सोमपा कुसुमाश्रया।।
जगत्प्रिया च सरथा दुर्जया खगवाहना।
मनोभावना कामचारा सिद्धचारणसेविता।।
व्योमलक्ष्मीर्महालक्ष्मीस्तेजोलक्ष्मीः सुजाज्वला।
रसलक्ष्मीः जगद्योनिः गन्धलक्ष्मीर्वनाश्रया।।
श्रवणा श्रावणी नेत्री रसनाप्राणचारिणी।
विरिंच माता विभवा वरवारिजवाहना।।
वीर्या वीरेश्वरी वंद्या विशोका वसुवर्द्धिनी।
अनाहता कुण्डलिनी नलिनी वनवासिनी।।
गांधारिणींद्रनमिता सुरेंद्रनमिता सती।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वमंगल्यामांगल्या सर्वकामसमृद्धिदा।।
सर्वानंदा महानंदा सत्कीर्तिः सिद्धसेविता।
सिनीवली कुहु राका अमा चानुमतिर्द्युतिः।।
अरूंधती वसुमती भार्गवी वास्तुदेवता।
मायूरी वज्रवेताली वज्रहस्ता वरानना।।
अनघा धरणिर्धीरा धमनी मणिभूषणा।
राजश्री रूपसहिता ब्रह्मश्रीः ब्रह्मवंदिता।।
जयश्री जयदा ज्ञेया सर्ग श्रीः स्वर्गतिः सताम्।
सुपुष्पा पुष्पनिलया फलश्री निष्कलप्रिया।।
धनुर्लक्ष्मीस्त्वमिलिता परक्रोधनिवारिणी।
कद्रूर्धनायुः कपिला सुरसा सुरमोहिनी।।
महाश्वेता महानीला महामूर्तिर्विषापहा।
सुप्रभा ज्वालिनी दीप्तिस्तृप्तिः व्याप्ति प्रभाकरी।।
तेजोवती पद्मबोधा मदलेखारूणावती।
रत्ना रत्नावली भूता शतधामा शतापहा।।
त्रिगुणा घोषिणी रक्ष्या नर्दिनी घोषवर्जिता।
साध्या दितिद्रितिर्देवी मृगवाहा मृगांकगा।।
चित्रनीलोत्पलगता वृषरत्नकराश्रया।
हिण्यरजतद्वंद्वा शंखभद्रासनास्थिता।।
गोमूत्रगोमयक्षीरदधिसर्पिर्जलाश्रया।
मरीचिश्चीरवसना पूर्णा चन्द्रार्कविष्टरा।।
सुसूक्ष्मा निर्वृतिः स्थूला निवृत्तारतिरेव च।
मरीचिर्ज्वालिनी धूमा हव्यवाहा हिरण्यदा।।
दायिनी कालिनी सिद्धिः शोषिणी सम्प्रबोधिनी।
भास्वरा संहति स्तीक्ष्णा प्रचण्डज्वलनोज्ज्वला।।
सांगा प्रचण्डा दीप्ता च वैद्युतिः सुमहाद्युतिः।
कपिला नीलरक्ता वसुषुम्णा विस्फुर्लिंगिनी।।
अर्चिष्मती रिपुहरा दीर्घा धूमवाली जरा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सम्पूर्णमण्डला पूषा स्त्रंसिनी सुमनोहरा।।
जया पुष्टिकरीच्छाया मानसाह्रदयोज्ज्वला।
सुवर्णकरणी श्रेष्ठा मृतसंजीवनीरणें।।
विशल्यकरणी शुभ्रा संधिनी परमौषधिः।
ब्रह्मिष्ठा ब्रह्मसहिता ऐंदवी रत्नसम्भवा।।
विद्युत्प्रभा बिन्दुमती त्रिस्वभावगुणाम्बिका।
नित्योदिता नित्यहृष्टा नित्यकामकरीषिणी।।
पद्मांका वज्रचिह्ना च वक्रदण्डविभासिनी।
विदेहपूजिता कन्या मान्या विजयवाहिनी।।
मानिनी मंगला माया मानिनी मानदायनी।
विश्वेश्वरी गणवति मण्डला मण्डलेश्वरी।।
हरिप्रिया भौमसुता यनोज्ञा मतिदायिनी।
प्रत्यंगिरा सोमगुप्ता मनोऽभिज्ञा वदन्मतिः।।
यशोधरा रत्नमाला कृष्णा त्रैलोक्यबंधनी।
अमृता धारिणी हर्षा विनता वल्लकी शची।।
संकल्पा भामिनी मिश्रा कादम्बर्यमृताप्रभा।
अगता निर्गता वज्रा सुहिता सहिताक्षता।।
सर्वार्थसाधनकरी धातुर्धारणिकामला।
करूणाधारसम्भूता कमलाक्षी शशि प्रिया।।
सौम्यरूपा महादीप्ता महाज्वाला विकासिनी।
माला कांचनमाला च सद्वज्रा कनकप्रभा।।
प्रक्रिया परमा योक्त्री क्षोक्षिका च सुखोदया।
विजृम्भणा च वज्राख्या शृंखला कमलेक्षणा।।
जयंकरी मधुमती हरिता शशिनी शिवा।
मूलप्रकृति रीशानी योगमाता मनोजवा।।
धर्मोदया भानुमति सर्वाभसा सुखावहा।
धुरंधरा च बाला च धर्मसेव्या तथागता।।
सुकुमारी सौम्यमुखी सौम्यसम्बोधनोत्तमा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुमुखी सर्वतोभद्रा गुह्यशक्तिर्गुहालया।
हलायुधा चैकवीरा सर्वशस्त्रसुधारिणी।।
व्योमशक्तिः महादेहा व्योमगा मधुन्मयी।
गंगा वितस्ता यमुना चद्रभागा सरस्वती।
तिलोत्तमोर्वशी रंभा स्वामिनी सुरसुंदरी।।
बाणप्रहरणवाला बिम्बोष्ठी चारूहासिनी।।
ककुद्मिनी चारूपृष्ठा दृष्टादृष्टफलप्रदा।
काम्याचरी च काम्या च कामचारविहारिणी।।
हिमशैलेन्द्रसंकाशा गजेंद्रवरावहना।।
अशेषसुखसौभाग्यसंपदां यानिरुत्तमा।
सर्वोत्कृष्टा सर्वमयी सर्वा सर्वेश्वरप्रिया।।
सर्वागयोनिः साव्यक्ता संप्रधानेश्वरेश्वरी।
विष्णुवेक्षःस्थलगता किमतः परमुच्यते।।
परा निर्महिमा देवी हरिवक्षःस्थलाश्रया।
सा देवी पापहंत्री च सान्निध्यं कुरुतान्मम।।
इति नाम्ना सहस्त्र तु लक्ष्मयाः प्रोक्तं शुभावहम्।
परावरेण भेदेन मुख्यगौणेन भागतः।।
यशचैतत् कीर्तयेन्नित्यं श्रृणुयाद् वापि पद्मज।
शुचिः समाहितो भूत्वा भक्ति श्रद्धासमन्वितः।।
श्री निवासं समभ्यर्च्य पुष्पधूपानुलेपनैः।
भोगैश्च मधुपर्काधैर्यथाशक्ति जगद्गुरुम।।
तत्पाश्वैस्थां श्रियं देवीं सम्पूज्य श्रीधरप्रियाम्।
ततो नामसहस्त्रेण तोषयेत् परमेश्वरीम्।।
नामरत्नावलीस्तोत्रमिदं यः सततं पठेत्।
प्रसादाभिमुखीलक्ष्मीः सर्व तस्मै प्रयच्छति।।
यस्या लक्ष्म्याश्चसम्भूताः शक्तयो विश्वगाः सदा।
तस्मात् प्रीता जगन्माता श्रीर्यस्याच्युत्वल्लभा।
सुप्रीताः शक्तयस्तस्य सिद्धिमिष्टां दिशन्ति हि।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक एव जगत्स्वामी शक्तिमानच्युतः प्रभुः।
तदंशशक्तिमतोऽन्ये ब्रह्मेशानादयो यथा।।
तथैवैका परा शक्तिः श्रीस्तस्य करुणाश्रया।
ज्ञानादिषांगुण्यमयी या प्रोक्ता प्रकृतिः परा।।
एकैव शक्तिः श्रीस्तस्या द्वितीयात्मनि वर्तते।
परा परेशी सर्वेशी सर्वाकारा सनातनी।।
अनंतनामधेया च शक्तिचक्रस्य नायिका।
जगच्चराचरमिदं सर्व व्याप्य व्यवस्थिता।
तस्मादेकैव परमा श्रीर्ज्ञेया विश्वरूपिणी।
सौम्या सौम्येन रूपेण संस्थिता नटजीववत्।।
यो यो जगति पुम्भावः स विष्णुरिति निश्चयः।
या या तु नारीमावस्था तत्र लक्ष्मीर्व्यवस्थिता।।
प्रकृतेः पुरुषाचान्यस्तृतीयो नैव विद्यते।
अथ किं बहुनोक्तेन नरनारीमयो हरिः।।
अनेकभेदभिन्नस्तु क्रियते परमेश्वरः।
महाविभूतिं दयितां ये स्तुवन्त्यच्युतप्रियाम्।।
ते प्राप्नुवन्ति परमां लक्ष्मीं संशुद्धचेतसः।
पद्मयोनिरिदं प्राप्य पठन् स्तोत्रमिदं क्रमात्।।
दिव्यमष्टगुणैश्वर्यं तत्प्रसादाच्च लब्धवान्।
सकामानां च पफदामकामानां च मोक्षदाम्।।
पुस्तकाख्यां भयत्रात्रीं सितवस्त्रां त्रिलोचनाम्।।
महापद्मनिष्णां तां लक्ष्मीमजरतां नमः।।
करयुगलग्रहीतं पूर्णकुम्भं दधाना
क्वचिदमलगतस्था शंखपद्माक्षपाणिः।
क्वचिदपि दयितांग्रे चामरव्यग्रहस्वता
क्वचिदपि सृणिपाशिं बिभ्रतो हेमकांतीः।।

।। इति आदिब्रह्मपुराणान्तर्गत सर्वकाम प्रदायकं लक्ष्मीसहस्त्रनाम सम्पूर्णम।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मातेश्वरी धनदा लक्ष्मी कवच

देव्युवाच

धनदा या महाविद्या कथिता न प्रकाशिता।
इदानीं श्रीतुमिच्छामि कवचं पूर्वसूचितम्।।

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं मंत्रविग्रहम्।
सारात्सारतरं देवि कवचं मन्मुखोदितम्।
धनदा कवचस्यास्य कुबेर ऋषिरीरितः।
पंक्तिश्छन्दो देवता च धनदा सिद्धिदा सदा।।
धमार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः।
धं बीजं मे शिरः पातु ह्रीं बीजं मे ललाटकम्।।
श्री बीजं मे मुख पातु रकारं हृदि मेंऽवतु।
तिकारं पातु जठरं प्रिकारं पृष्ठतोऽवतु।।
येकारं जंघयोर्युग्मे स्वाकारं पादयोर्युगे।
शीर्षादिपादपर्यन्तं हाकारं सर्वतोऽवतु।।
इत्यतेत्कंथितं कान्ते कवचं सर्वसिद्धिदम्।
गुरुभ्यर्च्य विधिवत् कवचं प्रपठेद्यति।।
शतवर्ष सहस्त्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात्।
गुरुपूजां विना देवि नहि सिद्धः प्रजायते।।
गुरुपूजात्परो भूत्वा कवचं प्रपठेत्ततः।
सर्वसिद्धियुतो भूत्वा विचरेद् भैरवो यथा।।
प्रातःकाले पठेद्यस्तु मंत्रजायपुरः सरम्ः।
सोऽभीष्टफलमाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः।।
पूजाकाले पठेद्यस्तु देवी ध्यात्वा हृदम्बुजे।
षण्मासाभ्यन्तरे सिद्धिर्नात्र कार्या विचारणा।।
सायंकाले पठेद्यस्तु स शिवो नात्र संशयः।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भुर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि।।
पुरुषो दक्षिणे बाहौ योषिद्वामभुजे तथा।
इदं कवचम् ज्ञात्वा यो जपेद्धनंदा शुभे।
शस्त्रघातम वाप्नोति सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात्।।
कवचेनावृतों नित्यं यो हि यत्रैव गच्छति।
तत्रैव से महादेवि सम्पूज्यों नात्र संशयः।।
।।इति धनदा कवचं सम्पूर्णम्।।

श्री कमला कवचम्

ऐंकारो नमस्तके पातु वाग्भवां सर्वसिद्धिदा।
ह्वीं पातु चक्षुषोर्मध्यं चक्षुयुग्में च शांकरी।।
जिह्वायां मुखवृत्तें च कर्णयोर्दन्तयोर्नसि।
ओष्ठाधरे दन्तपङ्यक्तौ तालुमुले हनौ पुनः।।
पातु मां विष्णुवनिता लक्ष्मीः श्री विष्णुरूपिणी।
कर्णयुग्मे भुजद्वन्द्व स्तनद्वन्द्वे च पार्वती।।
हृदये मणिबन्धें च ग्रीवायां पार्श्वर्योद्वयोः।
पृष्ठ देशे तथा गृह्ये वामे च दक्षिणे तथा।।
उपस्थे च तिम्बे च नाभौ जंघाद्वये पुनः।।
जानुचक्रे पदद्वन्द्वे घुटिके अंगुलिमुलके।।
स्वधातु प्राणशक्त्यात्मसीमन्ते मस्तके तथा।।
सर्वांगे पातु कामेशी महादेवी समुन्नतिः।।
पुष्टिंः पातु महामाया उत्कृष्टिः सर्वदा वतु।
ऋद्धिः पातु सदादेवी सर्वत्र शम्भुवल्लभा।।
वाग्भवा सर्ववदा पातु पातु मां हरगेहिनी।
रमा पातु महादेवी पातु माया स्वराट् स्वयम्।।
सर्वांगे पातु मां लक्ष्मीर्विष्णुमाया सुरेश्वरी।
विजया पातु भवने जया पातु सदा मम।।
शिवदूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भैरवी पातु सर्वत्र भोरूण्डा सर्वदा वतु।।
त्वरिता पातु मां नित्मुग्रतारा सदा वतु।
पातु मां कालिका नित्यं कालरात्रिः सदा वतु।।
नवदुर्गाः सदा पातु कामाक्षी सर्वदा वतु,
योगिन्यः सर्वदा पातु मुद्रा पातु सदा मम।
मात्रा पातु सदा देव्यश्चक्रस्था योगिनीगणाः।।
सर्वत्र सर्व कार्येषु सर्वकर्मसु सर्वदा।
पातु मां देवदेवी जी च लक्ष्मीः सर्व समृद्धदा।।

।। इति श्रीकमला कवचं संपूर्णम्।।

श्री महालक्ष्मी कवचम्

इंद्र उवाच

समस्तकवचानां तु तेजस्वि कवचोत्ताम्।
आत्मरक्षणामाराग्यं सत्यं त्वं ब्रूहि गीष्पते।।

श्री गुरूरुवाच

महालक्ष्म्यास्तु कवचं प्रवक्ष्यामि समासतः।
चतुर्दशसु लोकेषु रहस्यं ब्रह्मणोदितम्।।

ब्रह्मोवाच

शिरो में विष्णुपत्नी च ललाटममृतोद्भवा।
चक्षुषी सुविशालाक्षी श्रवणे सागराम्बुजा।।
घ्रामं पातु वरारोहा जिह्वामान्मायरूपिणि
मुखं पातु महालक्ष्मीः कण्ठं वैकुण्ठवासिनी।।
स्कंधौ मे जानकी पातु भुजौ भार्गवनन्दिनी।
बाहू द्वौ द्रविणी पातु करौ हरिवरांगना।।
वक्षः पातु च श्रीर्देवी च हृदयं हरिसुन्दरी।
कुक्षिः च वैष्णवी पातु नाभिं भुवनमातृका।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कटिं च पातु वाराही सक्थिनी देवदेवता।।
उरू नारायणी पातु जंघे में पादौ भक्तनमस्कृता।
इन्दिरा पातु जंघे मे पादौ सर्वांग करुणामयी।।
ब्रह्मणा लोकरक्षार्थं निर्मित कवचं श्रियः।
ये पठन्ति महात्मानस्ते च धन्या जागत्रये।।
कवचेनावृतांगनां जनानां जयदा सदा।
मातेव सर्वसुखदा भव त्वमरेश्वरी।।
भूयः सिद्धिमवाप्नोति पूर्वोक्तं ब्रह्माणा स्वयम्।
लक्ष्मीर्हरिप्रिया पद्मा एतन्नामत्रयं स्मरन्।।
नामत्रयमिदं जस्वा स याति परमां श्रियम्।
यः पठेत्स च धर्मात्मा सर्वान्कामान् वाप्नुयात्।।
।।इति श्री ब्रह्मपुराणे इन्द्रोपदिष्टं महालक्ष्मीकवचं संपूर्णम्।।

श्री सिद्धिलक्ष्मीस्तोत्रम्

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्भुजां च चतुर्मुखम्।
त्रिनेत्रां च त्रिशूलां च पद्मचक्रगदाधराम्।।
पीतांबरधरां देवीं नानालंकारभूषिताम्।
तेजः पुंजधरां श्रेष्ठां ध्यायेद्बालकुमारिकाम्।।
ऊँकारं लक्ष्मीरूपेण विष्णोर्हृदयमव्ययम्।
विष्णुमानन्दमध्यस्थं ह्रींकार बीजरूपिणी।।
ऊँ क्लीं अमृतानन्दभद्रे सद्यः आनन्ददायिनी।
ऊँ श्रीं दैत्यमक्षरदां शक्तिमालिनी शत्रुमर्दिनी।।
तेजः प्रकाशिनी देवी वरदा शुभकारिणी।
ब्राह्मी च वैष्णवी भद्रा कालिका रक्तशाम्भवी।।
आकारब्रह्मरूपेण ऊँकारं विष्णुं व्ययम्।
सिद्धिलक्ष्मि परालक्ष्मी लक्ष्मलक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।
सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसमप्रभम्।
तन्मध्ये निकरे सूक्ष्मं ब्रह्मरूप व्यवस्थितम्।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊँकार परमानंदं क्रियते सुखसंपदा।
सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।।
प्रथमे त्र्यम्बका गौरी द्वितीये वैष्णवी तथा।
तृतीये कमला प्रोक्ता चतुर्थे सुरसुन्दरी।।
पंचमे विष्णुपत्नी च षष्ठे च वैष्णवी तथा।
सप्तमे च वरारोहा अष्टमे वरदायिनी।।
नवमे खंगत्रिशूला दशमे देवदेवता।
एकादशे सिद्धिलक्ष्मीर्द्वादशे ललितात्मिका।।
एतत्स्तोत्रं पठन्तस्तवां सतुवन्ति भुवि मानवाः।
सर्वापद्रवमुक्तास्ते नात्र कार्या विचारणा।।
एकमासं द्विमासं वा त्रिमासं च चतुर्थकम्।
पंचमासं च षण्मासं त्रिकालं यः पठेन्नरः।।
ब्राह्माणाः क्लेशतो दुःखदरिद्रा भयपीडिताः।
अलक्ष्मीर्लभते लक्ष्मीपमपुत्रः पुत्रमुत्तमम्।
धन्यं यशस्यमायुष्यं वह्निचौरभयेषु च।।
शाकिनी भूतवेताल सर्वव्याधि निपातके।
राजद्वारे महाघोरे संग्रामे रिपुसंकटे।।
समास्थाने श्मशान च कारागेहारिबन्धने।
अशेषभ्यसंप्राप्तौ सिद्धिलक्ष्मीं जपेन्नरः।।
ईश्वरेण कृतं स्तोत्रं प्राणिनां हितकारणम।
स्तुवन्ति ब्राह्मणा नित्यं दारिद्रय न च वर्धते।।
या श्री पद्मवने कदम्बशिखरे राजगृहे कुंजरे।
श्वेते चाश्वयुते वृषे च युगले यज्ञे च यूपस्थिते।।
शंखे देवकुले नरेन्द्रभवने गंगातटे गोकुले सा।
श्रीस्तिष्ठतु सर्वदा मम गृहे भूयात्सदा निश्चला।

।।इति श्री ब्रह्माण्डपुराणे ईश्वर विष्णुसंवादे दारिद्रयनाशनं सिद्धिलक्ष्मी स्तोत्रं संपूर्णम्।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री धनेश्वरी स्तोत्र

धनद उवाच

देवी देवमुपागम्य नीलकण्ठं मम प्रियम्।
कृपया पार्वती प्राह शंकरं करूणाकरम्।।

देव्युवाच

ब्रूहि वल्लभ साधूनां दरिद्राणां कुटुम्बिनाम।
दरिद्र दलनोपायमंजसैव धनप्रदम्।।

शिव उवाच

पूनयन् पार्वतीवाक्यमिदमाह महेश्वरः।
उचितं जगदम्बासि तव भूतानुकम्पया।।
स सीतं सानुजं रामं सांजनेय सहानुगम्।
प्रणम्य परमानन्दं वक्ष्येऽहं स्तोत्रमुत्तमम्।।
धनदं श्रद्धानानां सद्यः सुलभकारकम्।
योगक्षेमकरं सत्यं सत्यमेव वचो मम।।
पठन्तः पाठयन्तोऽपि ब्रह्मणैरास्तिकोत्तमैः।
धनलाभो भवेदाशु नाशमेति दरिद्रता।।
भूववांशभवां भूत्यै भक्तिकल्पलतां शुभाम्।
प्रार्थयेत्तां यथाकामं कामधेनुस्वरूपिणीम्।।
धनदे धनदे देवि दानशीले दयाक।
त्वं प्रसीद महेशानि! यदर्थं प्रार्थयाम्यहम्।।
धराऽमरप्रिये पुण्ये धन्ये धनदपूजिते।
सुधनं धार्मिके देहि यजमानाय सत्त्वरम्।।
रम्ये रुद्रप्रिये रूपे रामरूपे रतिप्रिये।
शिखीसखमनोमूर्त्ते प्रसीद प्रणते मयि।।
आरक्त–चरणाम्भोजे सिद्धि–सर्वार्थदायिके।
दिव्याम्बरधरे दिव्ये दिव्यमाल्यानुशोभिते।।
समस्तगुणसम्पन्ने सर्वलक्ष्णलक्षिते।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शरच्चन्द्रमुखे नीले नील नीरज कुटिलालके।
मत्ते भगवती मातः कलकण्ठरवामृते।।
हासाऽवलोकनैर्दिव्यैर्भक्तचिन्तापहारिके।
रूप लावण्य तारुण्य कारुण्य गुणभाजने।।
क्वणत्कंकणमंजीरे लसल्लीलाकराम्बुजे।
रूपप्रकाशिते तत्त्वे धर्माधारे धरालये।।
प्रयच्छ यजमानाय धनं धर्मैकसाधनम्।
मातस्त्वं मेऽविलम्बेन दिशस्व जगदम्बिके।।
कृपया करुणागारे प्रार्थितं कुरु में शुभे।
वसुधे वसुधारूपे वसु वासव वन्दिते।।
धनदे यजमानाय वरदे वरदा भव।
ब्रह्मण्यैर्ब्राह्मणैः पूज्ये पार्वतीशिवशंकरे।।
स्तोत्रं दरिद्रताव्याधिशमनं सुधनप्रदम्।
श्रीकरे शंकरे श्रीदे प्रसीद मयि किंकरे।।
पार्वतीशप्रसादेन सुरेश किंकरेरितम्।
श्रद्धया ये पठिष्यनित पाठयिष्यन्ति भक्तितः।।
सहस्त्रमयुतं लक्षं घनलाभो भवेद् ध्रुवम्।
धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपाय च।
भवन्तु त्वत्प्रसादन्मे धन–धान्यादिसम्पदः।।

।। इति श्री धनदालक्षमी स्तोत्र सम्पूर्णम्।।

श्री सिद्धिलक्ष्मीस्तुतिः

आकारब्रह्मरूपेण ऊँकारं विष्णुमव्ययम्।
सिद्धिलक्ष्मि! मरालक्ष्मि! लक्ष्यलक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।
याः श्रीः पद्वने कदम्बशिखरे राजगृहे कुंजरे
श्वेते चाश्वयुते वृषे च युगले यज्ञे च युपस्थिते।
शंखे देवकुले नरेन्द्रभवने गंगातटे गोकुले
या श्रीस्तिष्ठिति सर्वदा मम गृहे भूयात् सदा निश्चला।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रताक्षी
गम्भीरावर्तनाभिः स्तनभरनमिता शुद्धवस्त्रोत्तरीया।
लक्ष्मिर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणि–गण–खचितैः स्नापिता हेमकुम्भै–
नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमांगल्ययुक्ता।।

।। इति सिद्धिलक्ष्मीस्तुतिः सम्पूर्णम् ।।

श्रीस्तवः स्तोत्र

स्वस्ति श्रीर्दिशतादशेषजगतां स्वर्गापवर्गस्थितिः
स्वर्ग दुर्गतिमापवर्गिकपदं सर्वं च कुर्वन्हरिः।
यस्या वीक्ष्य मुखं तदिंगितपराधीनो विधत्तेऽखिलं
क्रीडेयं खलु नान्यथाऽस्य रसदास्यादैकरस्यात्त्या।।
हे श्रीर्देवि समस्तलोकजननी त्वां स्तोतुमीहामहे
युक्तां भावय भारतीं प्रगुणय प्रेमप्रधानां धियम्।
भक्तिं बन्धय नन्दयाश्रितमिमं दासं जनं तावकं
लक्ष्यं लक्ष्मि कटाक्षवीचिविसृतेस्ते स्याम चामी वयम्।
स्तोत्रं नाम किमाममनिन्त कवयो यद्यन्यदीयान्गुणान्यत्र
त्वासतोऽधिरोप्य भणितिः सा तर्हि वन्ध्या त्वयि।
सम्यक्सत्मगुणाभिवर्णनमथो ब्रूयुः कथं तादृशी
वाग्वाचस्पतिनाप्यशक्यरचना त्वत्सदुणार्णोनिधौ।।
ये वाचां मनसां च दुर्ग्रहतया ख्याता गुणास्तावकास्तानेव
प्रति साम्बुजिह्वमुदिता यन्मानिका भारती।
हास्यं तत्तु न मन्महे न हि चकोर्येकाऽखिलां चंद्रिकां
नालं पातुमिति प्रगृह्य रसनामासीत सत्यां तृषि।।
क्षोदीयानपि दुष्टबुद्धिरपि निः स्नेहोंऽप्यनीहोऽपि
ते कीर्ति देवी लिहन्नहं न च बिभेम्यज्ञों न जिह्वेमि च।
दुष्येत्सा तु न तातवा न हि शुना लीढ़ाऽपि भागीरथी
दुष्येश्चापि न लज्जते न च बिभेत्यार्तिस्तु शाम्येच्छुनः।।
ऐश्वर्य महादेव. वाऽल्मथवा दृश्येत पुंसा हि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यत्तलक्ष्म्या समुदीक्षणात्तव यतः सार्वत्रिकं वर्तते।
तेनैतेन न विस्मयेमहि जगन्नाथोऽपि नारायणो धन्यं
मन्यत ईक्षणात्तव यतः स्वात्मानमात्मेश्वरः।।
ऐश्वर्य यदशेषपुंसि यदिदं सौन्दर्यलावण्ययो
रूपं यच्च हि मंगलं किमपि यल्लोके सदित्युच्यते।
तत्सर्वं त्वदधीनमेव यदतः श्रीरित्यभेदेन वा यद्वा
श्रीमदितीदृशेन वचसा देवि प्रथामश्नुते।।
देवि त्वन्महिमावधिर्न हरिणा नापि त्वया ज्ञायते
यद्यप्येवमथापि नैव युवयोः सर्वज्ञता हीयते।
यन्नास्त्येव तदज्ञतामनुनुणां सर्वज्ञताया विदुर्व्योमाम्भो–
जमिदन्तया खलु विदन् भ्रान्तोऽयमित्युच्यते।।
लोके वनस्पतिबृहस्पतितारतम्यं यस्याः
कटाक्षपरिणाममुदाहरन्ति।
सा भारती भगवती तु यदीयदासी
तां देवदेवमहिषीं श्रियमाश्रयामः।।
यस्याः कटाक्षमृदुवीक्षणदीक्षितेन
सद्यः समुल्लसितपल्लवमुल्लास।
विश्वं विपर्यय समुत्थविपर्ययं त्वां
तां देवदेव महिषीं श्रियमाश्रयामः।।

।। इति भविष्पुराणे श्रीस्तवः संपूर्णम्।।

श्री स्तुतीः स्तोत्र

मानातीतप्रथितविभवां मंगलं मंगलानां वक्षः
पीठं मधुविजयिनां भूषयन्तीं स्वकान्तया।
प्रत्यक्षानुश्रविकमहिमप्रार्थिनीनां प्रजानां
श्रेयोमूर्ति श्रियमशराणस्त्वां शरण्यां प्रपद्ये।।
आविर्भावः कलशजलधावध्वरे वाऽपि यस्याः
स्थानं यस्याः सरसिजवनं विष्णुवक्षःस्थलं वा।
भूमा यस्याः भुवनमखिलं देवि दिव्यं पदं वा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्तोकप्रज्ञैरनवधिगुणा स्तूयसे सा कथं त्वम्।।
स्तोतव्यत्वं दिशाति भवती देहिभिः स्तूयमाना
तामेव त्वामनितरगतिः स्तोतुमाशंसमानः।
सिद्धारम्भः सकलभुवनश्लाघनीयो भवेयं
सेवापेक्षा तव चरणयोः श्रेयसे कस्य न स्यात्।।
यत्संकल्पाद्भवति कमले यत्र देहिन्यमीषां
जन्मस्थेमप्रलयरचना जंगमाजंगमानाम्।
तत्कल्याणं किमीप यमिनामेकलक्ष्यं समाधौ
पूर्ण तेजः स्फुरति भवतीपादलाक्षारसांकम्।।
निश्रत्यूहप्रणयघटितं देवि नित्यानपायं विष्णुस्त्वं
चेत्यनवधिगुणं द्वंद्वमन्योन्यनलक्ष्यम्।
शेषश्चितं विमलमनसां मौलयश्च श्रुतीनां
संपद्यन्ते विमलमनसां मौलयश्च श्रुतीनां
संपद्यन्ते विहरणविधौ यस्य शय्याविशेषः।।
उद्देश्यत्वं जननि भजतोरुज्झितोपाधिगन्धं
प्रत्येग्रपे हविषि युवयोरेकशेषित्वयोगात्।
पद्मे पत्युस्तव च निगमैर्नित्यमन्विष्यमाणो
नावच्छेदं भजति महिमा नर्तयन् मानसं नः।।
पश्यन्तीषु श्रुतिषु परितः सूरिवृन्देन सार्धं
मध्येकृत्य त्रिकुणपफलकं निर्मितस्थानभेदम्।
विश्वाधीशप्रणयिनी सदा विभ्रमद्यूतवृत्तौ
ब्रह्मेशाधा दधति युवयोरक्षशारप्रचारम्।।
अस्येशाना त्वमसि जगतः संयश्रयन्ती मुकुंदं
लक्ष्मीः पद्मा जलधितनया विष्णुपत्रीन्दिरेति।
यन्नामानि श्रुतिपरिणान्येवमावर्तयन्तो
नावर्तन्ते दुरितपवनप्रेरिते जन्मचके।।
त्वामेवाहुः कतिचिदपरे त्वत्प्रियं लोकनाथं
किं तैरन्तः कलहमलिनैः किंचिदुत्तीर्य मग्नैः।
त्वत्संप्रीत्यै विहरित हरौ संमुखीनां श्रुतीनां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावरूढौ भगवति युवां दम्पती दैवतं नः।।
आपन्नार्तिप्रश्मनविधौ बद्धदीक्षस्य
विष्णोराचख्युस्त्वां प्रियसहचरीमैकमत्योपपन्नाम।
प्रादुर्भावैरपि मधुरता दुग्धराशेस्तरंगे।।
धत्ते शोभां हरिमरकते तावकी मूर्तिराद्या
तन्वी तुंगस्तनभरनता सप्तजाम्बूनदाभा।
यस्यां गच्छन्त्युदयविलयैर्नित्यमानन्दसिन्धा–
विच्छावेगोल्लसितलहरीविभ्रमं व्यक्तयस्ते।।
आसंसारं विततमखिलं वांग्मयं
यद्विभूतिर्यद्भ्रूभंगात्कुसमधनुषः किंकरो मेरूधन्वा।
यस्यां नित्यं नयनशतकैरेकलक्ष्यो महेन्द्रः
पद्मे तासां परिणतिरसौ भावलेशैस्त्वदीयैः।।
अग्रे भर्तुः सरसिजमये भद्रपीठे
निषण्णामम्भोराशेरधिगतसुधासंप्लेवादुत्थितां त्वाम्।
पुष्पासारस्थगितभुवनैः पुष्कलावर्तकाद्यैः
क्लृप्तारम्भाः कनककलशैरभ्यषिंचना जेन्द्राः।
माता देवि त्वमसि भगवान्वासुदेवः पिता मे
जातः सोऽहं ननानि युवयोरेकलक्ष्यं दयायाः।
दत्तों युष्मत्परिजनतया देशिकैरप्यत्स्त्वं किं ते
भूयः प्रियमिती किल स्मेरवक्रा विभासि।।
कल्याणनामविकलनिधिः काऽपि कारूण्यसीमा
नित्यामोदा निगमवचसां मौलिमन्दारमाला।
संपद्दिव्यां मधुविजयिनः संनिधत्ता सदा
मे सैषा देवी सकलभुवनप्रार्थनाकामधेनुः।।
उपचितगुरुभक्तेरुत्थितं वेंकटेशात्कलि–
कलुषनिवृत्त्यै कल्प्यमानं प्रजानाम्।
सरसिजनिलयायाः स्तोत्रमेतत्पठन्तः
सकलकुशलसीमा सार्वभौमा भवन्ति।।

।। इति श्रीवेंकटेशार्यविरचितं श्रीस्तुतिः संपूर्णम्।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री महालक्ष्मी यंत्र-मंत्र सिद्धि खण्ड

यंत्र-मंत्र का परिचय शक्ति और महत्व

माता महालक्ष्मी के उपासकों! आज का युग अत्यधिक तीव्र गति से यांत्रिक विकास की ओर अग्रसर होता जा रहा है। यह यांत्रिक शक्तियों का निर्माण देवासुर संग्राम से पूर्व हो चुका था। उस समय देवी-देवताओं ने ऐसे स्वचालित यंत्रों का निर्माण किया था जो शत्रुओं पर प्रहार करके पुनः अपने पूर्व स्थान पर लौट आता था, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण सुदर्शन चक्र, अग्नि बाण, ब्रह्म शक्ति आदि है।

पूर्व काल के मूल तांत्रिक परिभाषाओं को लेकर ही आज के वैज्ञानिक ने परमाणु बम, हाईड्रोजन बम, नेपाम बम, आदि विश्व संहारक यन्त्र तैयार किया है, जो छोटा आकार का होते हुए भी संसार को संहारने की शक्ति रखता है।

इन यंत्रों को हम भौतिक यंत्रों के नाम से जानते हैं, परन्तु आज इस परम पवित्र पुस्तक में जिन यंत्रों का वर्णन करने जा रहा हूँ उसका नाम "सिद्धयंत्र" है जो आड़ी तिरछी रेखाओं, बिन्दुओं, अंकों और त्रिकोणों आदि से स्वचालित है। इस सिद्ध यंत्र को यही कल पुर्जे चलाते हैं। "भौतिक यंत्र" दिखाई पड़ता है और इससे हमारा भौतिक जगत प्रभावित होता है, किन्तु इसकी अपेक्षा "सिद्ध यंत्र" मनुष्य का जीवन बदलने की शक्ति रखता है, सोते हुए भाग्य को जगाने की क्षमता रखता है।

सिद्ध यंत्रों में इतनी बड़ी शक्ति छिपी हुई है, जिसे प्राप्त करने के बाद मानव किसी भी असम्भव कार्य को सम्भव में बदल सकता है। ये मंत्र जो विस्फोटक ऊर्जा अपने गर्भ में छुपाए हुए हैं, आखिर क्या रहस्य है इसका?

यंत्रों को समझने के पहले हमें मंत्र संसार में पदार्पण करना होगा,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तभी हाम इस रहस्य गुत्थी को सुलझा सकेंगे।

यह सम्पूर्ण विश्व भगवान का स्वरूप है। उसी प्रकार शब्द"मात्र भी भगवान है। जगत का मूल कारण शब्द है, यह बात "स्फोटवाद" प्रतिपादित करता है।

पाठकों! प्रत्येक शब्द एक "कंपन" उत्पन्न करता है और प्रत्येक कंपन एक रूप व्यक्त करता है। ग्रामोफोन के रेकार्ड पर कुछ रेखाएँ मात्रा होती हैं, जो आंखों से नहीं दिखतीं। इन्हीं रेखाओं पर सूई घूमती हैं, जिससे शब्द उत्पन्न होता है। ये रेखाएँ गाने वाले के शब्द के कम्पन से रेकार्ड पर बनी हैं। वर्षो पहले फ्रांस में किसी ने एक ऐसा यंत्र बनाया था कि उसके सम्मुख कोई गीत या स्तुति गाने से यंत्र में लगे पर्दे पर रखें रेत के कण उछल–उछल कर एक आकृति बना देता था। एक भारतीय सज्जन ने उस यन्त्रा के सम्मुख "काल भैरव" की स्तुति गायी तो यन्त्रा के पर्दे पर "काल भैरव का रूप" बन गया।

साधकों! मंत्र शब्दों का समूह है, मंत्र ईश्वरीय शक्ति है। यह निर्वाण का मार्ग है। यह शिव शक्ति का प्रतीक है और साक्षात देवी और देवता है। मंत्र, बिन्दु से विराट की ओर ले जाता है, जिससे हम आत्मा और परमात्मा का साक्षात्कार करते हैं।

शब्दों के समूह यंत्रों की अपनी ही भाषा है, अपना ही स्वर है, सुर है और अपना ही ताल है। जो मानव इस सुर–ताल को समझ लेता है, जान लेता है वह अपने परमेश्वर के समीप हो जाता है, क्योंकि मंत्र श्रद्धा पूर्वक सुर व ताल में लयबद्ध होकर बोला जाता है तो मंत्र के देवता उन पर प्रसन्न हो जाते हैं और उन्हें वरदान देते हैं, जिससे साधक के मनोकामनाओं की पूर्ति हो ज़ाती है।

शब्दों से कम्पन होती है, सृष्टि के सब पदार्थ कम्पन से बनते–बिगड़ते हैं, यह विज्ञान भी मानता है। इसलिए यंत्रों–मंत्रों की शक्ति को समझना कठिन नहीं होना चाहिए। किन्तु शब्दों में क्या शक्ति है, यह सर्वज्ञ ऋषि–मुनि जानते थे। उन्होंने ऐसे शब्दों की रचना की तथा उनके प्रयोग की एसी विधि निश्चित की जिससे उन मंत्रों को निर्दिष्ट विधि से काम में लेकर अभीष्ट फल प्राप्त किया जा सके।

इस विचारधारा को लेकर वेदों, पुराणों और अनेक तांत्रिक ग्रन्थों की रचना ऋषि–महर्षियों ने की। युग का परिवर्तन होता गया और परिवर्तन के प्रभाव से मंत्रों का प्रभाव घटा। क्योंकि इन शक्तियों को प्राप्त कर प्राणी गलत कार्य करने लगे। अतः ऋषि–महर्षियों ने मंत्र को गुप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रखने की विधि अपनायी। इस विद्या को जीवित रखनें के लिए उन्होंने मंत्र की ऐसी गुप्त विधि का निर्माण किया–जिसे "यंत्र" कहा गया।

यंत्र के सूक्ष्म शब्द, अंक, त्रिकोण एवं भुपूर का महत्व

यंत्र के सूक्ष्म शब्द एवं समस्त अंक देवी–देवता हैं। जैसा वैज्ञानिक छात्र ही समझ सकते हैं कि "H.Q." का क्या तात्पर्य है। उसी प्रकार एक तांत्रिक ही समझ सकता है कि "क्रीं, श्री, ह्वीं, ऐं,गं और क्लीं" क्या है? पाठकों! ये सभी सूक्ष्म शब्द देवी–देवता के स्वरूप हैं। क्रीं का मतलब होता है काली, श्री का लक्ष्मी, ह्वीं का बंगलामुखी, एं का सरस्वती, गं का गणेश और क्लीं का तात्पर्य शेरावाली माँ दुर्गा होती है। इसी प्रकार यंत्रों के प्रत्येक अंक भी देवता हैं, जो यंत्र में लिखने पर अपना प्रभाव दिखाता है।

इतनी ही नहीं यंत्र के लाइन, त्रिकोण , भुपूर का बहुत विशाल और अद्भुत अर्थ है। जैसे "बिन्दु" का मतलब ब्रह्मा त्रिकोण का मतलब होता है शिव और भुपूर की तुलना "भंगवती" से की गयी है। उन यंत्राों का रेखाचित्र अनुभूतियों के सूक्ष्म लोक के और शक्ति कि विविध स्वरूपों के रेखा चित्रा है। और सूक्ष्म शसक्त रूप से कार्य करते हैं।

इनके ज्ञाता नहीं रहे, समझने वाले नहीं रहे, प्रयोग करने वाले नहीं रहे, इसलिए यह तकनीक इतनी सीमित हो गई है कि आज इसका अर्थ समझना दुशवार हो गया।

यंत्र–मंत्र की शक्तियाँ तुरन्त लाभ प्रदान करती हैं, इसमें कोई शंसय नहीं करना चाहिए।

यन्त्र लिखने का विधान

"श्रद्धा" यंत्रों का प्राण है। श्रद्धा सहित रहकर यंत्र का निर्माण करना जीवन है। यंत्रों में रेखाओं, बीजों को, बिजाक्षरों या मंत्रों को विधि विशेष द्वारा संयोज़ित किया जाता है।

यंत्र के प्रति सन्देह करने से यंत्र "मृत" हो जाता है और मृत वस्तु कोई भी कार्य नहीं कर सकती। यंत्र के बारे में यह भी कहा गया है कि –"कर गयो तो कसरत? चूक गए तो मौत"।

क्योंकि यंत्र लिखते समय, मंत्र की सिद्धि करते समय जरा सी भी असावधानी साधक को मौत के मुख में झोंक देती है। इसलिए यंत्र–मंत्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की साधना प्राप्ति हेतु किसी महासिद्धि गुरू से दीक्षा लेकर ही अथवा सिद्ध गुरू द्वारा प्राप्त–"सिद्धी गुरू कवच यंत्र" धारण करके ही यंत्र निर्माण या मंत्र की सिद्धि करनी चाहिए। यंत्र–मंत्र साधना की प्रयोग विधि पुस्तकों में जो वर्णित है, इसे मात्र "पथ दर्शक" ही समझें, सिद्धि दाता नहीं। सिद्धि तो गुरू ही प्रदान करा सकते हैं। यदि आप आवश्यकता समझें तो यंत्र–मंत्र की सिद्धि में हमसे परामर्श और सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। मैं मंत्र–यंत्र के प्रसार–प्रचार व विस्तार हेतु दृढ़ संकल्पित हूँ।

यंत्र मनुष्य की गुप्त शक्तियों का उदय करता है। यंत्र की रचना करते समय रेखाएँ शुद्ध भाव से खींचनी चाहिए, क्योंकि रेखाएँ ही मनुष्य के अन्तः करण की गुप्त शक्तियों को आंदोलित करती है। उस समय मन तथा बुद्धि के सहयोग से " भाव तत्व" का उदय होता है, तथा अन्तः करण निर्मल हो जाता है और साधक की मनोकामना पूर्ण हो जाती है।

यंत्र विद्या वेद और ईश्वरीय शक्ति का संमिश्रण

यंत्र! का मूल "वेद" है और वेदों का मूल तन्त्र जो शब्दों अंकों रेखओं आदि के रूप में "ईश्वरीय अवतार" के रूप में हम मानव को प्राप्त है। गोस्वामी तुलसी दास जी ने "रामचरित मानस" में कहा है कि कलियुग में प्राणियों के कष्टों को देखकर, उसे दूर करने के लिए जग हित की करुण कामना से प्रेरित होकर "श्री उमा–माहेश्वर" (शंकर–पार्वती) ने मंत्रों और यंत्रों की सृष्टि की। यद्यपि इन यंत्रों और मंत्रों के अंक, अक्षर, मतलब आदि अनमिल होते हैं, तथा इसका कोई अर्थ भी नहीं होता, तथापि"महेश" के प्रताप से ये मंत्र और यंत्र तत्काल अपना चमत्कारिक फल प्रकट करते हैं।

यंत्र–मंत्र की शक्तियों का "वेद" स्वतः प्रमाण है, इनको किसी से प्रमाणित होने की आवश्कता नहीं। अतः यंत्र–मंत्र की प्रमाणिकता भगवान शंकर के मुख से निकले होने के कारण सिद्ध है।

आइये! अब आपको कुछ महान, अद्भुत, प्रमाणिक–चमत्कारिक महालक्ष्मी यंत्रों के निर्माण एवं उनकी सिद्धि विधि की जानकारी प्राप्त कराता हूँ, जिसकी सिद्धि प्राप्त कर आप अपना जीवन सफल व सार्थक बना सकते हैं, सोये भाग्य को जगा सकते हैं और समस्त कामनाओं को प्राप्त कर सकते हैं।

चमत्कारिक रूप से अपार धन प्राप्ति हेतु "श्री यंत्र साधना"

"श्री यंत्र" की महानता– यह माता लक्ष्मी का अमोघ यंत्र है। साधक जब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह यंत्र स्वयं साधना कर या गुरू से प्राप्त कर, पूजा स्थल पर स्थापित कर नित्य धूप–दीप दिखाता है तो लक्ष्मी कुछ ही महीनों में उनके घर की दासी बन जाती है। श्री यंत्र की स्थापना करते ही दरिद्रता उसके घर से भाग जाती है और अनेकों सूत्रों द्वारा चारों तरफ से धन का आगमन होने लगता है तो साधक की समस्त कामनाओं की पूर्ति चमत्कारिक ढंग से होने लगती है।

सुविख्यात "श्री यंत्र" भगवती महालक्ष्मी त्रिपुर सुन्दरी का यंत्र है। इसे यंत्रराज अथवा सर्वश्रेष्ठ यंत्र भी कहते हैं। इस यंत्र में समस्त ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति तथा विकास दिखलाए गये हैं और साथ ही यह यंत्र साधक के मानव–शरीर का भी द्योतक है। इस श्री यंत्र के क्रमों तथा महत्व को लेकर अनेक ग्रन्थ लिखे गये हैं, पर इनमें कुछ तो केवल साधक को ही प्राप्त है और कुछ मुद्रित होने पर भी इस समय अलभ्य है।

इस लेख के साथ दिये हुए चित्र को देखिये–

चित्र–पेज 95

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यंत्र के सबसे भीतरी वृत्त में तृत्त के केन्द्रस्थ बिन्दु के चारों ओर नौ त्रिकोण हैं। इनमें से पांच त्रिकोण तो ऊर्ध्वमुखी हैं और चार अधोमुखी ऊर्ध्व मुखी पाँच त्रिकोण देवी के द्योतक हैं और शिव युक्ती कहे जाते हैं। अधोमुखी. चार त्रिकोण शिव के द्योतक और श्री कंठ कहे जाते हैं। पांचों शक्ति त्रिकोण ब्रह्माण्ड के विषय में पंचमहाभूत, पंचतन्मात्राओं, पंच–ज्ञानेन्द्रिय, पांच कर्मेंद्रिय तथा पंच प्राण के द्योतक है।

उपरोक्त वर्णित नौ त्रिकोण निराकार शिव की नौ मूल प्रकृतियों के द्योतक हैं। इन नौ त्रिकोणों के सम्मिश्रण से तैतीस छोटे–छोटे त्रिकोण बनते हैं। भीतरी वृत्त के बाहर आठ दल का कमल है और उसे बाहर सोलह दल का कमल है और सबके बाहर भुपुर है। इन्हीं के विषय में शंकराचार्य कृत आनन्द लहरी में लिखा है

चतुर्भीः श्री कण्ठैः शिव युवतीभिः पंचभिरपिः
प्रीतन्नाभिः शम्भेनिवभिरपि मूल प्रकृतिभिः।
त्र्यश्च त्वार्रिशद्भु सुदल कलाब्ज त्रिवलय
त्रिरेरवाभिः सार्ध तव भवन कोणाः परिणताः।।

यह तो हुआ श्री यंत्र का सधारण परिचय। अब हम इस यंत्र में स्थित नौ चक्रों का वर्णन करेंगे, जिससे उपर्युक्त वस्तुओं के विषय में अधिक स्पष्ट ज्ञान हो जाये। इन नौ चक्रों के विषय में "रूद्रयामल तन्त्र" नामक ग्रन्थ का निम्नलिखित छन्द अधिकतर उल्लिखित होता है–

बिन्दु त्रिकोण वसुकोण दशारयुग्मं मन्त्रवस्त्र नागदल संयुत षोडशारम्।
वृत्तत्र्यं च धरणी सदन त्र्यं च
श्री चक्रा राज मुदितं परदेवतायाः।।

अर्थात्– इस "श्री यंत्र" के नौ चक्र हैं इस क्रम से हैं–

1. बिन्दु 2.त्रिकोण 3. आठ त्रिकोणों का समूह 4. दस त्रिकोणों का समूह, 5. दस त्रिकोणों का समूह, 6. चौदह त्रिकोणों का समुह 7. आठ दलों वाला कमल 8. सोलह दलों वाला कमल 9. भूपुर।

इन नौ चक्रों का नाम यथाक्रम ये हैं–

1. सर्वानन्दमय 2. सर्वसिद्धि प्रद 3. सर्वरक्षाकर 4. सर्वरोग हर 5. सर्वार्थ साधक 6. सर्व सौभाग्य दायक 7. सर्व संक्षोभण 8. सर्वाशापरिपूरक 9. त्रैलोक्य मोहन।

अब इन चक्रों का यथा क्रम विवरण दिया जाता है–

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

1. इस चक्र को केन्द्रस्थ बिन्दु "भगवति त्रिपुर सुन्दरी" अथवा "ललिता" का रूप है। यह बिन्दु नाद तथा बिन्दु के तीन बिन्दुओं के संयोग से बना है। इन तीन बिन्दुओं का रहस्य " शाक्त तन्त्रों" के अवलोकन से ज्ञात होता है। तन्त्रों में "सुधा सिन्धु" तथा उसमें स्थित "मणीद्वीप" का बार–बार उल्लेख आता है। इसी मणिद्वीप में संयुक्त शक्ति–शंकर निवास करते हैं। यही मणीद्वीप इस बिन्दु द्वारा दिखलाया गया है।

प्रथम चक्र की अधिष्ठात्री ललिता अथवा त्रिपुर सुन्दरी अपनी आवरण देवताओं के भेद से कहीं तो षोडश नित्याओं में मुख्य मानी गयी है, कहीं अष्ट मातृकाओं में सर्वश्रेष्ठ कही गयी है और अष्ट वर्शिनी देवताओं की अधिनायिका लिखी गयी है। यह भेद प्रस्तार भेद से हुए हैं ओर यथाक्रम इन तीनों प्रस्तारों के नाम मेरू, कैलाश तथा भू: प्रस्तार हैं। यह श्री यंत्र उपासना के मुख्य प्रकार हैं।

2. यह चक्र एक त्रिकोण से बना है। इस त्रिकोण के तीनों कोण कामरूप, पूर्ण गिरी तथा जालन्धर का पीठ हैं और इनके बीच में औड्याण पीठ हैं। पहले कहे हुए तीनों पीठों की अधिष्ठात्री देवता कामेश्वरी,, ब्रजेश्वरी तथा भगमालिनी हैं और ये प्रकृति, महत् तथा अहंकार रूपा हैं।

3. इस चक्र के आठ त्रिकोणों की अधिष्ठात्री देवताएं वशिनी, कामेश्वरी, मोहिनी, विमला, अरूणा, जयिनी, सर्वेश्वरी तथा कौलिनी कमशः शीत, उष्ण, सुख–दुःख, इच्छा, सत्व, रत तथा तम की स्वामिनी हैं। इस चक्र का साधक गुणों पर अधिकार करने और द्वन्द्ववातीता होने से समर्थ होता है।

4. इस चक्र के दस त्रिकोणों की शक्तियां (सर्वज्ञा, सर्वशक्ति प्रदा, सर्वैश्वर्यप्रदा, सर्वज्ञानमयी, सर्व व्याधि नाशिनी, सर्वाधारा, सर्वपाप हरा, सर्वानंदमयी, सर्वरक्षा तथा सर्वेप्ष्ति फल प्रदा) कमशः रोचक, पाचक, पोषक, दाहक, प्लावक, क्षारक, उद्धारक, क्षोभक , जम्भक तथा मोहक बहिंवे कलाओं की अधिष्ठात्री हैं।

5. इस चक्र की दस अधिष्ठात्री देवताएँ दस प्राणों की स्वामिनी हैं। इन देवियों के नाम सर्वसिद्धि प्रदा, सर्व–सम्पत प्रदा, सर्वप्रियंकरी, सर्व मंगल कारिणी, सर्वकाम प्रदा, सर्वदुख विमोचनी, सर्वमृत्यु प्रशमनी, सर्वविघ्न निवारिणी, सर्वांग–सुन्दरी तथा सर्वसौभाग्य दायनी है।

6. इस चक्र के चौदह त्रिकोण चतुर्दश मुख्य नाड़ियों के द्योतक हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन नाड़ियों के नाम अलम्बुसा, कुहू, विश्वोदरी, वारणा, हस्ति जिह्वा यशोवती, पचस्विनी, गान्धारी, पूषा, शंखिनी, सरस्वती, इडा, पिंगला तथा सुषुम्ना हैं। इन नाड़ियों के अधिष्ठात्री देवियों के नाम ये हैं– सर्वसंक्षोभिणी, सर्वविद्राविणी , सर्वाकर्षिणी, सर्वाह्वादिनी, सर्वसम्मोहिनी, सर्वस्तम्भिनी, सर्व जम्भिनी सर्वशंकरी, सर्वरंजिनी, सर्वोन्मादिनी, सर्वार्थ–साधिनी, सर्वसम्पति पूरणी, सर्वमन्त्रमयी, सर्वद्वन्द्व क्षयं करी।

7. इस के चक्र आठ दल वचन, आदान, गमन, विसर्ग, आनंद, हान, उपादान तथा उपेक्षा की बुद्धियों के स्थानापन्न हैं। इनकी अधिष्ठात्री देवियाँ अनंग कुसुमा, अनंग मेखला, अनुंग मदना, तुरा, अनंग–रेखा, अनंग वेगिणी, अनंग मदानां कुशा तथा अनंग मालिनी है।

8. इस चक्र के 16 दलों का सम्बन्ध मन, बुद्धि, अहंकार, शब्द, स्पर्श, रूप रस, गन्ध, चित्त, धैर्य, स्मृति, नाम, वार्धक्य, सूक्ष्म शरीर, जीवन तथा स्थूल शरीर है और इनकी अधिष्ठात्री देवियां कामाकर्षिणी, बुद्धया कर्षिणी, अहंकार कर्षिणी, शब्दा कर्षिणी, स्पर्शा कर्षिणी, रूपा कर्षिणी, रसा कर्षिणी , गन्धा कर्षिणी, चित्ता कर्षिणी, धैर्या कर्षिणी, स्मृत्या कर्षिणी, नामा कर्षिणी, बीजा कर्षिणी, आत्मा कर्षिणी, अमृता कर्षिणी तथा शरीरा कर्षिणी है।

9. नवाँ चक्र भूपुर से बना है और इसके चार विभाग हैं। 1. षोडस दल कमल के बाहरी चारों वृत्तों के परे तड़ाग सदृश स्थल, 2. इस स्थल से लगी हुई पहली बाहरी–रेखा, 3. दूसरी बाहरी रेखा और 4. सबसे बाहर वाली रेखा। इन चारों विभागों में क्रमशः दस मुद्रा शक्तियाँ, दस दिक्पाल, आठ मातृकाएं तथा दस सिद्धियां स्थित हैं।

मुद्रा शक्तियों के नाम सर्वसंक्षोभिनी, सर्व विद्रविनी, सर्वाकर्षिणी, सर्वावेष कारिणी, सर्वोनमादिनी, महाकुंशा, खेचरी, बीज मुद्रा, महायोनि तथा त्रिखण्डिका है और इनका सम्बन्ध दस अधारों से है। इन आधारों का विषय अत्यन्त गहन है, जिसका वर्णन थोड़े शब्दों में नहीं किया जा सकता।

दस दिक्पालों का नाम तो पाठक गण जानते ही होंगे। इनकी पूजा का उद्देश्य विघ्न निवारण तथा साधक की रक्षा है।

अष्ट मातृकाएं ब्राह्मणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐन्द्री, चामुण्डा तथा महालक्ष्मी है और इनकी पूजा का लक्ष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य, पाप तथा पुण्य पर विजय है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दस सिद्धियां सुप्रसिद्ध अणिमा, महिमा इत्यादि हैं और इनका सम्बन्ध नौ रसों तथा निर्यात (भाग्य) से है।

पाठकों! श्री यंत्र का विषय अत्यंत गहन है और उपर्युक्त विवरण बड़ा ही संक्षिप्त है। यह महा यंत्र आजकल बाजारों में ताम्र पत्र , रजत पत्र एवं स्वर्ण पत्र में ही खुदे मिलते हैं, जिसमें से अधिकांश यंत्र अशुद्ध और खुदायी में अपूर्ण होते हैं, परिणाम स्वरूप इस यंत्र की साधना या पूजा करने वाले साधकों को इसका लाभ नहीं मिल पाता।

श्री विन्ध्य वासिनी क्षेत्र में अष्ट भुजा के मंदिर के पास "भैरव कुण्ड" नामक स्थान है। वहां पर एक खंडहर में बड़ा ही शुद्ध और विशालाकार श्री यंत्र रखा है। दूसरा "श्री यंत्र" फर्रूखावाद जिले के तिरवा नामक स्थान पर देखा गया है। तिरवा में एक बड़ा सा मंदिर है, जिसे अन्नपूर्णा का मंदिर कहते हैं। वास्तव में यह त्रिपुरा का मंदिर है। एक ऊँचे से चबूतरे पर संगमरमर पत्थर पर बहुत बड़ा श्री यंत्र बना है। ये दोनों यंत्र शास्त्रों के वर्णन के अनुसार बिल्कुल शुद्ध पाए और उसी यंत्र का मूल चित्र इस पुस्तक में प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसकी साधना कर साधक पूर्ण लाभ उठा सकें।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि "श्री यंत्र" में मात्र लक्ष्मी का निवास ही नहीं बल्कि समस्त देवी–देवताओं का वास है और समस्त कामनओं की पूर्ती कराने वाला यह महादिव्य यंत्र है। यह मंत्र सिद्ध किया हुआ मेरे कार्यालय से प्राप्त करें। अनेकों लोग चमत्कारिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

सिद्ध श्री यंत्र घर की पूजा स्थल पर स्थापित करने का लाभ

1. "श्री यंत्र" सिद्ध किया हुआ पूजन स्थल पर स्थापति कर नित्य ही स्नान से पवित्र होकर, धूप दीप दिखाने से साधक को निम्नलिखित लाभ प्राप्त होता है–

यंत्र राज को धूप– दीप दिखाकर किसी से भी मिलने जाएँ, और कोई भी कार्य कहें तो सामने वाला तुरंत कार्य कर देता है।

2. ऐसे साधकों के घर में चमत्कारिक ढ़ंग से चारों तरफ से धन का आगमन आरम्भ हो जाता है और लक्ष्मी उसके घर की दासी बनकर रह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाती है।

3. यंत्र राज का पूजन कर किसी अधिकारी या बहुत बड़े व्यापारी के सामाने जाकर अपनी इच्छा प्रकट करें।

अथवा प्रमोशन, स्थानतरण या कोई एजेन्सी प्राप्त करने की बात कहें, तो यह निश्चय ही स्वीकार कर ली जाती है।

4. यदि यंत्रराज़ को जल से धोकर, वह जल किसी को भी पिला देंगें तो वह आपके वश में हो जायेगा(या हो जायगी) यह अनुभूत प्रयोग है, तुरन्त इसका प्रभाव होता है।

5. यह दिव्य यंत्र स्थापित करने से दुकान या फैक्ट्री अथवा घर के ऊपर किए गये तांत्रिक प्रयोग समाप्त हो जाता है और व्यापार में आश्चर्य जनक वृद्धि हाने लगती है।

6. जिस लड़के –लड़की के विवाह में बिलम्ब हो रहा हो, उसे यंत्र का जल (यंत्र को धोकर) 41 दिन पिलाने से रिश्ता तय हो जाता है और मनपसन्द दूल्हे–दुल्हन से विवाह हो जाता है।

7. जिस घर में यह यंत्र स्थापित होता है, उस परिवार में सभी सदस्यों का दाम्पत्य जीवन सुखी रहता है।

8. यदि यंत्र धोकर जल रोगी को पिलाया जाये तो वह रोग मुक्त हो जाता है।

9. इस दिव्य मंत्र को धोकर, धोए हुए जल में 101 काली मिर्च डालकर, शत्रु के घर में छिड़क देने से शत्रु का सर्वनाश हो जाता है।

10. यदि इस यंत्र को धोकर, रजस्वला समय में स्त्री को तीन दिन तक पिलाया जाये तो वह अवश्य गर्भ धारण करती है और पुत्र ही होता है।

श्री यंत्र की साधना दिवाली की रात्रि में आरम्भ करें। रात्रि काल 9 बजे से पवित्र होकर, सफेद या पीले रंग के बिना सिले हुए वस्त्र धारण करें। बदन पर पीले रंग का शाल लपेट लें। अपने कमरें में पवित्र स्थान पर पूरब दिशा में आम की लकड़ी का बना सिंहासन स्थापित करें। सिंहासन पर लाल रंग का वस्त्र बिछावें। माता लक्ष्मी की तस्वीर सिंहासन पर रखें। इसके पश्चात् ताम्र पत्र या रजत पत्र अथवा स्वर्ण पत्र पर खुदा हुआ शुद्ध श्री यंत्र तांबे के प्लेट में सिंहासन पर रखें। सुगन्धित अगरबत्ती व देशी घी का दीपक जगावें। तत्पश्चात कम्बल के आसन पर बैठकर विधी विधान से श्री यंत्र का "षोड़शोपचार पूजन" योग्य वैदिक पंडित से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सम्पन्न करावें। पूजन सम्पन्न होने के पश्चात् ऋग्वेद में वर्णित–श्री सूक्त स्तोत्र का पाठ करें–

श्री सूक्त स्तोत्र पाठ

(श्लोक)

ऊँ हिरण्य वर्णा हरिणिं सुवर्णा रजतस्त्रजाम्।
चंद्रा हिरण्यमयी लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मी मनपगा मिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विंदेय गामस्वं पुरुषा नहम्।।
अश्व पूर्वा रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्।
श्रियं देवी मुपह्वे श्री र्मा देवी जुषताम्।।
कां सोस्मितां हिरण्य प्राकार म्रार्दा ज्वलंतीं तृप्तां तपर्यतीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवणा तामिहो पह्वे श्रियम।।

हिन्दी अनुवाद–हे भगवन् अग्नि देव! आप भूत भविष्य के महान ज्ञाता हैं। अतः मेरे लिए पीत वर्ण, स्वर्ण, रजत व श्वेत पुष्पमाला को आमंत्रित करें। जो मातेश्वरी लक्ष्मी अश्वत्थ में विराजित हैं, संसार के प्राणियों के समस्त ऐश्वर्य व कामना देने वाली, दिव्य प्रकाश वाली और जीवों को आश्रय प्रदान करती हैं, उन श्री रूप महालक्ष्मी देवी का मैं आवाहन करता हूँ। वह देवी मेरे गृह में सदैव प्रतिष्ठत रहें। जिन देवी के स्वरूप का वर्णन मन और वाणी से नहीं किया जा सकता, ऐसी शोभशाली, मंद मंद मुस्कुराने वाली, कोमल ह्रदय वाली, दीप्ति मान तथा भक्तों की समस्त इच्छाएँ पूर्ण करने वाली भगवती लक्ष्मी का मैं आवाहन करता हूँ।

(श्लोक)

चंद्रां प्रभाशां यशसां ज्वलंती श्रियं लोक देव जुष्टा मुदाराम्।
तां पदिमनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्चतां त्वां वृणे।।
आदित्य वर्णो तसोऽधि जातो वनस्पति स्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसानु दन्तु या अन्तरा याश्च ब्राह्मया अलक्ष्मीः।।

हिन्दी अनुवाद– चंद्र प्रकाश के समान, अपनी ही कांति व कीर्ति से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शोभायमान्, देवताओं द्वारा पूजित, कमर पर विराजित, शरणागत वत्सला हे महालक्ष्मी भगवती। मैं आपकी शरणों में हूँ। आप मेरी दरिद्रता को दूर करें। हे भगवती! आपके सूर्य के समान तेज से एक विशेष प्रकार का वृक्ष पैदा हुआ था। उसमें बिना पुष्पों के ही फल लगते थे। उसके पश्चात् आपके कर कमलों से बिल्व वृक्ष की उत्पत्ती हुई। उसी बिल्व वृक्ष का फल मेरी दरिद्रता को दूर करें और समस्त कामनाओं की पूर्ती करें।

(श्लोक)

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्टेऽस्मिन कीर्ति मृद्धि ददातु मे।।
क्षुत्पि पासामलो ज्येष्ठाम लक्ष्मीं नाशयाम्यहम।
अभूतिम समृद्धि च सर्वा निर्णुद में गृहात्।।
गंधद्वारां दुराधर्षा नित्य पुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम्।।
मनसः कामना कूतिं वाचः सत्यमशी महि।
पशूना रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।

हिन्दी अनुवाद–हे धन देने वाली श्री मातेश्वरी! आप मुझे इन्द्र, कुबेर आदि देवताओं जैसा तेज, यश, वैभव, प्रदान करें, क्योंकि मैं सांसारिक जीव होने के कारण इन पदार्थों का अभिलाषी हूँ। लक्ष्मी जी की बड़ी बहन व भूख–प्यास रूपी दरिद्रा देवी का मैं त्याग करता हूँ। हे महालक्ष्मी देवी! आप मेरे सभी कष्टों को दूर करके, मेरे गृह में ऐश्वर्य व धन की वृद्धि करें। सुगंधित पुष्पार्पण से ही प्रसन्न होने वाली, किसी से भी प्रभावित न होन वाली, धन–धान्य व समृद्धि प्रदान करने वाली, सभी जीवों की स्वामिनी, लक्ष्मी देवी का मैं आवाहन करता हूँ। हे विष्णु प्रिया आपकी कृपा से मुझे पशु (गौ) व अन्न अदि पदार्थों और यश व धन की प्राप्ति हो।

(श्लोक)

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पदममालिनीम्।।
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लींतं वसं मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी अनुवाद–यहां कदर्म ऋषि से प्रार्थना की गई है कि हे कदर्म! आप मेरे गृह में लक्ष्मी को निवास करने के लिए प्रेरित करें। हे वरूण देव! आप मनोहर पदार्थ उत्पन्न करें। लक्ष्मी पुत्र चिक्लीत्। आप अपनी माता व दिव्य गुणों से युक्त सभी को आश्रय प्रदान करने वाली देवी महालक्ष्मी सहित मेरे गृह में निवास करें। (पाठकों! अनंद, कदर्म, चिक्लीत एवं श्रीत–ये माता लक्ष्मी के चार पुत्र हैं।)

नोट– साधकों! "श्री सूक्त पाठ" समाप्त होने के पश्चात् तुलसी की माला से नीचे लिखित मंत्र का 41 रात्रि में तीन लाख एकावन हजार मंत्र जप सम्पन्न करें–

।। ऊँ श्रीं नमः।।

अन्तिम रात्रि में एकावन माला मंत्र जप करते हुए हवन में आहुति डालें। तत्पश्चात् महालक्ष्मी की आरती करें और पुस्तक के अंतिम पृष्ठ में लिखित आरती प्रार्थना गावें। तत्पश्चात् साधना अनुष्ठान का विसर्जन करें और श्रीं यंत्र को घर की पूजा स्थली में सदैव के लिए स्थापित कर दें और नित्य ही सुबह–शाम उसके समीप धूप–दीप जगावें। यंत्र सिद्ध कर स्थापना करने के बावजूद भी नित्य ही स्नान से पवित्र होकर एक माला मंत्र जप (ऊँ श्रीं नमः) करते रहें।

तत्पश्चात् किसी भी मंगलवार को शुद्ध श्री यंत्र को षाडशोपचार पूजन कर, 21 माला मंत्र जप सम्पन्न कर किसी दुःखी व्यक्ति को यंत्र प्रदान कर देंगे तो उसके घर में भी वे सभी लाभ प्राप्त होंगे, जो इसमें वर्णित हैं।

समस्त ऐश्वर्य प्राप्ति हेतु महालक्ष्मी यंत्र साधना

महालक्ष्मी यंत्र कथा– साधकों! "महालक्ष्मी यंत्र साधना" की एक मनोहर दिव्य कथा पौराणिक "लक्ष्मी सूक्त ग्रन्थ" में वर्णित है, जो इस प्रकार है–

एक बार धर्मराज युधिष्ठिर ने हाथ जोड़कर विनम्र शब्दों में भगवान् श्री कृष्ण से प्रार्थना की हे भगवन्! आप दीन रक्षक, कृपालु, भक्त वत्सल हैं। कोई ऐसा सरल उपाय हमें बताएँ, जिससे हमारा नक्ष्ट राज्य पुनः प्राप्त हो तथा महालक्ष्मी की हम पर अति कृपा हो।

भगवान वासुदेव बोले, हे राजन! जब दैत्य राजा बलि राज किया करते थे, उस समय उनके राज्य में सम्पूर्ण प्रजा प्रसन्न व सुखी थी और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धन–धान्य की प्रचुरता थी। अभाव व कष्ट का कहीं नाम तक नहीं था। बलि मेरा भी प्रिय भक्त था। उसने एक बार सौ अश्वमेद्य यज्ञ करने की कठोर प्रतिज्ञा की। उनमें से जब 99 यज्ञ हो चुके और मात्र एक यज्ञ ही शेष था, तब इन्द्र को अपना सिंहासन छिन जाने का भय हुआ कारण कि 100 अश्वमेद्य यज्ञ करने वाला इन्द्रासन का अधिकारी होता है। इस भय के कारण वह रूद्रादि देवताओं के पास पहुँचा, परन्तु उसका वे कुछ भी उपाय नहीं कर सके। तब समस्त देवता इन्द्र को साथ लेकर क्षीर सागर में शेष शय्या पर विराजमान श्री विष्णु भगवान के पास गए। इन्द्र ने अनेकों वेद मंत्रों से भगवान की स्तुति कर अपना दुख भगवाना विष्णु को सुनाया। विष्णु बोले कि इन्द्र, तुम घबराओं मत, तुम्हारे इस भय का मैं अन्त कर दुँगा। यह आश्वासन देकार दन्हें पुनः इन्द्र लोक भेज दिया।

भगवान स्वयं वामन का अवतार धारण कर सौवां यज्ञ कर रहे राजा बलि के यहां पहुंचे। राजा से उन्होनें मात्र तीन पग पृथ्वी दान में मांगी। दान का संकल्प हाथ में लेकर भगवान ने एक पैर से सारी पृथ्वी नाप ली। दूसरे पैर से अंतरिक्ष और तीसरा चरण राजा क़े सिर पर रख दिया जिससे राजा बलि सब कुछ हार गए और समस्त ऐश्वर्यों से विहीन हो गए। इतना होने पर भी विष्णु राजा बलि से वर मांगने को कहा। तब वर रूप में राजा बलि ने कहा कि कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी, चतुदर्शी एवं अमावस्या की रात्रि में प्राणी यदि अपने गृह में – सिद्ध महालसक्ष्मी यंत्र का पूजन करे तो उस प्राणी के गृह में आपकी प्रिया लक्ष्मी दासी बनकर रह जावें, अर्थात् उनके घर में समस्त धन, वैभव, ऐश्वर्य प्राप्त हो जाये।

इस प्रकार वर मांगने पर भगवान विष्णु ने कहा कि हे राजन्! यह वर हमने तुम्हें दिया। इस दिन महालक्ष्मी यंत्र की स्थापना करने वाले के घर में लक्ष्मी सदैव निवास करेंगी और अन्त में वह मेरे धाम में आश्रय पाएगा। यह कहकर भगवान् विष्णु ने राजा बलि को पाताल लोक का राज्य देकर इन्द्र का भय दूर किया।ऐसा माना जाता है कि तभी से – "सिद्ध महालक्ष्मी यंत्र" की स्थापना मानव प्राणी अपने गृह में करते आ रहे हैं। जिनके गृह में इस महायंत्र की स्थापना होती है उनके घर में कभी लक्ष्मी का अभाव नहीं होता।

"महालक्ष्मी यंत्र" की साधना से लाभ

1. "श्री सूक्त महाग्रन्थ" में वर्णन मिलता है कि जो प्राणी अपने गृह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में– सिद्ध महालक्ष्मी यंत्र की स्थापना करता है, उनके गृह में धन का अभाव नहीं होता।

2. इस यंत्र की साधना करने से या सिद्ध यंत्र गुरू से प्राप्त कर धारण करने से साधक का व्यक्तित्व अत्यधिक आकर्षक एवं भव्य हो जाता है। साधक के इर्द–गिर्द एक तेज चक्र आभा मण्डल निर्मित हो जाता है, जिससे उसके आस–पास के लोग स्वतः उसकी ओर आकर्षित होते हैं और उसकी हर आज्ञा का ना–नुच किए बिना पालन करते हैं।

3. यह यंत्र साधना सिद्ध होते ही या यंत्र धारण करते ही व्यक्ति की दरिद्रता, रोग, शत्रुभय, ऋण आदि की स्थिति स्वतः ही नष्ट हो जाती है।

4. नौकरी, इंटरव्यू, परीक्षा में निश्चित सफलता मिलती है।

5. व्यवसाय में दिन दूना रात चौगुना तरक्की होने लगती है और अगर वह व्यक्ति नौकरी पेशा करने वाला हो तो उसकी पदोन्नपति शीघ्र होती है।

6. जन्म कुंडली में निर्मित दुर्योग फलहीन हो जाते हैं, अगर दुर्घटना एवं अकाल मृत्यु का योग हो तो वह भी अल्प हो जाता है, एक प्रकार से नष्ट ही हो जाता है।

7. साधक जिस कार्य में हाथ डालता है, उसमें विजय ही प्राप्त करता है।

8. ऐसा व्यक्ति समाज में सम्मानीय एवं पूजनीय हो जाता है। उच्च कोटि के मंत्रीगण एवं अधिकरी भी उसकी बात को मस्तक पर धारण करते हैं। वह सभी को प्रिय होता है। जीवन में उसे किसी चीज को अभाव नहीं रहता।

9. उसके सामने सभी सफलताएँ चरण चूमती हैं।

10. उसके साथ–साथ उसका पारिवारिक जीवन अत्यन्त सुखी हो जाता है। यदि परिवार में कोई क्लेश व्याप्त हो, तो वह भी समस्त हो जाता है।

11. उसकी समस्त इच्छाएं और कामनाएं पूर्ण होती हैं और वह स्वयं भी आश्चर्य चकित हो जाता है।

ऊपर बताई गई स्थितियाँ तो मात्र सूर्य को रोशनी दिखाने के समान हैं। वास्तच में तो वह अपने आप में ही अद्वितीय तेजस्वी युग पुरुष बन जाता है, साथ ही साथ वह समस्त ज्ञान–विज्ञान में पारंगत हो। वर्तमान पीढ़ी का मार्ग दर्शन करने मेंसक्षम हो जाता है। उसे दुनिया दिव्य पुरुष की संज्ञा से विभूषित कर आदर भाव से देखती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महालक्ष्मी यंत्र साधना विधि

इस महायंत्र की साधना दिवाली, दशहरा अष्टमी की रात्रि या किसी भी मंगलवार की रात्रि में आरम्भ कर सकते हैं।

"श्री यंत्र" साधना के अनुकूल ही सिंहासन की स्थापना करें। वैदिक योग्य पंडित द्वारा षोड़शोपचार पूजन सम्पन्न करावें। पूजन आरम्भ से पूर्व सिद्ध गुरू द्वारा प्राप्त–सिद्ध गुरू कवच यंत्र" गले में धारण कर लें। पूजन के पश्चात् नीचे वर्णित यंत्र का निमार्ण भोजपत्र पर रक्त चन्दन की स्याही से अनार की कलम द्वारा करें–

चित्र

श्री महालक्ष्मी यंत्रम्

निर्मित यंत्र को चांदी कें ताबीज में भरकर सूती लाल डोरे डालकर सिंहासन पर स्थापित करें। इसके बाद महालक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करें–

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महालक्ष्मी स्तोत्र पाठ

(श्लोक)

पद्मासेन पद्मिनी पद्म पत्रे पद्मदला चताक्षि।
विश्व प्रिये विश्वमनोऽनुकूले त्वत्पाद पद्मं मयि सन्निधत्स्व।।

हिन्दी अनुवाद–हे मातेश्वरी महालक्ष्मी! आप कमल मुखी, कमल पुष्प पर विराजित, कमल पुष्पों को चाहने वाली, कमल दल के समान नेत्रों वाली हैं। सृष्टि के सभी जीव आपकी कामना करते हैं। आप उन्हें मनोनुकूल फल देने वाली हैं। हे देवी! आपका चरण–कमल सदैव मेरे हृदय में स्थित हो।

(श्लोक)

पद्मानने पद्म ऊरू पद्माक्षी पद्म सम्भवे।
तन्मे भजसिं पद्माक्षी येन सौख्यं लभाम्यहम्।।
अश्वदायी योदायी धदायी महाधने।
धनं में जुष तां देवी सर्वाकामाश्च देहि मे।।
पुत्र पौत्र धनं धान्यं हस्तयश्वा दिगवेरथम्।
प्रंजानां भवसी माता आयुष्मंतं करोतु मे।।

हिन्दी अनुवाद–हे विष्णु प्रिया, भक्तवत्सला देवी! आपका मुखार विन्द, ऊरू भाग, नेत्र आदि कमल के समान है। आपकी उत्पत्ती कमल से ही हुई है। हे कमल नयनी! मैं आपका स्मरण करता हूँ। आप मुझ पर कृपा दृष्टि रखें। अश्व, गौ, धन देने से समर्थ देवी आप मुझे धन, मान, यश, प्रगति व सफलता प्रदान करें और मेरी सभी कामनाओं को पूर्ण करें।

(श्लोक)

धनमांग्नि धनं वायुर्धनं वसु।
धनभिंद्रो वृहस्पति र्वरूणां धन मस्तु मे।।
वैनतेय सोमं पिव सोमं पिवतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनी मह्मं ददातु सोमिनः।।

हिन्दी अनुवाद–हे देवी! आप सृष्टी जीवों की माँ हैं। इससे मुझे पुत्र,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पौत्र, धन, धान्य, हाथी, घोड़े, गौ, बैल, रथ आदि से युक्त कर दीर्घायु प्रदान करें। हे महालक्ष्मी माँ! आप मुझे अग्नि, धन, वायु, सुर्य, जल, बृहस्पति, वरूण आदि के द्वारा धन की उपलब्धि करायें। वैनतेय पुत्र गरूड़ जी तथा वृत्रासुर के वधकर्ता इन्द्र आदि अमृत पीने वाले मुझे अमृत युक्त धन प्राप्त करें।

नोट–महालक्ष्मी स्तोत्र पाठ करने के पश्चात् साधक तुलसी की माला से नीचे लिखित मन्त्र का जप आरम्भ करें।

।। ऊँ ऐं ह्वीं श्रीं क्लीं जगत्प्रसूत्ये महालक्ष्मी नमः।।

उपरोक्त मंत्र का 21 रात्रि में एक लाख एकावन हजार मंत्र जप सम्पन्न करें। अन्तिम रात्रि में 21 माला मंत्र जप करते हुए हवन में आहुति डालें। नित्य ही जप समाप्ति के बाद आरती करें। अन्तिम दिन आरती करने के बाद साधना अनुष्ठान का विसर्जन कर, यंत्र को प्रणाम कर गले में धारण कर लें। गुरू कवच यंत्र को बहती दरिया में विसर्जित कर दें।

उपरोक्त विधि से यंत्र साधना सम्पन्न कर, किसी भी मंगलवार को उपरोक्त विधि से यंत्र निमार्ण कर, षोड़शोपचार पूजन सम्पन्न कर 21 माला मंत्र जप करके जिसे भी यंत्र प्रदान करेंगे, उसे भी वही फल प्राप्त होगा जो फल साधना करने वाले को प्राप्त होता है।

सिद्ध "वस्तु यंत्र" द्वारा लक्ष्मी प्रवेश विधि

पाठकों! मनुष्य मकान बनवाता है या बना–बनाया फ्लैट खरीदता है अथवा दुकान खोलता है, फैक्ट्री बनाते हैं, या कहीं किसी कॉमर्शियल कॉम्पलेक्स में जगह लेकर शो रूम खोलते हैं, उसे सजाने संवारने आदि के लिए काफी पैसा खर्च करते हैं। फिर भी न तो घर में सुख मिलता है और न ही बिजनेस चल पाता है। वास्तु शांती की सभी धार्मिक विधियाँ लोग अपनाते हैं, फिर भी घर में न धन–दौलत की बरकत होती है न कुटुम्बियों में परस्पर प्रेम का भाव। नित्य कोई न कोई झगड़ा लगा रहता है, कोई न कोई बीमार रहता है– ऐसा क्यों?

ऐसा इसलिए कि भवन का निमार्ण "वस्तु शास्त्र" के अनुसार लोग नहीं कराते हैं।

लेकिन आज के अस्थिर एवं मंहगाई के युग में पूर्णयता वास्तु शास्त्र के नियमानुसार निर्माण करवाना किसी के लिए भी संभव नहीं है। स्वतंत्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बंगला या मकान बनवाने के बजाय सोसाइटी में फ्लैट लेना ही आज श्रेयस्कर समझा जाता है–इस वास्तविकता को नकारा नहीं जा सकता। कभी श्मशान, कब्रिस्तान रह चुकी भूमि पर आज गगनचुंबी इमारतोंका निमार्ण हो रहा है, ऐसी इमारतों में रहने वालों या काम करने वालों को सुख, शांती और आनंद कैसे मिलेगा ?

अतः इस समस्या के निवारण हेतु वास्तु ग्रंथ में– "सिद्धि वास्तु यंत्र" द्वारा लक्ष्मी प्राप्ति का साधन दर्शाया गया है। इस यंत्र को निवास स्थान में, दुकान, फैक्ट्री, दफ्तर आदि में स्थापित करने से वास्तु दोष समाप्त हो जाता है और व्यक्ति प्रगति और सफलता प्राप्त कर रहे हैं। आप भी आजमा कर देखें, चकित रह जायेंगे।

सिद्ध वास्तु लक्ष्मी यंत्र साधना विधि

इस दिव्य यंत्र की साधना किसी भी मंगलवार को आरम्भ कर सकते हैं। मंगलवार के दिन प्रातः काल 7 बजे के अंदर स्नान से पवित्र होकर अपने कमरे में पवित्र स्थान पर पूरब दिशा में आम की लकड़ी से बना सिंहासन स्थापित करें। सिंहासन पर माता लक्ष्मी की तस्वीर लाल आसन बिछाकर स्थापित करें। सिद्ध गुरू से प्राप्त किया यंत्र गले में धारण कर लें। इसके पश्चात् धूप और देशी घी का दीपक जलावें। भगवती लक्ष्मी "षोड़शोपचार पूजन" सम्पन्न कर नीचे वर्णित यंत्र का निमार्ण करें। यंत्र निर्माण भोज पत्र पर कुशा जड़ की कलम से सफेद चन्दन द्वारा करें।

श्री वास्तु लक्ष्मी यंत्र

यंत्र निर्माण कर यंत्र को लाल कपड़े में लपेट कर तांबे की प्लेट में माता लक्ष्मी की तस्वीर के समक्ष सिंहासन पर रख दें। लाल कपड़े में लपेटने से पहले यंत्र को तांबे के ताबीज में भर दें। इसके पश्चात् नीचे लिखित मंत्र को दो लाख एकावन हजार मंत्र जप तुलसी की माला से करें–

ऊँ श्री महाक्ष्म्यै नमः निर्मित भवन अनिष्ट–
वास्तु अनिष्ट शोधयामि नमः स्वाहा।

अन्तिम दिन मंत्र जप समाप्त होने के पश्चात् 11 माला मंत्र जप करते हुए हवन में आहुति डालें। यह सम्पूर्ण मंत्र जप 41 दिन में ही पूर्ण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने का विधान है। जप करने के पश्चात् नित्य ही आरती किया करें। अन्तिम दिन आरती के बाद अनुष्ठान का विसर्जन करें। विसर्जन के पश्चात् निर्मित यंत्र को वहां स्थापित कर दें जिस भवन में वास्तु निमार्ण दोष हो। उपरोक्त विधि से यंत्र निर्माण कर जिसे भी प्रदान करेंगे, उसके गृह का भी वास्तु दोष अनिष्ट समाप्त हो जायेगा और धन का आवागमन तीव्र गति से आरम्भ हो जायेगा और व्यवसाय में चमत्कारिक वृद्धि होने लगेगी।

शाबर मंत्र द्वारा लक्ष्मी की प्राप्ति

पाठकों! जो व्यक्ति विधि–विधान से महालक्ष्मी का पूजन करने में, यंत्र सिद्ध करने में असमर्थ है।, वे मात्र "शाबर मंत्र" का जप करके ही लक्ष्मी प्राप्त कर सकते हैं–

सर्वप्रथम सिद्ध गुरू से सिद्ध शाबर कवच यन्त्र प्राप्त कर गले में धारण कर लें, तभी यह मन्त्र जप आरम्भ करें, अन्यथा सफलता नहीं मिलेगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऋद्धि-सिद्ध प्राप्ति हेतु शाबर मंत्र

ऊँ क्रीं श्री चामुण्डा सिंह वाहिनी बीस हस्ती भगवती रतन मंडित सोनल की माल, उत्तर पथ में आप बैठी हाथ सिद्ध वाचा, ऋद्धि–सिद्धी धन–धान्य देहि––देहि कुरु–कुरु स्वाहा।

नोट– उपरोक्त मंत्र की एक भाला नित्य ही जप करने से ऋद्धि–सिद्धि की प्राप्ति होती है।

व्यवसाय वृद्धि हेतु शाबर मंत्र

श्री शुक्ले महा शुक्ले कमल दल निवासे श्री महालक्ष्मी –नमो नमः।।

लक्ष्मी माई सबकी सवाई, आओ चेतो करो भलाई, ना करो तो सात समुद्रों की दुहाई, ऋद्धि–सिद्धि ना देवो तो नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दुहाई।

नोट– इस मंत्र का एक माला नित्य जप करने से व्यवसाय में अपार वृद्धि होती है।

अपार धन प्राप्त करने हेतु शाबर मंत्र

विष्णु प्रिया लक्ष्मी, शिव प्रिया सती से प्रकट हुई, कामेक्षा भगवती आदि शक्ति युगल मूर्ति महिमा अपार, दोनों की प्रीती जाने संसार, दुहाई कामख्या की, आय बढ़ा व्यय घटा, दया कर माई, ऊँ नमः विष्णु प्रियाय, ऊँ नमः– शिव प्रियाय, ऊँ नमः कामाक्षाय ह्वीं ह्वीं श्रीं श्रीं फट् स्वाहा।

नोट– उपरोक्त मंत्र का नित्य ही एक माला जप करते रहने से अपार धन की प्राप्ति होती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लक्ष्मी आगमन के सरल सूत्र

1. यदि व्यापारिक संस्थान से दूर बहती दरिया का नजारा दिखाई पड़ता रहता हो तो व्यापारिक लेन–देन को बढ़ावा देता है। यदि वह उत्तर, पूरब में, अथवा उत्तर–पूर्व कोण में होता है तो भारी लेन–देन होता रहता है, ऑर्डर मिलते रहते हैं। पेमेंट समय पर होता रहता है।

2. दूर–दराज खड़े या बहते पानी के नजारे यदि मकान, फैक्ट्री के ऊपरी भाग में दर्पण लगाकर परछाई दर्पण में आए तो व्यवसाय में घाटे का प्रश्न ही नहीं उठता।

3. व्यवसायिक प्रतिष्ठान के कुछ दूर दिखाई पड़ता हुआ खड़ा पानी स्थिर लक्ष्मी देता है, उससे ठोस धन मिलता है। बहता पानी व्यापारिक लेन–देन रूपी आय देता है, जो आता व जाता रहता है। आय व लेन–देन की सर्कुलेशन बना रहता है।

4. यदि फैक्ट्री, व्यापार अदि ठीक नहीं चल रहा हो, तो मुख्य दरवाजे के सामने पानी का फव्वारा जरूर लगा दें। घंटे, दो घंटे सुबह और दोपहर बाद इस फव्वारे को चलाएं, तो खूब आय होती है।

5. कारोबार ठीक नहीं रहने पर मुख्य दरवाजा उत्तर, पश्चिम या पूरब की ओर बनाएं। पानी उछालाता फव्वारा जरूर लगाएं। इससे कारोबार ठीक हो जायेगा। मजबूरी में मग से ऊपर की ओर पानी दरवाजे के ठीक सामने उछालकर गिरा दें।

6. मुख्य दरवाजे के ऊपर मछली की, या आँखों की भौहों की नीली व काली पेंटिंग भी बन्द कारोबार को चलाने में बड़ी सहायता करती है।

7. दरवाजे से खड़ी ढ़लान या खड़ी सीढ़ियों से नीचे न उतरें। दौलत व आय खड़ी ढ़लान या खड़ी सीढ़ियों के रास्ते बाहर निकल जाती है।

8. दरवाजे के सामने हल्की ढ़लान या दरवाजे के आगे ऊँची चबूतरा या ऊँची उठान हो तो कारोबार, फैक्ट्री आदि की गरमाई ब्लाक हो जायेगी। चलता काम बन्द हो जायगा।

9. मुख्य दरवाजे या दहलीज पर रंग बिरंगे पेंट, छोटे दर्पण, घंटी, घूमती रंग–बिरंगी लाइट लगाने से, उस पर आगन्तुक की निगाहें पड़ती हैं, जिससे बन्द कारोबार चल पड़ता है।

10. खिड़की पर लाल गुलाब का फूल या प्रिज्म द्वारा रोशनी की सात रंगों में बाँट देना या अंग्रेजी के लिखे हुए अक्षर नियोन लाईट में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चमकना, जलती–बुझती लाईटों की झिलमिलाहट फर्श पर गरमाई लाकर कारोबार चकमा देती है।

11. दरवाजे के बाहर यदि लाल ईंटों को बिछाकर गोल रास्ता देढ़ा–मेढ़ा बना दिया जाए, जो दरवाजे जक पहुँचता हो तो फर्श पर गरमाई आती है और बन्द करोबार चल पड़ता है।

12. यदि पास में कब्र, श्मशान, चर्च आदि हैं, तो उसके चारों ओर से दीवार से बन्द करवा दें, या अपनी फैक्ट्री की दीवार ऊँची करवा दें। उस तरफ के खिड़की, दरवाजे बन्द करवा दें। हो सके तो दर्पण लगा दें ताकि उस तरफ से आने वाली मारक, घातक व खतरनाक पावर आपके बिजनेस को तबाह न कर सकें। यह बचाव करना बहुत जरूरी है;

13. कई बार दौलत आकाश मार्ग से घातक, मारक हवाओं द्वारा भी चुरा ली जाती है। इससे अपनी फैक्ट्री, दुकान, मकान को बचाने के लिए छत के कोने पर बल्व की रोशनी डालें। बचाव हो जायेगा। उत्तरी या पूर्वी भाग में पिरामिंड लगा सकते हैं या फिर कोई झोंपड़ी आदि बनवा दें।

बारहों राशियों के अनुसार लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र

साधक यदि जन्म पत्री में अंकित राशि के अनुसार या नाम राशि के अनुसार–महालक्ष्मी मंत्र का जाप नित्य ही तुलसी की माला से एक माला जप करता है, तो धन–धान्य, सुख एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

राशियों के नाम	*वर्णाक्षर*	*जप हेतु मंत्र*
मेष	चू चे चो ला ली लू ले लो अ	ऊँ ऐं क्लीं सोः
वृष	इ ए ए ओ वा वी वू वे वो	ऊँ ऐं क्लीं श्री नमः
मिथुन	का की कू घ ड. छ के को हा	ऊँ ऐं सोः नमः
कर्क	ही हू हे हो डा डी डू डे डो	ऊँ ऐं क्लीं श्री नमः
सिंह	मा मी मू मे मो टा टी टू टे	ऊँ ह्वीं श्री ह्सो नमः
कन्या	टो पापी पू ष ण ठ पे पो	ऊँ श्रीं ऐं सोः नमः
तुला	रा री रू रे रो ता ती तू ते	ऊँ ह्वीं क्लीं श्री नमः
वृश्चिक	तो ना नी नू ने नो या यी यू	ऊँ ऐं क्लीं सोः नमः
धनु	ये यो भा भी धा फा ढ़ा भे	ऊँ ह्वीं क्लीं सो नमः
मकर	भों जा जी ख खू खे खो गा गी	ऊँ ऐं क्लीं ह्वीं श्री नमः
कुंभ	गू गे गो ा सी सू से सो दा	ऊँ ह्वीं ऐं श्री नमः
मीन	दी दू थ झ ञ दे दो चा ची	ऊँ ह्वीं क्लीं सोः नमः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूठी लक्ष्मी को मनाकर घर कैसे लाएं?

पाठकों! आपके बनाए भवन, मकान, दफ्तर आदि में लक्ष्मी की चहल–पहल सदैव बनी रहे, यही जानकारी देना इस शीर्षक का मूल उद्देश्य है। इसके लिए आपको लक्ष्मी उपासना और अन्य वास्तु नियम सिद्धान्तों के अतिरिक्त कुछ उन्य उपाय भी करने होंगे। इन्हीं की जानकारी इस प्रकरण में हम आपको देने जा रहे हैं। सर्वप्रथम दिशाओं और कोणों को पहचानिए और वास्तु नियमानुसार उनका संवर्द्धन करें–

पूर्वी भाग–यह भाग मालिक और पुरुष सन्तान पर अपना प्रभाव डालता है।

(क) प्लांट, मकान, बिजनेस सेन्टर, फैक्ट्री, कोलाबोरेशन, दुकान का पूर्वी भाग ज्यादा खुला व नीचा हो तो पुत्र सन्तान होकर वंश वृद्धि होती है। उन्हें धन दौलत व सुखी जीवन मिलता है। ऐसे स्थान पर लक्ष्मी सदैव निवास करती है।

(ख) पूर्व की ओर चार दीवारी नीची रखें तथा भवन की कोई भी दीवार या छत उसे न छुए। इससे यश मान, सम्मान, प्रतिष्ठा व लोकप्रियता मिलती है।

(ग) उस खुले भाग का फर्श नीचा रखें तथा भवन की कोई भी दीवार या छत उसे न छुए। इससे फर्श पर गरमाई लाकर भारी दौलत लाती है।

(घ) पूर्व की ओर से नाली से पानी निकले तो इससे जो फर्श की गरमाई पैदा होती है, उससे भारी नाम, यश व लोकप्रियता मिलती है।

(ड.) पूर्व दिशा की दीवार पश्चिम दीवार से नीची व पतली हो तो वंश बढ़ता है। दीवार के ऊपर से उठने वाली गरमाई संतान के लिए स्थायी जीवन देती है।

(च) पूर्व दिशा की ओर बरामदा झुका हुआ व ढ़लानदार बने तो लोकप्रियता मिलती है। यश, मान, सम्मान के चर्चे दूर–दूर तक होते हैं। लोग दांत तले उंगली दबाए अचम्भा करते रह जाते हैं कि यह क्या हो गया? दिन–रात प्रशंसा के पुल बांधते चले जाते हैं।

(छ) पूर्व दिशा की उत्तरी भाग में कुआं, नल या अन्डर–ग्राउन्ड टैंक हो तो यह गरमाई भारी दौलत देती है। इसके दक्षिण भाग में आग हो तो खूब दौलत बरसेगी। आप पुकार उठेंगें–"खुदा जब देता है तो छप्पड़ फाड़ कर देता है। "लौट कर लक्ष्मी घर को आई गई, सभी के मुख से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसा सुनने को मिलेगा।

(ज) यदि आपको अपने मकान, प्लाट फैक्ट्री के पूर्व में प्लाट या मकान अथवा फैक्ट्री मोल मिलती है, जो तुरन्त ले लीजिए। इससे आपके प्लाट या फैक्ट्री की गरमाई दस गुणा से भी ज्यादा बढ़ जायेगी और आपके पास सम्मान, धन, यश और लोकप्रियता का अंबार लग जायेगा। आप यही कहेंगे कि—"रूठी लक्ष्मी पुनः प्रसन्न होकर घर आ गयी।"

(झ) फर्श की गरमाई का ज्यादा बढ़ जाना—ज्यादा सुखी व धनी जीवन की "गारन्टी" है।

दक्षिण भाग—

(क) अपने प्लाट, मकान, बिजनेश सेन्टर, फैक्ट्री, कोलाबोरेशन का दक्षिणी भाग पूरा दक्षिण—पश्चिम से पूर्व तक ऊँचा करवा दें।

(ख) हो सके तो फर्श का लेबल सबसे ऊँचा करवा दें।

(ग) यदि दक्षिणी भाग में अन्डरग्राउन्ड टैंक, पिट, कुआं नल आदि हैं तो उन्हें बन्द करवा दें।

(घ) दक्षिणी दीवार आग की दीवार है। यहां से पानी की सारी व्यवस्था हटा दें।

(ड.) यहां उत्तरी भाग में से कम खुली जगह रखें।

(च) कोने हमेशा खाली रखें।

(छ) घर के अधिकांश भारी सामान दक्षिणी भाग में रखें।

(ज) हो सके, तो दक्षिणी भाग में एक मंजिल ऊँचा बना दें।

(झ) दक्षिण—पश्चिम की दीवारें मोटी (मोटे पलास्तर) रखें।

(ञ) रसोई, जैनरेटर आदि की व्यवस्था दक्षिण—पूर्व में रखें।

(ट) पूर्व का कोना 90° से ज्यादा बनाएँ।

नोट—ऐसा करते ही सारी आफतें, गरीबी, अपमान, बीमारियां और बेरोजगारी विदा हो जायेगी। कारोबार चल पड़ेगा। खूब आय होने लगेगी। आयु व धन स्थिर होने लगेगा। सभी कह उठेंगे—लो!" रूठी लक्ष्मी फिर से घर को आ गई।"

दक्षिण दिशा की गरमाई घर, मकान, दुकान, फैक्ट्रीं, बिजनेस सेन्टर, कोलाबोरेशन आदि में जाए, तो जितनी ज्यादा हो फर्स की गरमाई सांस लेगी, उतनी ही ज्यादा धन, दौलत, अन्न व अपार खुशियां आकर स्थिर हो जायेगी।

दक्षिण—पूर्व की आग से और दक्षिण—पश्चिम की चबूतरे की सबसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्यादा ऊँचाई लम्बा स्थायी जीवन, दीर्घ आयु व उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करता है।

दक्षिण–पूर्व की आग से स्वास्थ्यदायी गरमाई जीवन दान देती है। यह "महामृत्युजंय योग" के 28 भागों का एक बढ़िया जीवनदायी तरीका है।

दक्षिण–पश्चिम की सबसे ज्यादा ऊँचाई से लम्बी आयु की गरमाई उस घर में रहने वाले हर व्यक्ति को मिलती है। यहां से सांसों के बढ़ने का हुक्म जारी होता है। इसके ठीक रहते दिल की क्या मजाल जो वक्त से पहले धड़कना बन्द कर दे। इससे ठीक रहते व्यक्ति व्यवहार कुशल, मृदुभाषी, छल–कपट रहित, चरित्रवान, स्वस्थ, निरोग, धनी व लम्बी आयु वाले पाए जाते हैं।

पश्चिमी भाग–

(क) अपने प्लाट,मकान बिजनेस सेन्टर, फैक्ट्री, दुकान, कोलाबोरेशन का पश्चिमी भाग दक्षिण–पश्चिम में सबसे ऊँचा और पूर्व उत्तर तक ज्यादा ढ़लानदार बनाएं। इससे धरती की गरमायी जाग उठेगी। मकान खुलकर सांस ले सकेगा, जिसके कारण घर में खुशहाली लौट आयेगी।

(ख) हमेशा पश्चिम दिशा वाली सड़क या गली में दो दरवाजे लगाने चाहिए। ये दोनों दरवाजे पश्चिम के आधे से ज्यादा उत्तर की ओर होने चाहिए। इससे आय को खींच लायेगी।

(ग) कभी भूलकर भी दरवाजे या खिड़कीं पश्चिम के दक्षिण भाग या आधे से ज्यादा दक्षिण–पश्चिम भाग में न लगाएं। इससे बड़ा भारी नुकसान हो जाता है। धरती की गरमायी फर्श के नीचे चली जाती है और दक्षिण–पश्चिम से आने वाली हवा और प्रकाश के रास्ते मारक व घातक खतरनाक ऊर्जा घर में आ घुसती है, जिससे घर का विनाश–सत्यानाश होते देर नहीं लगती।

(घ) यदि आप अपने मकान के उत्तर का प्लॉट खरीद लें तो तुरन्त पश्चिम में लगा दरवाजा, खिड़की एकदम बन्द कर दें। वरना बहुत भारी नुकसान हो जाएगा। गरमायी धरती के नीचे चली जाएगी। मारक, घातक हवाएं घर में घूमने लगेंगी। यह बहुत तबाही लाती हैं।

(ड.) इन हवाओं को बेअसर करने के लिए प्रिज्म रखकर प्रकाश की किरण को सात रंगों कें बांट दिया जाता है, जिससे कुछ हद तक मारक, घातक हवाओं का असर खत्म हो जाता है।

वैसे भी सात रंग पश्चिम दिशा से घर में अवश्य ही आने चाहिए,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताकि घर के फर्श की गरमायी सात रंग के सपनों में खो जाए, ये सात रग घर के फर्श की गरमाई को फर्श के ऊपर ही रहने देते हैं, नीचे उतरने ही नहीं देते। उस कारण घर में गरीबी, बीमारी , आफत या मुसीबत नहीं आ सकती। हमेशा सुख–शान्ती, धन–दौलत घर में बरसती ही रहती है।

(च) कभी–कभी अवतल दर्पण या एक्रेलिक दर्पण से इस मारक, घातक हवा को खत्म करना पड़ता है। जब यह हवा आती है, तो इस दर्पण में कभी ऊपर तो कभी नीचे होकर न्यूट्रल हो जाती है। इस प्रकार घर, फैक्ट्री, मकान, दुकान बच जाता है। घर की गरमाई कायम रहती है। रुपये व धन का चक्र बना रहता है। तब पता ही नहीं चलता कि कोई खतरनाक हवा नुकसान करने आई थी और कुछ किए बिना ही खाली हाथ लौट गई।

(छ) एक सीध में दो दरवाजे लगाने से भारी आंच के साधन बनते हैं।

(ज) दो से ज्यादा दरवाजे या खिड़की एक सीध में लगवाने पर भारी नुकसान हो जाता है। गरमाई नीचे उतर जाती है, अतः लाभ का तो प्रश्न ही नहीं रह जाता।

(झ) मकान–प्लाट के पश्चिम में खाली प्लाट– मकान न लें, यह मुसीबत का घर होता है। इसे अलग हीं रखें तो अच्छा। या फिर पहले पश्चिमी प्लाट को अपने मकान से ज्यादा ऊँचाई का बनाएं, फिर अपने मकान को उस मकान में मिला सकते हैं। इस प्रकार बने घर की गरमाई ही वास्तविक गरमाई बनकर भाग्य को चमका देगी।

(ञ) पश्चिम दिशा में किसी भी कीमत पर गोल या चौकोर खम्भे नहीं बनने चाहिए। चौकोर खम्भे दिवालिया कर देते हैं। इससे फर्श की गरमाई बहुत नीचे उतरकर धरातल में चली जाती है।

सभी धनदायी भवन दक्षिणी भागों में पश्चिम से पूर्व को बने होते हैं। ऐसी जगहों में फर्श की गरमायी पूरे जोर के साथ बनी रहती है। सब कुछ कमल के खिले फूलों की तरह खिल उठता है। धन–दौलत खूब आती है। लेन–देन का व्यापार खूब होता है। आप अन्दाजा भी नहीं लगा सकते हैं–इतना भारी लाभ वहुत होता है। फर्श की 28 प्रकार की गरमाइयों में से धन बरसाने वाली फर्श की गरमाई को तैयार करना होता है।

फर्श पर गरमाई लाने को कोशिश "लक्ष्मी अनुष्ठान" करके भी की जा सकती है। कमल के फूल फर्श पर गिराना, नींबू पानी या संतरे के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छिलकों का अर्क मिला पानी या चावल के एक दो दाने बिखेरना या सिट्रिक एसिड फर्श साफ करने वाले पानी में मिलाना–ये सभी बातें भी फर्श पर गरमाई लाकर भारी दौलत लाती है।

उत्तरी भाग– अपने प्लाट, मकान, बिजनेस सेन्टर, फैक्ट्री, कोलाबोरेशन का उत्तरी भाग पूरा उत्तर–पश्चिम से उत्तर–पूर्व तक खुला व नीचा करवा दें।

(क) फर्श की लेवल नीचा करके उत्तर पूर्व की ओर ढ़लान देकर सबसे नीचा कर दें।

(ख) इस भाग के आधे उत्तर–पूर्व की ओर ढ़लान देते हुए अन्डर गाउन्ड टैंक, पिट, बेसमेन्ट, कुंआं, फव्वारा, नल आदि लगवाएं।

(ग) यह दिवार सबसे नाजुक दीवार है। यह जरा–सा भी वजन सहन नहीं कर सकती। तुरन्त विरोध करके मुसीबत पैदा कर देती है।

(घ) यह पानी की दीवार है, सिर्फ जल स्त्रोत की व्यवस्था करें।

(ड.) इसे सबसे नीचा रखें। चारदिवारी भी नीची रखें।

(छ) उत्तर की दीवार पतली व छोटी रखें।

(ज) उत्तर–पश्चिम का कोना 90° ज्यादा बनाएं।

(झ) उत्तर पूर्व का कोना 90° से कम रखें।

(ञ) उत्तर–पूर्व में किसी भी किस्मत पर जगह मिलती हो, तो लेकर मिला लें।

ऐसा करते ही सारी आफतें, कर्ज, गरीबी, बीमारी, धमकियां, बेरोजगारी विदा हो जायेगी। चैन की सांस आने लगेगी। सब कुछ शान्त हो जायेगा। धन अखबार की रद्दी की तरह घर में आ जायेगा। आयु व धन स्थिर होने लगेगा। गंगा स्नान के सारे पुण्य उत्तर–पूर्व को खुला व नीचा करते ही मिल जायेंगे। हर कोई आपको विश्वासपात्र व सत्य बोलने वाला समझेगा। आपकी हर बात पर भरोसा किया जायेगा। उत्तर दिशा से उठने वाली गरमाई तीनों लोकों में देवी–देवताओं में, प्रकृति के पांच तत्वों में तथा संसारी समाज में आपको मदद करने का हुक्म देती रहेगी। उत्तर दिशा की गरमाई इतनी नाजुक व तुरन्त फलदायी होती है, कि संसार में कुछ भी ऐसा नहीं है, जो इस गरमाई का विरोध कर सके। रातों रात यह गरीबी को अमीरी में बदल देती है।

श्री लक्ष्मी प्रदायक अनुभूत चमत्कारी टोटके

पाठकों! यदि घर में गरीबी व दरिद्रता व्याप्त हो तो इसका एक मुख्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारण "वास्तु दोष" भी होता है। इस बात को समझने के लिए अपने परिवार के सभी सदस्यों की जन्म कुण्डलियां किसी योग्य जानकार ज्योतिषी को दिखानी चाहिए।

आमतौर पर जन्म लग्न कुण्डली के चतुर्थ स्थान में राहु–मंगल, राहु–शनी, जैसी ग्रह स्थिति हो एवं चतुर्थेसे पाप कर्तरी में बैठा हो या वह षष्ठ, अष्टम या द्वादश स्थान में हो तो यह सब "वास्तु दोष" के संकेत समझना चाहिए। जन्म कुण्डली में–"कालसर्प योग" हो तो भी वास्तु दोष उत्पन्न होता है। यह हमारा अनुभव है।

वास्तु दोष युक्त मकान में रहने वाले दरिद्रता का शिकार होते हैं, हमेशा बीमार रहते हैं। उनके रोग का निदान नहीं हो पाता। घर में छोटी–छोटी बात को लेकर बतंगड़ बन जाता है। मेहनत व परिश्रम से अर्जित धन कहां चला जाता है– पता ही नहीं चलता। बरकत ही निकल जाती है। खाने वाले गिनती के होने पर भी पूरे महिने लिए खरीदा हुआ अनाज समय से पहले समाप्त हो जाता है, उसमें कमी होती जाती है। परिवार के लड़के–लड़कियों के उचित उम्र होने पर भी विवाह नहीं हो पाता। संतान नहीं होती, या हो तो जीवित नहीं रहती। परिवार की सम्पत्ति का नाश होता है। पति–पत्नी का आपस में मेल नहीं रहता। तलाक देने की नौबत आ जाती है, विद्याध्ययन में विघ्न खड़े होते हैं। धंधे का दिवाला निकल जाता है।

वास्तु शास्त्र एक प्राचीन शास्त्र है किन्तु विगत 15–20 वर्षो में इंजीनयिरों और आर्किटेक्टों ने इसका थोड़ा बहुत ज्ञान प्राप्त करके इसे असाधारण महत्व प्राप्त करवा दिया है। वैसे देखा जाये तो वास्तु शास्त्र एवं शिल्प शास्त्र दोनों अलग–अलग हैं। विवाह सम्बन्धों को तय करते समय जैसे मंगल को हौआ बनाया जाता है, उसी तरह अब वास्तु दोषों की हालत हो गई है। वास्तु निवारण के नाम पर अच्छे भले मकान की तोड़–फोड़ करवाकर ये तथाकथित वास्तु विज्ञ या वास्तु शास्त्री कम समय में अधिक पैसे बटोरकर अपनी आमदनी बढ़ाने में लगे हैं। पूरी इमारत को तुड़वाकर नई इमारत बनवाने का प्रत्यक्ष उदाहरण हमने अपनी आंखों से देखा है।

गत तीन दशकों की अपनी ज्योतिष साधना के माध्यम से जो अनुभव मुझे प्राप्त हुए हैं, उन्हें पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर उनकी समस्याओं का समाधान करने से मुझे आनंद का अनुभव हो रहा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दरिद्रता एवं वास्तु दोष निवारणार्थ अनुभव सिद्ध "टोटके" यहां बताए जा रहे हैं–

1. नए मकान में निवास के लिए जाने से पूर्व "वास्तु शांति" करवानी चाहिए। सोसायटी के फ्लैट की वास्तु शांति बिल्डर ने करवाई हो तो भी पुनः करवाएं।

2. कुल देवता के चरणों में श्री फल अर्पण कर घर के पूजा स्थान में स्थापना करके रोज पूजन करें।

3. राम रक्षा स्तोत्र, लक्ष्मी स्तोत्र एवं हनुमान चालिसा का पाठ नए मकान में करें।

4. प्रतिदिन सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय अग्नि होत्र करें।

5. भोजन से पूर्व थाली में परोसे सभी खाद्य पदार्थों में से थोड़ा–थोड़ा हिस्सा एक पत्तल पर निकाल कर कौओं को खिलाएं। यह "काक बली" कहलाता है। किसी कारण वश कभी घर में रसोई न बनी हो तो बाजार से नमकीन भोजन लाकर पत्तल पर रखकर कोओं को खिलाएं।

6. किसी का भी अपमान, निंदा या चुगली न करें।

7. उधार लिया हुआ धन सूद सहित अदा करें।

8. आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न व्यक्ति प्रतिवर्ष अपने घर में–महालक्ष्मी यज्ञ एवं नवचंडी यज्ञ करवाएं।

9. वर्ष में एक बार अमावस्या के दिन दही–चावल एवं नारियल पूरे घर पर से उतारकर बाहर फेंक दें।

10. घर में "श्री यंत्र" की स्थापना करके नित्य "श्री सूक्त" का कम से कम एक पाठ अवश्य करें।

11. एक साफ–सुथरी कांच की बोतल लेकर उसमें शुद्ध पानी भरें। उसमें गोमुत्र, कपूर, हींग, वायविडंग , चूर्ण बनाकर डालें। इस बोतल का पानी रोज टॉलेट और स्नान गृह में छोड़कर पूरे घर में सुबह–शाम छिड़के। यह प्रयोग 45 दिनों तक करते रहें।

12. दरवाजे खोलते एवं बन्द करते समय आवाज नहीं होनी चाहिए।

13. टेलीफोन के पास पानी भरा जग या गिलास रखें।

14. महत्वपूर्ण कागजातों को पूर्व दिशा की अलमारी में रखें।

15. चप्पल, जूते, इधर–उधर बिखरे हुए या उल्टे पड़े हुए नहीं होने चाहिए। इससे कलह उत्पन्न होती है।

16. रसोई में सब्जी काटकर जमीन पर न रखें। जमीन पर रखने से स्वाद जमीन चूस लेगी। कटी सब्जी हमेशा थाली में ही रखें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

17. घुले हुए कपड़े को गंदे कपड़ों के साथ न रखें।

18. यदि आप हजामत (शेविंग) करते हैं तो रोज किया करें। दाढ़ी या तो बढ़ी रहे या क्लीन शेव हो। उबड़–खाबड़ दाढ़ी निर्धनता को जन्म देती है।

19. मृत व्यक्तियों के चित्र ड्राइंग रूम या मुख्य द्वार के पास न लगावें।

20. मुख्य द्वार के ऊपर लक्ष्मी जी या गणेश जी की तस्वीरें लगाना या स्वास्तिक चिन्ह लगाना श्रेष्ठ होता है।

21. प्रातः काल उठकर सर्वप्रथम सदर दरवाजे के पास एक गिलास पानी डालना चाहिए। ऐसा करने से घर में सम्पन्नता आती है। होटल चलाने वाले आमतौर पर सुबह एक गिलास पानी और एक कप चाय रास्ते पर डालते हैं। जिसके पीछे भी यही तर्क है।

22. रात को पहने हुए कपड़े प्रातः आठ बजने से पूर्व ही बदल लेने चाहिए।

23. सूर्योदय के पूर्व घर की झाड़ू से सफाई करें। पानी में फिनाइल डालकर फर्श को साफ करें।

24. महत्वपूर्ण काम के लिए घर से बाहर जाते समय दही खाना चाहिए।

25. कर्कश आवाज करने वाले बिजली पंखों को समय पर ठीक करवा लें।

26. सुबह सूर्योदय से पहले घूमने निकलें या घर में ही हल्का–फुल्का व्यायाम करें।

27. रोज सुबह स्नानादि से निवृत्त होकर लक्ष्मी जी की उपासना करें।

शुभ प्रतीकों का प्रयोग

भारत प्राचीन संस्कृति परंपरा का केन्द्र रहा है। जितने धर्म, ज़ितने पंथ भारत में विद्यमान हैं, उतने दुनिया में और कहीं नहीं मिलेंगे। धार्मिकता हमारी रग–रग में समाई हुई है।

इस कल्पना में मंगल चिन्हों का बड़ा स्थान है। कुछ लोग "ॐ" लिखते हैं, तो कुछ (卐) "स्वास्तिक" को अंकित करते हैं। ग्रामीण स्त्रियो भी बड़े ही कलात्मक ढंग से इसको अपनाती हैं; जैनियों में "आगवां" में ॐ लिखकर कार्यारम्भ का प्रचलन है। इनके अतिरिक्त वेदों में भी ॐकार को प्रभाव माना गया है। यही कारण है कि वेद मंत्रों का उच्चारण ॐ कार से प्रारंभ होता है। "स्वातिक" को मान्यता प्राप्त है। विशेष रूप से जर्मनी में स्वास्तिक की महत्ता अधिक प्रचारित है। वहां स्वास्तिक चिन्ह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को राजकीय सम्मान प्राप्त है। क्रास चिन्ह में भी स्वास्तिक की हल्की सी झलक देखने को मिलती है।

"ऊँ" के सम्बन्ध में विविध धर्मावलम्बियों के अलग–अलग विचार है। जैसे "ऊँ" परमात्मा वाचक है, मंगल स्वरूप है। जैनियों की दृष्टि से ऊँ परमेष्ठी वाचक एक लघु संकेत है। इस परमेष्ठी का प्रतिनिधित्व प्राप्त है। जैन मंत्र में "णमोकार" मंत्र की महिमा अपार है।

"ऊँ कार" को सर्वगुण है सम्पन्न मानकार एकाक्षर में उच्चारण करना हो तो–ऊँ कहने से तात्पर्य पूर्ण हो जाता है। कारण ऊँ कार बीजाक्षर है। जैसे छोटे से बीज में वृक्ष रूपी शक्ति है, उसी प्रकार ऊँ में ऊँ कार मंत्र पूर्ण निहित है। परमेष्ठियों के आद्याक्षरों से निष्पन्न "ऊँ" की महिमा इस प्रकार है–

ऊँकार बिन्दु– संयुक्त नित्यं ध्यायन्ति योगितः।
कामदं मोक्षदं चैव ऊँकाराय नमो नमः।।

अर्थात–बिन्दु युक्त "ऊँ कार" का ध्यान योगीजन नित्य करते हैं। यह ऊँ कार इच्छित पदार्थ दाता और मोक्ष दाता है। उस ऊँ कार का नमस्कार हो। उपनिषद् वासकार के शब्दों में –"ऊँकारे परमात्मा प्रतीके दृढ़ा मैका ग्युलक्षणा मति सन्तुनुयात।"

इसे "प्रणव" नाम से भी संबोधित किया जाता है, क्योंकि यह कभी जीर्ण नहीं होता। इसमें प्रतिक्षण नवीनता का संचार होता है और वह प्राणों को पवित्र और संतुष्ट करता है–

"प्राणात सर्वात परमात्मा निप्रणाम नीतीत्ये तस्मात प्रणव।"

उक्त विवरण के प्रकाश में मंगल कार्यों में ऊँ का प्रयोग किया जाता है। परन्तु सम्पूर्ण रूप से कोई एक निश्चित मत स्वास्तिक के सम्बन्ध में नहीं मिलता। कोई इसे चतुगर्ति भ्रमण, तो कोई इसे मुक्ति का प्रतीक तो कोई ब्रह्मी लिपि के "ऋ" वर्ण के समाकार मानकर ऋषभदेव का प्रतीक मानते हैं।

ऊँ स्वस्ति, स्वस्तिक या सातिया की महानता

"स्वस्तिक"–संस्कृत भाषा का अपव्यय है। पाणिनी के व्याकरण के अनुसार व्याकरण 54 वें क्रम पर अपव्यय पदों को गिनाया गया है। यह स्वस्तिक पद "सु" उपसर्ग तथा "अस्ति" (अपव्यय) क्रम 61 के संयोग से बना है, यथा–सु + अस्ति –"स्वस्ति"।

संक्षेप में स्वस्तिक शब्द–सु + उपसर्ग पूर्वक "अस " धातु से बना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। "सु" का मतलब है "अच्छा", कल्याणमय, श्रेष्ठ मंगल, असयानि सत्ता, मांगल्य का अस्तित्व। जहां–जहां धन है, शोभा है संवाद है, प्रेम, उल्लास, जीवन का सौंदर्य एवं सौहार्द सुख, सौभाग्य एवं सम्पन्नता है, वहां–वहां स्वस्तिक चिन्ह मानव मात्र के विकाश हेतु अति प्राचीन धार्मिक सौभाग्य का प्रतीक है।

"समाप्ति कामः मंगल आचरेत। "पातांजल योग शास्त्र के अनुसार कोई भी कार्य निर्विघ्न रूप से समाप्त हो, इसलिए कार्य के प्रारंभ में मंगलाचरण लिखने की परिपाटी सदियों से चली आ रही है। परंतु स्वनिर्मित मंगल श्लोकों की रचना सामान्य मनुष्य के लिए संभव नहीं है। इसलिए "स्वस्तिक चिन्ह" का निमार्ण ऋषियों ने किया, जिसके बनाने मात्र से कोई भी कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हो जाता है।

"अमर कोष" में लिखा है–"स्वस्तिक पर्वतों ऋद्ध"! स्वस्तिक यानि सभी प्रकार से सर्व दिशाओं के सौरभ से मानव जीवन का कल्याण हो। स्वस्तिक में –"वसुधैव कुटुंबकम्" एवं "सर्वबंधुत्व"की भावना निहित है।

स्वस्तिक शांति, समृद्धि एवं सौभाग्य का प्रतीक है।

"चार्तुमास" में बहुत सी हिन्दू स्त्रियां "स्वस्तिक व्रत" करती हैं। भगवान के मंदिर में जाकर अष्टदल से स्वस्तिक बनाकर नित्य उसका पूजन करने से स्त्रियों का वैधव्य का भय नहीं रहता। ऐसी कथा "पद्म पुराण" में है।

यही कारण है कि वर–वधू आजीवन सुखी रहें इसलिए उनको विवाह के समय स्वस्तिक के दर्शन कराये जाते हैं। नवजात शिशु को उसके जन्म के छठे दिन स्वस्तिक अंकिवत वस्त्र पर सुलाया जाता है। राजस्थान में नवविवाहिता वधू की चुन्नी (ओढ़नी) पर स्वस्तिक चिन्ह को सुदर रंगों से अंकित किया जाता है। इसके पीछे यह भावना है कि घर में अन्न–वस्त्र, वैभव आदि पवित्र हो। हमारे द्वार पर आने वाला अतिथि शुभ समाचार लेकर आए।

नेपाल में –"हेरंब" के नाम से इसकी पूजा की जाती है। यूनान में स्वस्तिक स्वरूप गणेश जी "ओरेनस" नाम से पूजे जाते हैं। उनके प्राचीन धर्म–ग्रन्थों में "ओरेनस" का बड़ा महत्व है। हिन्दू धर्म–ग्रन्थों के अनुसार गणेश जी "लाक्षा सिंधु बदन" कहे जाते हैं। अर्थात् उनका रंग लाख (लाह) के रंग जैसा लाल सिंदूरी है। ऐसी स्थिति में यूनानियों का "औरेनस" लाल या नारंगी रंग का बनवाया जाता है। यह स्वस्तिक स्वरूप गणपति का ही पूजन है।

"भोर भाषा" में "स्वस्तिक " को सोग्सदाग, बर्मी में महापियेन्ते,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मंगालियन में त्वोतरवारू नरपागान, कंबोडिया में प्राहेकेनीज, चीनी में कुआद–सी–तियेत् तथा जापानी में कांग्येन नाम से पुकारा जाता है। मिस्त्र (मिश्र) में सब देवों के प्रमुख देव–बुद्धि के अधिष्ठाता "एक्टोन" के नाम से प्रसिद्ध हैं। एक्टोन शब्द भी गणेश जी के पर्याय एक दन्त का ही अपभ्रंस है। हिन्दुओं में दीपावली लक्ष्मी पूजन के अवसर पर स्वस्तिक चिन्ह की पूजा की जाती है। कई लोग "शुभ–लाभ" भी लिखते हैं। ऋद्धि से लाभ और सिद्धि से शुभत्व प्राप्त होता है। स्वस्तिक पूजन के कारण घर में लक्ष्मी स्थिर रहती है।

सारांश में स्वस्तिक शुभ कार्य हेतु प्रस्थापित किए जाते हैं। कुछ संप्रदायों में यज्ञवेदी पर "स्वस्तिकासन" अंकित किया जाता है तथा अग्नि को नियंत्रि करने हेतु थाली पर तंदूल एवं कुंकुम से "स्वस्तिकासन" बनाया जाता है। नीचे चित्र देखें–

स्वस्तिक यंत्र स्वस्तिकासन

यह "स्वस्तिकासन" गणेश जी प्रतिनिधि न होकर केवल आसन के रूप में ही बनाया जाता है।

"स्वस्तिनः इंद्रो वृद्धाश्रवा स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदः।
स्वस्तिन स्तार्क्ष्यो अरिष्ट नेमिः स्वस्तिनो बृहस्पति र्दधातु।।"

यह मंत्र आम प्रचलित है। तिलक आदि करते समय भी आशीर्वाद के रूप में इसका उच्चारण किया जाता है। इस मंत्र का सीधा सादा अर्थ है– महान कीर्ति प्राप्त इन्द्र हमारा कल्याण करें। विश्व के इगत स्वरूप पूषा देव हमारा कल्याण करें। जिसके अस्त्र अरिष्ट भंग करने में सक्षम हैं, ऐसे गरुड़ देव हमारी रक्षा करें। बृहस्पति भी हमारे कल्याण में संलग्न हों।

(इति श्री लक्ष्मी उपासना सम्पूर्ण)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री लक्ष्मी जी की आरती

ऊँ जय लक्ष्मी माता मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु–विधाता ।। ऊँ ।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग माता।
सूर्य–चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।। ऊँ ।।
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि–सिद्धि धन पाता ।। ऊँ ।।
तुम पाताल निवासिनी, तुम ही शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनि, भव निधि की त्राता।। ऊँ ।।
जिस घर तुम रहती वहं, सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता ।। ऊँ ।।
तुम बिन यज्ञ न होते, दस्त्र न कोई पाता।
खान–पान का वैभव, सब तुमसे आता ।। ऊँ ।।
शुभ–गण मंदिर सुन्दर, क्षीरो दधि जाता।
रत्न चर्तुदश तुम बिन, कोई नहीं पाता ।। ऊँ ।।
महालक्ष्मी की आरती, जो कोई नर गाता।
उर आनंद समाता, पाप उतर जाता।। ऊँ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri